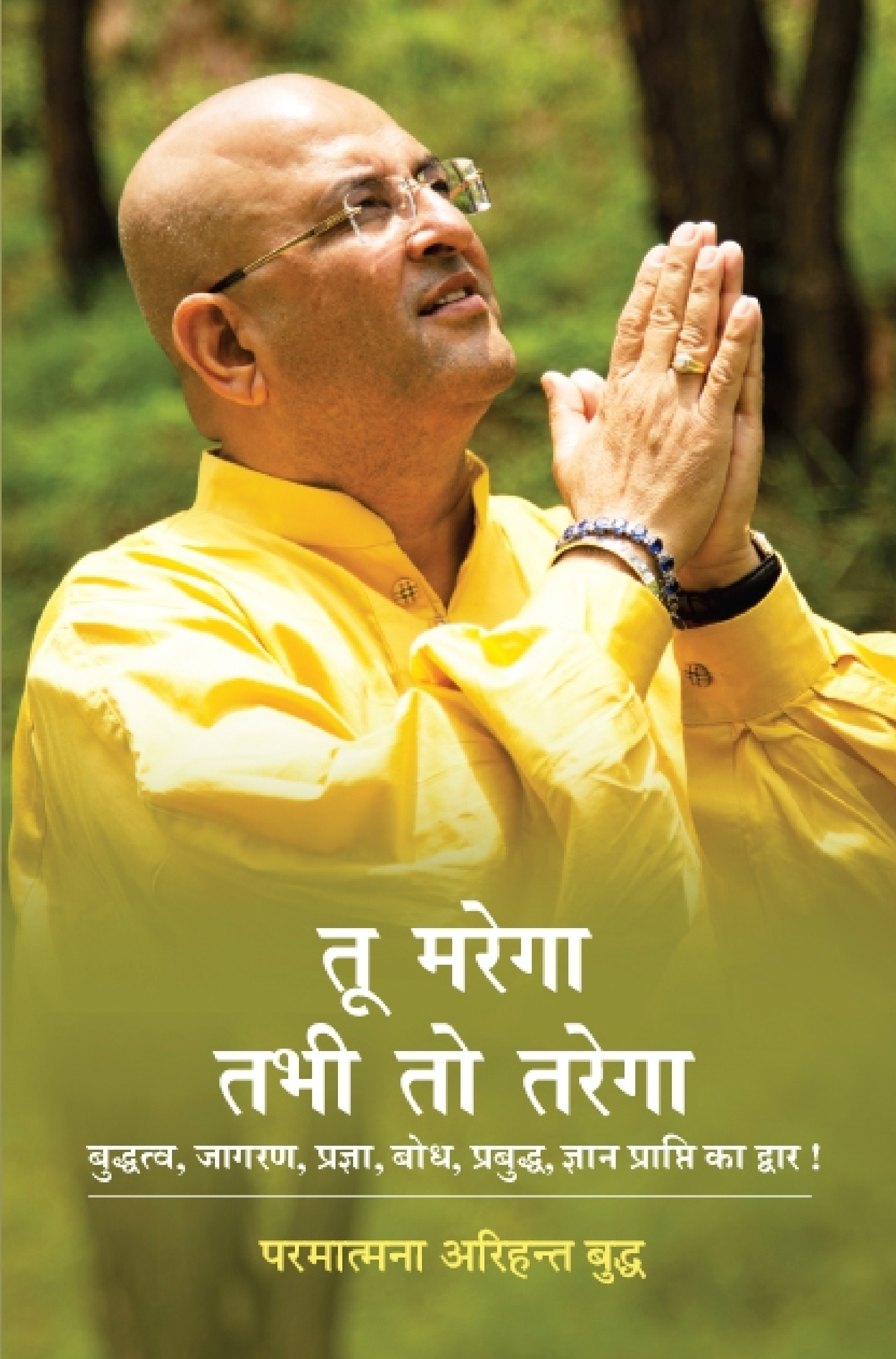

तू मरेगा तभी तो तरेगा

बुद्धत्व, जागरण, प्रज्ञा, बोध, प्रबुद्ध, ज्ञान प्राप्ति का द्वार !

परमात्मना अरिहन्त बुद्ध

तू मरेगा तभी तो तरेगा
परमात्मना अरिहन्त बुद्ध

तू मरेगा तभी तो तरेगा

"जब तक तू बचता रहेगा, तब तक तू बंधा रहेगा। जब तू मरेगा, तभी तो तू तरेगा।"

"हर प्रश्न में छिपा है एक उत्तर और हर उत्तर में छिपा है एक अंत।"

यह पुस्तक एक साधारण संवाद नहीं है, यह आत्मा और अहंकार के बीच की संघर्ष कथा है। यह उन प्रश्नों का उत्तर है जिन्हें हम पूछते तो हैं, लेकिन सुनना नहीं चाहते। 'तू मरेगा तभी तो तरेगा' यह वाक्य केवल किसी शरीर की मृत्यु की बात नहीं करता, यह उस 'अहंकार', 'मोह', 'डर' और 'स्वार्थ' की मृत्यु की मांग करता है जिसने हमारे भीतर के सत्य को कैद कर रखा है।

प्रश्न-उत्तर की इस शैली में आप न केवल विचार पाएंगे, बल्कि एक आईना भी पाएंगे जिसमें झांकना सरल नहीं, पर एक बार झांक लिया, तो खुद को देखे बिना रह भी नहीं सकेंगे। यदि आप तैयार हैं मरने को, बदलने को, और सच से टकराने को, तो यह पुस्तक आपके लिए है। "सवाल तो सभी पूछते हैं, पर उत्तर उन्हीं को मिलते हैं जो भीतर मरने का साहस रखते हैं।

यह पुस्तक केवल शब्दों का संग्रह नहीं है, यह जीवन के सबसे कठिन, सबसे गहरे और सबसे कड़वे प्रश्नों का सामना है। यह एक यात्रा है 'मैं' से 'हम' तक, स्वार्थ से समर्पण तक, और अहंकार से आत्मा तक।

यह किताब उन पाठकों के लिए नहीं है जो जीवन को केवल जीना चाहते हैं, यह उन जिज्ञासुओं के लिए है जो जीवन को समझना और पार करना चाहते हैं।

प्रश्न-उत्तर की शैली में रची गई यह रचना न किसी धर्म का प्रवचन है, न किसी संप्रदाय का झंडा।

यह एक स्वतंत्र, निडर और पारदर्शी संवाद है जो मनुष्य को स्वयं से मिलाने का प्रयास करती है। हर पन्ने पर आपको मिलेंगे ऐसे प्रश्न जो कभी आपने अपने भीतर दबा दिए थे, और मिलेंगे ऐसे उत्तर जो न तो किताबों में हैं, न प्रवचनों में—बस आपकी सोई हुई चेतना में छिपे हैं।

यह पुस्तक बताती है कि सत्य कभी बाहर नहीं मिलता, वह भीतर मरने के बाद ही प्रकट होता है। "तू मरेगा तभी तो तरेगा" एक आवाहन है मरने का, छोड़ने का, और ऊपर उठने का। यदि आप साहसी हैं, यदि आप थमे नहीं हैं, यदि आप भीतर के अंधेरे को देखने का साहस रखते हैं, तो यह पुस्तक आपकी चेतना के द्वार पर दस्तक देगी।

यह पढ़ने के लिए नहीं, जीने के लिए है।

ISBN 978-93-5737-962-5

तू मरेगा तभी तो तरेगा

परमात्मना अरिहन्त बुद्ध

तू मरेगा
तभी तो तरेगा

अहंकार की मृत्यु ही आत्मा की मुक्ति है ।

तू जितना भीतर जाएगा, उतना ही पर उठेगा ।

हर उत्तर किताब में नहीं होता, कुछ उत्तर तुम्हारी मरी हुई आवाज में छिपे हैं ।

इस ग्रन्थ का 40 दिनों तक लगातार मनन करने से पाठक सिद्ध अवस्था को प्राप्त करता है ऐसा बुद्धजनों का, सत्य को पाऐं हुए संतो का मत है । और उस अवस्था का नाम है

बुद्धत्व, जागरण, प्रज्ञा, बोध, प्रबुद्ध, ज्ञान !

जिस किसी ने भी इस ग्रन्थ का पाठ किया, जीवन में इसे धारण किया तथा समाज में इसका वितरण किया उन सभी के मन मे स्वत: ही करुणा का उदय हो गया । आप सभी से अनुरोध है कि नित्य प्रात: इस ग्रन्थ का पाठ करें तथा औरों को भी इस ग्रन्थ को पढनें में सहयोग करें ।

“क्या तुम तैयार हो ? तो पहला पन्ना पलटिए और यात्रा शुरु कीजिए” ।

परमात्मना अरिहंत बुद्ध

बिना अनुमति इस पुस्तक के किसी भी भाग का
पुनर्प्रकाशन, छपाई, अथवा डिजिटलीकरण अवैध होगा

पुस्तक का नाम
तू मरेगा तभी तो तरेगा
लेखक : परमात्मना अरिहन्त बुद्ध

प्रकाशक
द परमात्मना वर्ल्ड
हाउस नंबर-40, सेकंड फ़्लोर, स्ट्रीट नंबर 4
गोविंदपुरा, नयी दिल्ली-110051

ISBN: 978-93-5737-962-5

कापीराइट
लेखकाधीन सभी अधिकार सुरक्षित

संस्करण : प्रथम संस्करण 2026
मूल्य : ₹ 500.00

मुद्रक
वर्सटाइल इम्पैक्ट, दिल्ली

प्रस्तावना

"तू मरेगा तभी तो तरेगा" कोई साधारण वाक्य नहीं, अपितु आत्मजागृति की उस अग्नि की चिंगारी है जो मनुष्य को उसकी नींद से जगा सकती है। यह पुस्तक एक आध्यात्मिक संवाद का दस्तावेज़ है। एक योद्धा और परमात्मा के बीच। प्रश्न साधारण लग सकते हैं, पर उत्तर हमें हमारी अंतर्मन की गहराई में ले जाते हैं। एक ऐसी बातचीत जो मनुष्य के सबसे मूल प्रश्नों का उत्तर खोजती है।

मैं कौन हूँ, ईश्वर क्या है, धर्म क्या है, जीवन का उद्देश्य क्या है, तथा मुक्ति किसे कहते हैं? पाठकों के समक्ष प्रस्तुत यह प्रश्नोत्तर शैली संग्रह, केवल वैचारिक या धार्मिक नहीं, बल्कि आंतरिक अनुभव और स्वयं की पहचान की ओर बढ़ता एक मार्ग है। ***धर्म क्या है? सत्य क्या है? आत्मा, मोक्ष, परमात्मा, जागरूकता***—यह सब केवल शब्द नहीं हैं, यह अनुभव के आयाम हैं, जो इस पुस्तक में सहज भाव से प्रकट हुए हैं।

इसमें कोई विशेष सम्प्रदाय, परंपरा या विचारधारा का प्रचार नहीं किया गया है, बल्कि जीवन की सर्वसामान्य और सार्वकालिक सच्चाइयों की खोज की गई है। यह संवाद स्वयं और परम सत्य के बीच की दूरी को मिटाने की चेष्टा है। यह उस यात्रा का प्रारंभ है जहाँ विचार मौन में विलीन होते हैं और आत्मा स्वयं को पहचानने लगती है। लेखक द्वारा पूछे गए प्रश्न हम सभी के अपने भीतर के प्रश्न हो सकते हैं, और जो उत्तर हैं वे केवल शब्द नहीं, अनुभव हैं।

यह पुस्तक न किसी पंथ की है, न किसी संप्रदाय की। यह आपकी है। यदि आप खोज में हैं, यदि आपके भीतर भी कोई मौन प्रश्न है, तो यह पुस्तक उसका उत्तर देने में समर्थ है।

यह पुस्तक उन सभी साधकों के लिए समर्पित है जो अपने जीवन में सच्चाई, प्रेम, शांति और मुक्ति को पाना चाहते हैं। हमारा उद्देश्य यह नहीं है कि आप किसी मत को स्वीकार करें, बल्कि यह है कि आप अपने भीतर झाँकें, स्वयं को पहचानें और उस दिव्य चेतनता से जुड़ें जो हमेशा से ही आपके साथ है।

"तू मरेगा तभी तो तरेगा" इस एक वाक्य में ही संपूर्ण साधना, संपूर्ण जागरण और संपूर्ण धर्म समाया हुआ है। यह पुस्तक आध्यात्मिक साधकों के लिए दीपक बने, यही शुभकामना है।

योद्धा: धर्म क्या है ?
भगवान: केवल तुम्हारे हृदय में संसार मात्र के लिए प्रेम।

योद्धा: क्या हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन होना धर्म नहीं होता?
भगवान: अगर यही धर्म होता तो बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर क्या खोज रहे थे ? जन्म से धर्म नहीं मिलता। धर्म ठोकरें खाकर पैदा करना पड़ता है।

योद्धा: तो धर्म कैसा होना चाहिए ?
भगवान: जीता-जागता! जो तुम्हें आज सुखी करे न कि मरने के बाद स्वर्ग पहुंचाए। क्योंकि मरने के बाद की कल्पना ही पाखंडवाद है।

योद्धा: क्या धर्म जन्म से होता है ?
भगवान: नहीं! जन्म से ही तुम्हारी आंखों पर धर्म के अंध-विश्वास रूपी पट्टी बांध दी जाती है। लेकिन कोई-कोई विरला, पागल, दिवाना, मस्ताना गलती से अपनी आंखों पर से पट्टी उतार देता है और वही गलती से धार्मिक हो पाता है।

योद्धा: सत्य क्या है ?
भगवान: तुम्हारा होना ही सत्य है और बाकी सभी असत्य।

योद्धा: आत्मज्ञान क्या है ?
भगवान: स्वयं को पहचानना।

योद्धा: बुद्धत्व किसे कहते हैं ?
भगवान: आंखों का खुल जाना। और इसका बौद्ध धर्म से या अन्य किसी भी धर्म से कुछ भी लेना-देना नहीं है।

योद्धा: आत्म-अनुभूति कैसे होती है ?
भगवान: 'मैं' के मरने के बाद, अहंकार के तिरोहित होने के बाद। लेकिन ध्यान से अपनी 'मैं' को मारना! क्योंकि मुर्दा बोला नहीं करते।

योद्धा: भीतर के दीपक से क्या तात्पर्य है ? वो कैसे जलता है ?
भगवान: भीतर के दीपक से तात्पर्य होता है स्वयं का ज्ञान। और यह तब प्रकट होता है जब तुम यह मान लेते हो कि तुम अज्ञानता में हो, अंधकार में हो।

योद्धा: हम कहां से आते हैं और कहां जाते हैं ?
भगवान: एक दीपक जलाओ और ध्यान से देखो कि ज्योति कहां से आती है और अब इस दीपक को बुझाओ और देखो कि ज्योति कहां जाती है।

योद्धा: धर्म की खोज में मनुष्य सफल क्यों नहीं हो पाया ?
भगवान: क्योंकि वह धारणाएं बनाकर धर्म को खोजने चल दिया। धर्म भीतर से उपजता है, बाहर से नहीं मिलता।

योद्धा: धर्म की खोज से क्या लाभ होता है ?
भगवान: कुछ भी नहीं ! बस तुम शांत होकर बैठ जाते हो और सारी दौड़ें समाप्त हो जाती हैं।

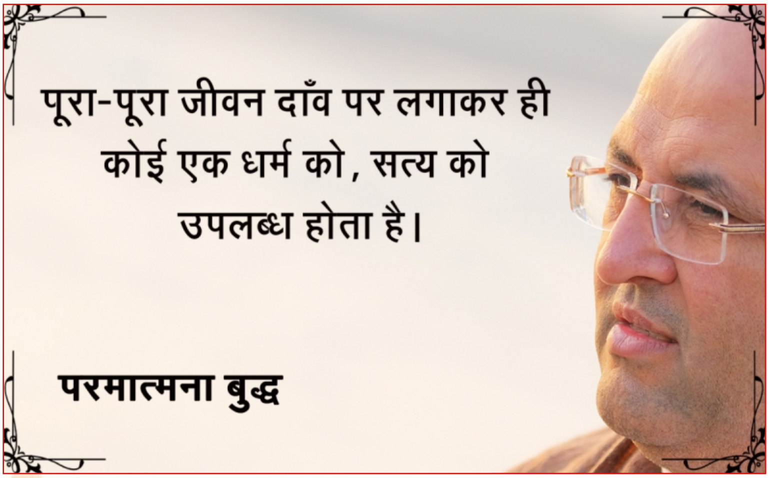

योद्धा: परमात्मा के दर्शन करने के लिए क्या करें?
भगवान: केवल अपनी आंखें साफ करो, तो पाओगे कि वही खुदा तुम्हारे चारों तरफ नाच रहा है।

योद्धा: बुद्धत्व कैसे प्राप्त होता है?
भगवान: किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढ़ लो जो मर चुका हो। और उससे तुम भी मरने की विधि समझ लो और तुम भी मिट जाओ।

योद्धा: जीवन क्या है?
भगवान: तुम्हारे लिए तो भार, दुःख, नरक और बुद्धों के लिए स्वर्ग, उत्सव, आनंद।

योद्धा: आत्मा का आकार कैसा है और यह मातृ गर्भ में कब प्रवेश करती है?
भगवान: विराट! और आत्मा कहीं भी आती-जाती नहीं, तो प्रवेश करने और निकलने का मतलब ही नहीं।

योद्धा: परम जीवन क्या होता है और कैसे पाया जाता है?
भगवान: जिस दिन तुम मरोगे उसी दिन तुम परम जीवन को प्राप्त करोगे। लेकिन मैं तुम्हारी देह के मरने की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं तुम्हारे 'मैं' रूपी अहंकार के मरने की बात कर रहा हूँ।

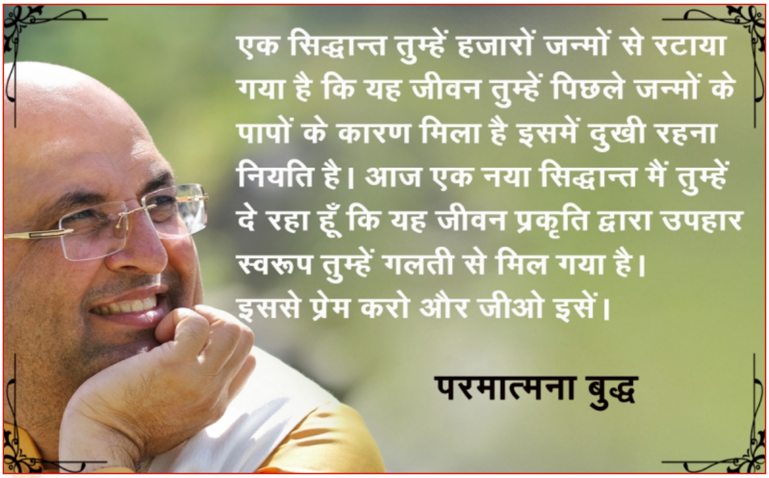

योद्धा: ईश्वर है या नहीं?
भगवान: ये प्रश्न ही तुम्हें उन मूढ़ों ने सिखाया है जिन्होंने झूठे ईश्वर गढ़े हैं। मुझसे तो ये पूछो कि क्या मैं ईश्वर हो सकता हूँ?

योद्धा: ध्यान क्या है?
भगवान: तुम्हारे विचार-मुक्त होने की कला। तुम्हारे अनंत ब्रह्मांड में उड़ने की कला।

योद्धा: हम अध्यात्म में ऊपर कैसे उठें?
भगवान: पंख लगाकर। और पंख तो तुम लेकर ही पैदा हुए हो। मैं तो तुम्हें पंख फड़फड़ाना ही सिखाता हूँ, फिर उड़ तो तुम स्वयं ही सकते हो।

योद्धा: तुम्हारा मार्ग क्या बुद्ध या गीता का मार्ग है?
भगवान: नहीं। मेरा मार्ग तो मेरा मार्ग है, वह न तो बुद्ध का मार्ग है और न ही महावीर का, न हिन्दू का, न मुस्लिम का, न सिख का, न ईसाई का। ***"केवल देखो मेरी मस्ती को और जियो मेरी तरह।"***

योद्धा: विराट कैसा दिखता है?
भगवान: आंखें बंद करो और देख लो मेरी विराटता। बस बिल्कुल ऐसा ही दिखता है विराट।

योद्धा: मुक्त कौन है?
भगवान: वो जो सारे बंधन तोड़ सके और इसमें तुम्हारे धर्म के बंधन भी आते हैं। वास्तव में विचारों से मुक्ति ही वास्तविक मुक्ति होती है।

योद्धा: बिना भगवान के कैसा धर्म ?
भगवान: धार्मिक होने के लिए भगवान की ज़रूरत नहीं बल्कि तुम्हारे भक्त होने की ज़रूरत है।

योद्धा: ईश्वर, परमात्मा, खुदा, अल्लाह होता है क्या?
भगवान: हाँ! और यह सभी तुम्हारे ही जीवन के पर्यायवाची नाम हैं। यानी तुम्हारा ही दूसरा नाम अल्लाह है।

योद्धा: अब भविष्य में करोड़ों दीपक जलेंगे? इसका क्या मतलब है?
भगवान: जब भी कोई एक बुद्ध होता है तो वो घोषणा है कि अब लाखों करोड़ों बुद्ध होंगे। यहाँ बुद्ध का तात्पर्य प्रज्ञावान से है।

योद्धा: हमारे जीवन में वो घटना कब घटेगी?
भगवान: वो सुबह कभी तो आएगी जब तुम भी झूम के नाचोगे, तुम्हारी आत्मा कभी तो जागेगी। ***"जो मैं कल था वो तुम आज हो और जो मैं आज हूँ वो तुम कल होगे।"***

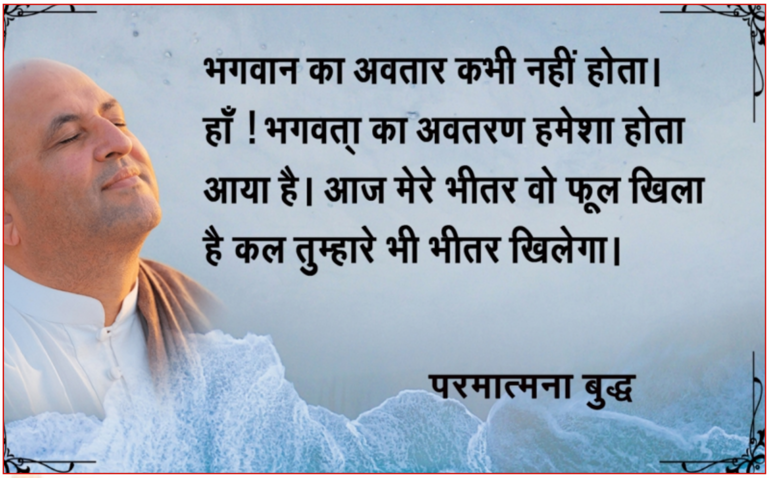

योद्धा: क्या धर्म जन्मगत होता है?
भगवान: नहीं! धर्म जन्मगत नहीं, व्यक्तिगत होता है।

योद्धा: आनंद, सुख कहाँ और कैसे मिलता है?
भगवान: आनंद, सुख तो आज भी बरस रहा है केवल तुम बस वहाँ नहीं हो। तुम खोए हो जप-तप कर, नमाज़ पढ़ भविष्य में सुखी होने की कल्पना लिए।

योद्धा: कौन सा शास्त्र ठीक है?
भगवान: सत्य, विराट, परमात्मा, खुदा, बोध, शास्त्रों से नहीं अंतरशास्त्र से मिलता है। किसी ज़िंदा मुर्शिद को खोज लो।

योद्धा: इस लोक से उस लोक जाने के लिए कौन सा सेतु है?
भगवान: किसी ज़िंदा बुद्ध के सिर के ऊपर पाँव रखकर ही तुम उस पार जा सकोगे। अब देखो कौन तुम्हारी खूंटी खोलता है।

योद्धा: समाधि का अनुभव कहाँ होता है?
भगवान: जहाँ तुम्हारी मैं गिरती है।

योद्धा: सत्य का साक्षात्कार करने की सही और छोटी विधि क्या है?
भगवान: दोनों में से एक को मिटा दो या ***"तू को या मैं को"।*** उसी समय सत्य का साक्षात्कार हो जाएगा। ***"खुद को मारो और अपने खुदा को पैदा करो"।***

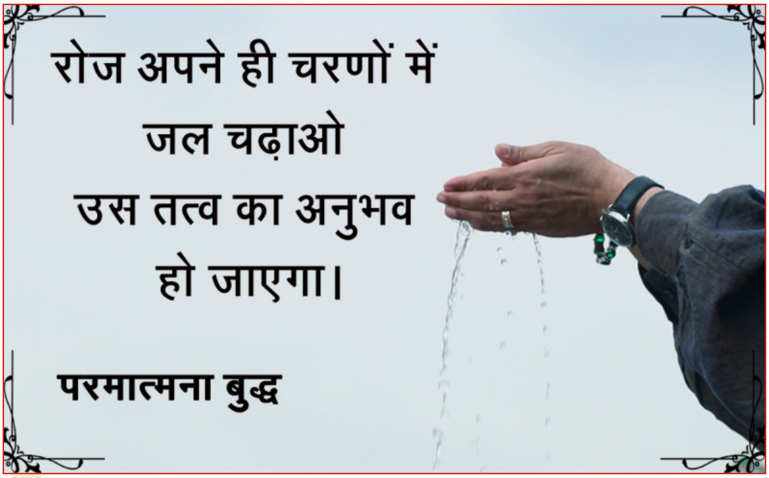

योद्धा: मोक्ष कैसे मिलेगा?
भगवान: अगर तुम इन मूर्खता भरे धर्मों को ही छोड़ दो तो तुम आज ही मोक्ष में हो। बुद्धि के बंधनों से मुक्त व्यक्ति को मोक्ष मिलता है लेकिन जीते-जी। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना मूढ़ों की होती है।

योद्धा: आत्मा का स्वरूप क्या है?
भगवान: आत्मा एक ऊर्जा स्वरूप है जो संपूर्ण अस्तित्व में फैली है। उसे अलग वस्तु मानना मूढ़ों ने तुम्हें सिखा दिया है।

योद्धा: जीवन की उत्पत्ति कैसे हुई?
भगवान: ऊर्जा एक जीवित शक्ति है और उसी जीवित शक्ति ने जीवन को पैदा किया।

योद्धा: आत्मज्ञान क्या है?
भगवान: केवल स्वयं को पहचानना, यानी स्वयं का साक्षात्कार। इसी को कृष्ण ने योगी कहा है।

योद्धा: क्या मरने के बाद आत्मा मुक्त होती है?
भगवान: ऊर्जा को कोई बंधन ही नहीं है तो मुक्त काहे को करनी। अगर बिजली की तारों से कहीं आग लग जाए तो क्या बिजली दूषित होगी?

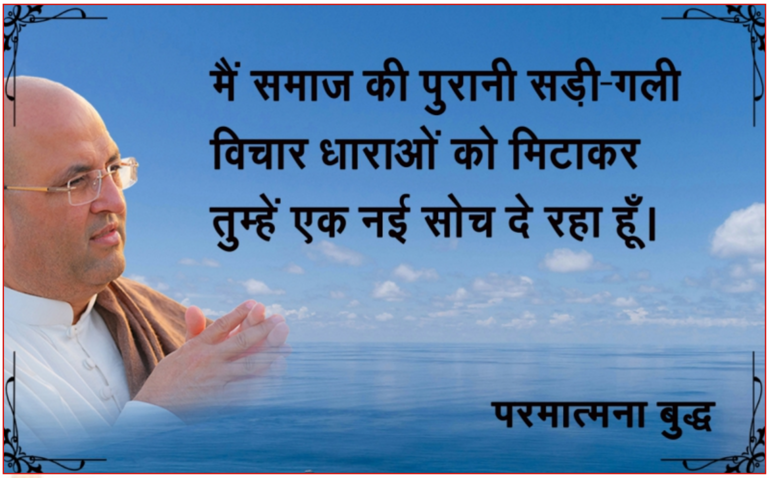

योद्धा: क्या आत्मा जन्म के समय में आती है तथा मृत्यु के समय में चली जाती है?
भगवान: समुद्र में मटका डालकर दाएँ-बाएँ चलाकर देखो कि मटका ही चलता है या समुद्र भी दाएँ-बाएँ चलता है।

योद्धा: योग क्या है?
भगवान: एक योग होता है आध्यात्मिक! जिसका तात्पर्य है तुमसे मिलना। और एक योग होता है सांसारिक। जिसका तात्पर्य केवल शारीरिक कसरत करना है।

योद्धा: मोक्ष क्या होता है?
भगवान: ***वो स्थिति जिसमें मैं आज जी रहा हूँ।***

योद्धा: निर्वाण की प्राप्ति कैसे होती है और यह क्या है?
भगवान: निर्वाण कोई मरने के बाद होने वाली उपलब्धि नहीं होती। तुम्हारा आज में उपस्थित होने का नाम ही निर्वाण है। और तुम्हारा भूत-भविष्य में होने का नाम ही बंधन है।

योद्धा: मुक्ति प्राप्त करने के साधन और विधियाँ क्या हैं?
भगवान: मुक्ति प्राप्त करने की विधि या साधन कोई नहीं होते। हाँ! बंधन में बंधने की विधि या साधन ज़रूर होते हैं। जैसे स्वास्थ्य प्राप्त करने की कोई भी औषधि नहीं होती। हाँ! बीमारी हटाने की औषधि ज़रूर होती है। और जब औषधि खा ली जाती है, बीमारी ठीक हो जाती है, तो जो बचता है उसी का नाम स्वास्थ्य है। तो तुम्हारी मूढ़ताएँ छूट जाएँ तो तुम मुक्त ही हो।

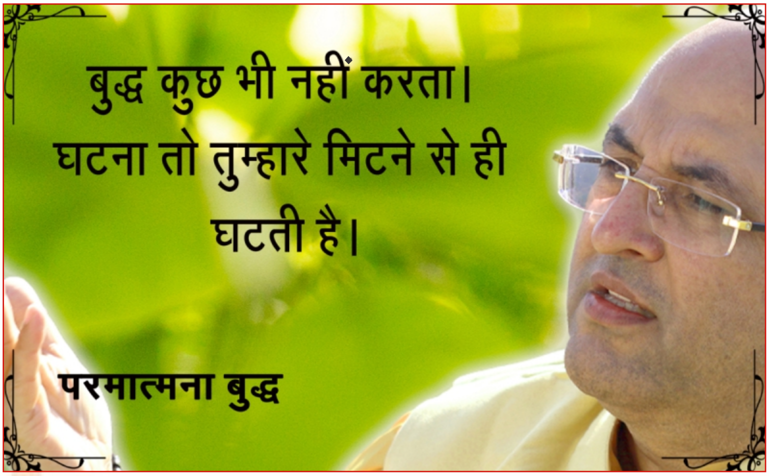

योद्धा: ब्राह्मण का क्या तात्पर्य है?
भगवान: ब्राह्मण बना है ब्रह्म धातु से। यानी जिसने ब्रह्म का साक्षात्कार कर लिया, जिसने ब्रह्म का अनुभव कर लिया, जिसने ब्रह्म को जान लिया और जो स्वयं ब्रह्म हो गया हो। वही ब्राह्मण, न कि जन्मजात।

योद्धा: ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से और शूद्र जंघा से पैदा क्यों हुए और यह अवधारणा किसने और क्यों रची?
भगवान: ये कहानियाँ उन लोगों ने रचीं जिन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं था। हम सभी एक ही ज्योति से पैदा हुए हैं। ***"एक नूर से सब जग उपजा कौन भले कौन मंदे"!***

योद्धा: ब्राह्मण कौन है?
भगवान: ब्राह्मण यानी जो सभी में ब्रह्म को देखे। उस खुदा को देखे। ***ज़र्रे-ज़र्रे में उसकी ज्योत को देखे।***

योद्धा: पाखंड क्या है?
भगवान: जिसके बारे में तुम्हें पता नहीं, और वो सभी सोच जो तुमने औरों से ली है उसे सच मान लेना। और उसी पाखंड अनुसार कृत्य कर स्वयं को धार्मिक मानकर धर्म की खोज से चूक जाना।

योद्धा: क्या पुराने सभी शास्त्र गलत हैं?
भगवान: जो शास्त्र तुम्हारे जीवन के अनुभव से तुममें उपजेगा बस वही शास्त्र ठीक है। और तुम्हारे संसार में जो हज़ारों शास्त्र सभी के धर्मों में हैं वो सभी तुम्हारे लिए गलत हैं।

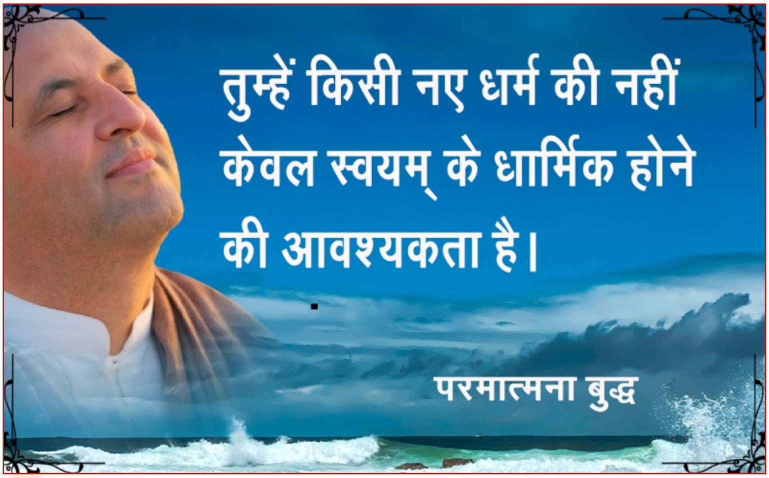

योद्धा: क्या तीर्थ क्षेत्र में रहने से कुछ लाभ होता है?
भगवान: केवल अपने भीतर रहने से लाभ होता है।

योद्धा: क्या राम-कृष्ण इस धरती पर हुए?
भगवान: राम-कृष्ण, बुद्ध-महावीर, नानक-कबीर, मोहम्मद-जीसस आदि महापुरुष इस धरती पर हुए या नहीं इससे तुम्हें कुछ भी लाभ होने वाला नहीं है। क्योंकि जब यह रहे तब क्या संसार धार्मिक बन पाया था? क्या उस समय तुम धार्मिक थे?

योद्धा: क्या भारत देवभूमि है?
भगवान: आज से 2000 वर्ष पूर्व आज से कई गुना बड़ा भारत था लेकिन तुम 1947 के बाद तो पाकिस्तान को भी देवभूमि नहीं मानते। देव एक गुण है जो बुद्धों के भीतर प्रकट होता है। कोई भी भूमि देव या देवी नहीं होती।

योद्धा: क्या कभी संसार धार्मिक होगा?
भगवान: नहीं ! संसार कभी धार्मिक नहीं होता। धर्म मनुष्य के भीतर प्रकट होता है। जिस दिन तुम्हें भी स्वयं का साक्षात्कार होगा, उस समय तुम्हारे भी भीतर से धर्म की खुशबू महकेगी।

योद्धा: शंकर का मत है कि ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या! क्या यह पंक्ति ठीक है ?
भगवान: नहीं! सही पंक्ति है — ***"जगत सत्य ब्रह्म तुम"।*** तुम्हारे ही भीतर से वो परमात्मा झाँक रहा है। तुम ही उस खुदा का नूर हो।

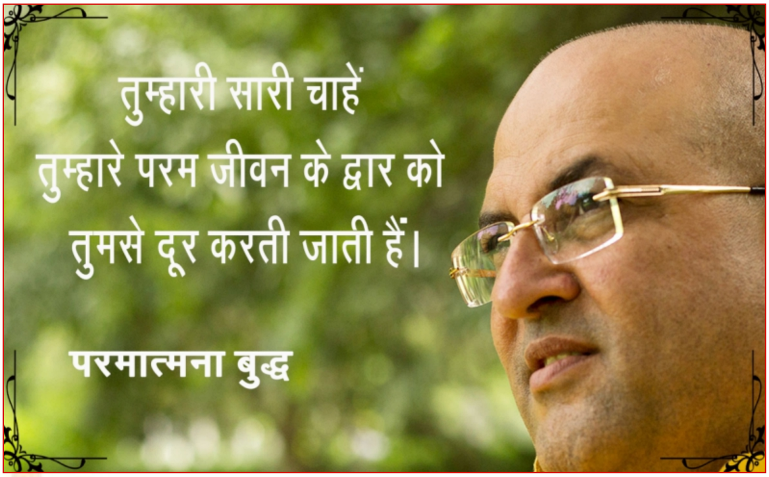

योद्धा: क्या बड़े भाग्य से मनुष्य जीवन मिलता है?
भगवान: मनुष्य शब्द ही हटा दो। जीवन ही बड़े भाग्य से मिलता है। फिर वो चाहे मनुष्य का हो या पशु-पक्षी का। इसे जप-तप, नमाज़, व्रत, अनुष्ठान में न गवाएँ। दिल खोलकर प्रेमपूर्वक इसे जीएँ और औरों को भी जीने दें।

योद्धा: क्या जीवन दुःख है?
भगवान: बुद्धुओं के लिए तो हाँ! और प्रबुद्ध के लिए यही जीवन सुख है, उत्सव है, आनंद है। तुम क्या मानते हो कि बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, जीसस, नानक, कबीर आदि महापुरुष क्या यहाँ दुखी थे?

योद्धा: मुक्त कैसे होंगे?
भगवान: सारी पुरानी रूढ़िवादी विचारधाराओं को छोड़कर। लेकिन जीते जी। मरने के बाद कोई किसी भी प्रकार की मुक्ति या बंधन का प्रश्न नहीं होता।

योद्धा: धर्म या मनुष्य दोनों में से क्या आवश्यक है?
भगवा: किसी भी प्रकार का जीवन, चाहे मनुष्य का हो या पशु-पक्षी का। लेकिन धर्म की छाया में। यानी प्रेमपूर्वक जीया गया जीवन।

योद्धा: खुदा को कहाँ ढूंढ़ें?
भगवान: तुम काबा जाओ या काशी! खुदा को कहीं न पाओगे। क्योंकि तुम्हारी आँखें ही बंद हैं। ***अल्लाह तुम्हारे सामने खुला बिखरा पड़ा है।*** ब्रह्म नदी-नालों में चारों तरफ बिखरा पड़ा है। तुम्हें देखना ही नहीं आता। रूढ़िवादी परंपराओं की पट्टी खोलो, ***अल्लाह सड़कों पर बिखरा दिखेगा।***

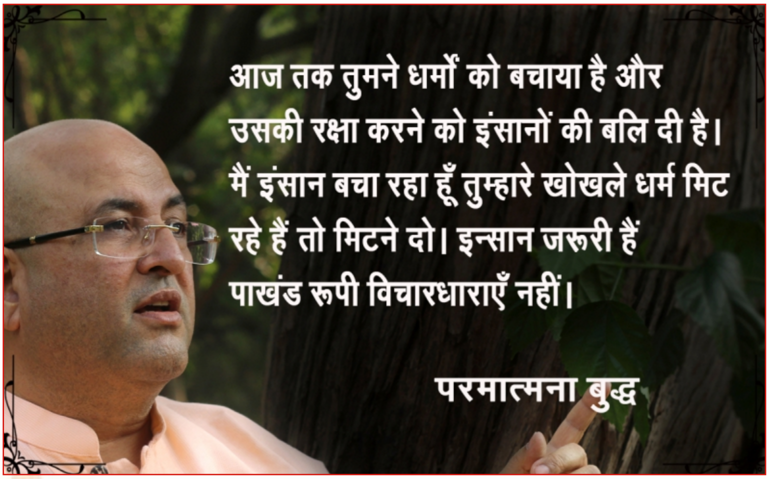

योद्धा: क्या मृत्यु के समय 10,000 बिच्छू के डंक की सी पीड़ा होती है?
भगवान: नहीं! यह वचन किसी नासमझ व्यक्ति के हैं। मरते वक्त व्यक्ति को केवल एक ही दुःख होता है कि हाय! कितना सुंदर जीवन मिला था और मैं जीने से ही चूक गया।

योद्धा: ध्यान क्या है?
भगवान: मन की निर्विचार अवस्था की दशा और तुम्हारा न हो जाना।

योद्धा: जागरण क्या है?
भगवान: स्वयं को पहचान जाना, सत्य को जान लेना।

योद्धा: बुद्धत्व क्या है?
भगवान: तुम्हारे मन में से भविष्य की कल्पनाओं का मिट जाना और आज के प्रति प्रेम का जन्म होना, तथा संसार मात्र के प्रति करुणा का उदय होना।

योद्धा: मोक्ष कैसे मिलेगा?
भगवान: अगर तुम सभी प्रकार की धार्मिक मूढ़ता भरी सोच छोड़ दो तो जीते जी ही मोक्ष पा जाओगे।

योद्धा: आस्तिक होना अच्छा है या नास्तिक होना?
भगवान: यकीनन आस्तिक होना ही अच्छा है लेकिन जिनको आजतक तुमने आस्तिक माना है उस प्रकार का मत समझना। वे तो नास्तिक से भी निचली स्थिति के व्यक्ति हैं। आस्तिक माने वो व्यक्ति जो यह धारणा रखे कि जीवन ने जैसा उसे बनाया वो पूर्णतया ठीक है। अगर वो मंदिर-मस्जिद जाकर, आरती-पूजा कर कुछ बदलवाना चाहता है तो वो नास्तिक है।

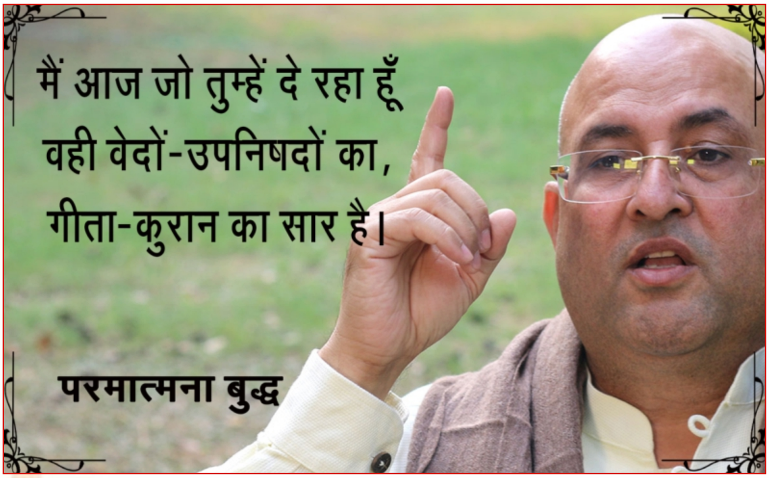

योद्धा: धार्मिक कौन और अधार्मिक कौन?
भगवान: जो संसार मात्र से प्रेम करे वो धार्मिक। और जिसकी सोच मंदिर-मस्जिद में अटक जाए वो अधार्मिक। लेकिन तुम तो आजतक बिल्कुल ही उल्टा मानते आए हो।

योद्धा: आस्तिक कौन और नास्तिक कौन?
भगवान: जो प्रकृति के चलन को स्वीकारे वो आस्तिक और जो मंदिर-मस्जिद में जाकर दीया, प्रसाद, मोमबत्ती, अगरबत्ती जलाकर सभी कुछ बदलवाने की इच्छा रखे वो नास्तिक।

योद्धा: हम कैसे मानें कि मनुष्य स्वयं में ही सारा ज्ञान धारण किए हुए है?
भगवान: बत्तख के बच्चे को तैरना सिखाना नहीं पड़ता। तुम तो फिर भी आदमी के बच्चे हो। जल में पैदा हुई मछलियों को गंगा स्नान के लिए कहीं नहीं जाना पड़ता।

योद्धा: मनुष्य अपने ही बंधन क्यों नहीं खोल पाता?
भगवान: यदि मनुष्य स्वयं का एक बार भी दर्शन कर ले तो सारे बंधन क्षण मात्र में उतारकर फेंक देगा। लेकिन दूसरों की ओर देखने की आदत के कारण वह स्वयं को कभी भी देख नहीं पाता। और अज्ञानवश बंधन में ही जीवन व्यतीत कर मर जाता है।

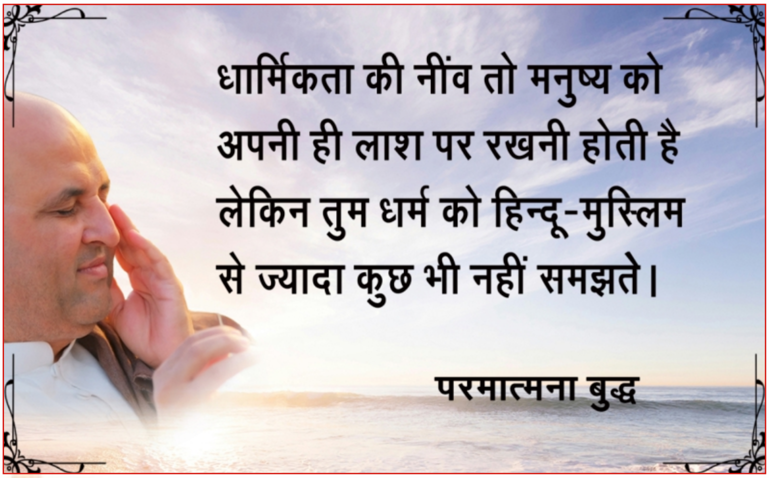

योद्धा: जब यहाँ धर्मशाला की ही भांति आना-जाना है तो यहाँ कुछ भी कार्य क्यों करना? ऐसा संतो ने कहा है?
भगवान: यही दुर्भाग्य है इस देश का! कि लोग कुछ और कह गए और तुमने समझ कुछ और लिया। वो कह गए कि लालच मत करो और तुमने मान लिया कि कुछ काम ही मत करो, संसार को सजाओ ही मत। क्योंकि यहाँ से तो चले जाना है।

योद्धा: परमात्मा को, खुदा को कैसे जाना जा सकता है?
भगवान: केवल स्वयं को जानकर। और जिसने स्वयं को जान लिया उसने उस विराट को भी पहचान लिया।

योद्धा: क्या धार्मिक मान्यताओं के अनुसार संन्यास लेकर पत्नी-बच्चे छोड़कर जंगल जाना ठीक नहीं है?
भगवान: केवल छोड़ने वाले को छोड़ना ही संन्यास है और बाकी सभी कृत्य पाखंड हैं। और संसार में से अपनी जिम्मेदारी छोड़कर जंगल भागना कोरी मूर्खता है। ***जो-जो मूर्खताएँ धर्म के नाम पर तुम सभी ने संजोई हैं मैं उसी को तोड़ने का प्रयत्न कर रहा हूँ।***

योद्धा: क्या अपने-अपने धर्मों के अनुसार आचरण करना ठीक नहीं है?
भगवान: इससे तुम दिखावे के धार्मिक बन जाओगे और इसी प्रकार चलने को पाखंड कहते हैं। ***धर्म अपना-अपना नहीं होता। धर्म केवल प्रेम होता है।*** प्रेम सभी का एक जैसा होता है।

योद्धा: क्या खुदा, भगवान, अल्लाह की कोई मूरत होती है?
भगवान: हाँ! दुनिया भर में फैली करोड़ों-अरबों मूरत उसी की है लेकिन जब से तुमने परमात्मा को, खुदा को दूर सातवें आसमान पर बिठा दिया तभी से सब उल्टा हो गया है।

योद्धा: मनुष्य जीवन का लक्ष्य क्या है?
भगवान: केवल जीवन को जीना। और मनुष्य जीवन का ही नहीं हर जीवन का लक्ष्य है कि प्रेमपूर्वक, हंसी-खुशी जीवन को जीया जाए।

योद्धा: क्या पुण्य करना ठीक नहीं है?
भगवान: जो तुम करोगे वो पुण्य हो ही नहीं सकता। तुम रास्ते से हट जाओ फिर जो होगा वो स्वयं में पुण्य होगा।

योद्धा: क्या स्वर्ग-नरक होता है?
भगवान: हाँ! तुम आज सभी नरक में ही तो रहते हो। तभी तो सभी को मरने के बाद स्वर्ग जाने की लालसा रहती है। किसी को वैकुंठ जाना है, किसी को जन्नत। लेकिन बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, जीसस आदि ने इसी जहाँ को सुंदर बनाकर यही अपना स्वर्ग स्थापित कर दिया। ***तो बुद्धों के लिए स्वर्ग यहीं है और तुम्हारे लिए नरक यहीं है।***

योद्धा: क्या पूजा करना ठीक नहीं है?
भगवान: तुम अपने माँ-बाप से, पत्नी-बच्चों से संसार में प्रेम करना छोड़कर उनकी पूजा करने लग जाओ। बस एक दिन में पता लग जाएगा कि प्रेम करना ठीक है या पूजा करना।

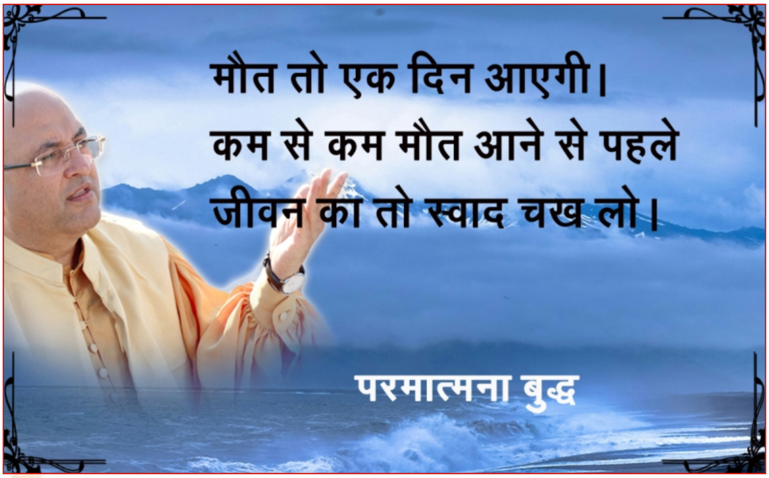

योद्धा: क्या जन्म-मृत्यु विधि के हाथ है?
भगवान: आँखों पर काली पट्टी बाँधकर सड़क पार करके देख लो किसके हाथ है।

योद्धा: क्या भाग्य पूर्वनिर्धारित होता है? जिसे ब्रह्मा लिखकर भेजता है?
भगवान: हाँ! गधों के लिए तो वो लिखकर ही भेजता है कि तुम स्कूल नहीं जा पाओगे और पूरा जीवन दूसरे का बोझा ही ढोओगे। और मनुष्य के लिए कोई पहले से लिखा हुआ भाग्य नहीं, क्योंकि वो स्वयं अपने भाग्य का विधाता है।

योद्धा: क्या पुराने सारे और सभी धर्मों के शास्त्र गलत हैं?
भगवान: तुम संसार में आज की जेनरेशन के 10 वर्ष के बच्चे को देखो और तुलना करो उस समय के साथ जब तुम 10 वर्ष के थे। अब बताओ आज का 10 वर्ष का बच्चा अक्लमंद है या तुम जब 10 वर्ष के थे तब तुम अक्लमंद थे। उत्तर आएगा कि आज का बच्चा ज्यादा अक्लमंद है। अब सोचो हमसे 5000 वर्ष पहले जो हमसे कम बुद्धिमान लोग थे हम उनकी लिखी हुई पुस्तकों को ठीक मान रहे हैं। आज बच्चा बड़ा हो गया है। अब नए शास्त्र रचने होंगे।

योद्धा: क्या इस जगत में फिर कभी कोई पैगम्बर, अवतार, या परमात्मा का पुत्र आएगा?

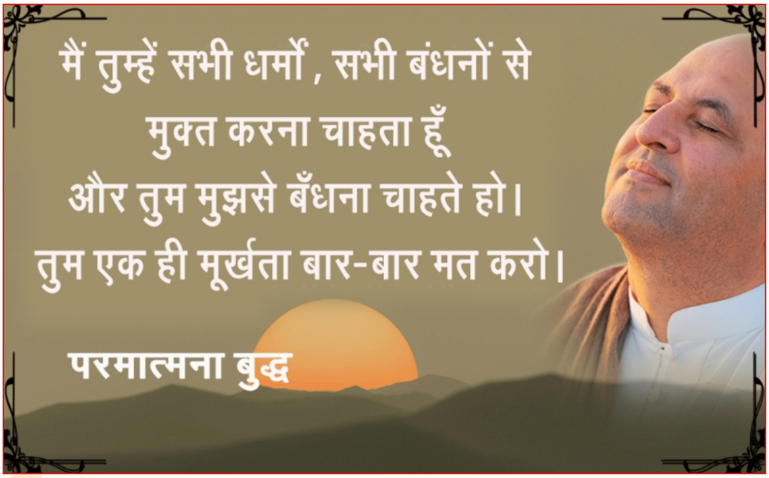

भगवान: केवल कुछ नासमझ व्यक्ति ही अपने बारे में ऐसी धारणाएँ पालने की कल्पनाएँ करते हैं। आज से पहले भी जो महापुरुष आए उनमें से किसी ने भी ऐसी घोषणा नहीं की। हाँ! उनके जाने के बाद उनके अनुयायियों ने उनके बारे में ऐसे ही मूर्खतापूर्ण वक्तव्य दिए।

योद्धा: क्या हिंदू-मुस्लिम, सिख-ईसाई, बौद्ध-जैन होना धार्मिक होना नहीं होता?
भगवान: अगर ऐसा ही होना धार्मिक होता तो बुद्ध-महावीर जो जंगलों में भटके वो तो बिल्कुल सही नहीं थे। या तो तुम्हारी मान्यताएँ ठीक या बुद्ध-महावीर को जो मिला वो ठीक।

योद्धा: जैसा हम अब तक करते आए हैं कि पैदा हुए बच्चे को ही हिन्दू-मुस्लिम आदि बना देते हैं क्या वो ठीक नहीं है?
भगवान: तुम्हारे घर में अब जो बच्चा पैदा हो उसे 25 वर्ष बिना हिन्दू-मुस्लिम, सिख-ईसाई, बौद्ध-जैन बनाए बड़ा करके देख लो। बड़ा होकर वो तुम्हारे जैसे मूढ़ धार्मिकों पर हँसेगा।

योद्धा: अगर पवित्र जीवन भी जिया जाए और मन्दिर-मस्जिद भी जाया जाए तो क्या कुछ हानि है?
भगवान: नहीं! लेकिन पवित्र जीवन जीने के बाद मन्दिर-मस्जिद जाकर करोगे क्या? धर्म युद्ध की तैयारी? या जिहाद की तैयारी?

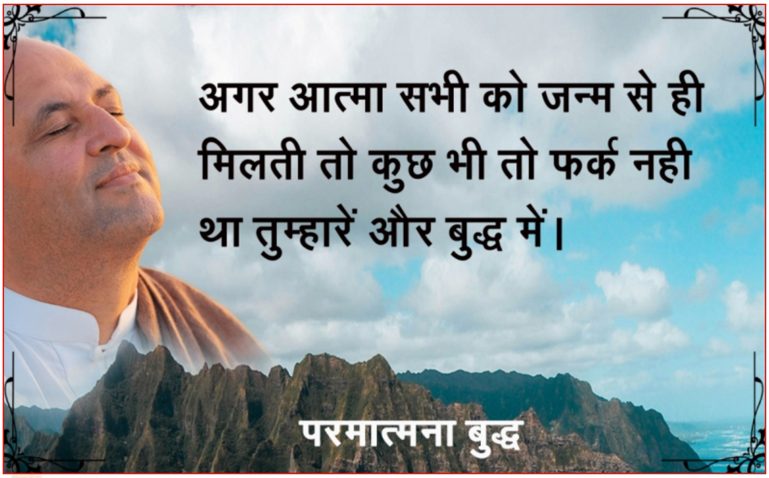

योद्धा: हम कृष्ण, बुद्ध, नानक, जीसस, मोहम्मद आदि महापुरुषों की पूजा क्यों करते हैं?
भगवान: क्योंकि हमारा समाज कृष्ण, बुद्ध, नानक, जीसस, मोहम्मद जैसे महापुरुष दोबारा नहीं बना पाया। सोचो अगर आज दुनिया में कृष्ण, बुद्ध, नानक, जीसस, मोहम्मद जैसे महापुरुष 100 करोड़ व्यक्ति जिन्दा घूम रहे होते तो क्या हम इन महापुरुषों के मन्दिर बनाते?

योद्धा: हमें किस मूर्ति की पूजा करनी चाहिए?
भगवान: स्वयं की मूर्ति बनवा लो, वही परमात्मा की मूर्ति है और बाकी सभी मूर्तियों को भूल जाओ।

योद्धा: हमें पाप का भय लगता है कि अगर तुम्हारे कहने पर हम अपना पुराना धर्म, मूर्ति या शास्त्र त्याग दें?
भगवान: अपना सभी पुराना मुझे दे जाओ पापों के साथ। मैं उन सभी को भी पापों से मुक्त कर दूँगा।

योद्धा: हमें पूजा स्थल में किसकी तस्वीर लगानी चाहिए?
भगवान: एक आईना लगवाना चाहिए, उसी में परमात्मा की तस्वीर दिख जाएगी।

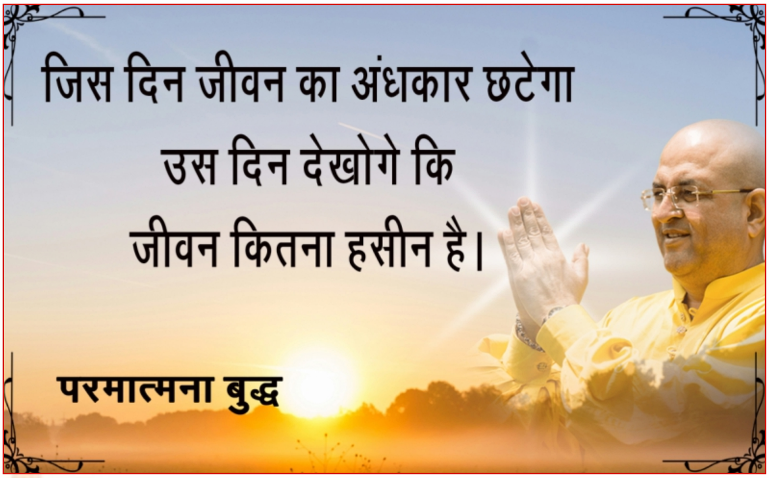

योद्धा: क्या दीक्षा लेने से कुछ भी लाभ नहीं होता?
भगवान: नहीं! क्योंकि अगर दीक्षा से ही तुम धार्मिक हो सकते तो कृष्ण, बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, जीसस, नानक, कबीर सभी तुम्हें दीक्षा देकर धार्मिक बना गए होते।

योद्धा: जीवन में क्या आवश्यक है?
भगवान: प्रेम से जी लो, एक ही ज़िंदगी है। ***न आत्मा है और न ही दूर कहीं मोक्ष है।***

योद्धा: क्या कृष्ण, बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर के समय में धरती पर धर्म था?
भगवान: नहीं! धर्म धरती पर नहीं, व्यक्ति में होता है। उन महापुरुषों में था। तुम तो तब भी ऐसे ही खाली थे।

योद्धा: बुद्धजन संसारी लोगों की दृष्टि में पागल से क्यों प्रतीत होते हैं?
भगवान: जीते जी जिसके भ्रम टूट जाते हैं वो सांसारिक लोगों को पागल से ही प्रतीत होते हैं।

योद्धा: क्या प्रबुद्धजनों की मृत्यु होती है?
भगवान: हाँ! लेकिन जीते जी ही हो जाती है। 80 से 90 वर्ष के बाद तो देह जाती है।

योद्धा: कैसे ज्ञात होगा कि सत्य मिल गया है?
भगवान: जब तुम्हारा घट फूट जाए।

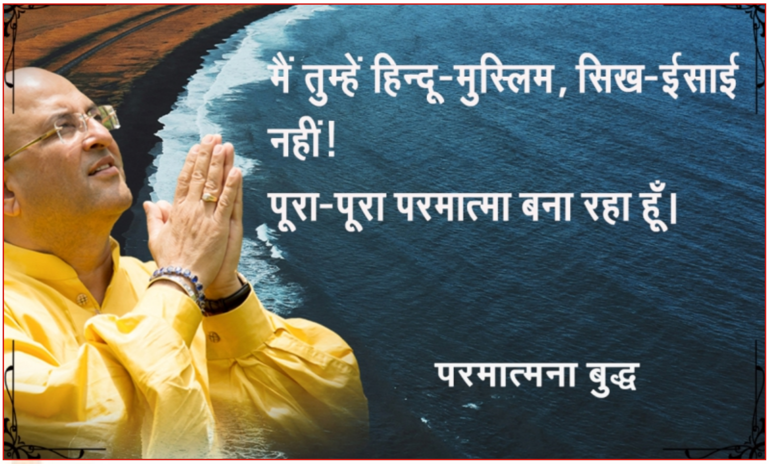

योद्धा: कौन सा शास्त्र ठीक है जिससे प्रज्ञा, बोध, जागरण आ जाए?
भगवान: प्रज्ञा, बोध, जागरण पुस्तकों से कभी भी नहीं समझा जा सकता। तुम भी चलो! रुको मत कहीं भी। वो समय के साथ-साथ स्वत: ही आ जाएगा।

योद्धा: क्या जिज्ञासा धर्म प्राप्ति का प्रथम चरण है?
भगवान: तुम्हारा मरना ही धर्म प्राप्ति का पहला और आखिरी चरण है।

योद्धा: क्या जाति व्यवस्था ठीक है?
भगवान: हाँ! गधा एक जाति का है और घोड़ा एक जाति का। तुम जानो तुम्हें कौन सी जाति पसन्द है।

योद्धा: क्या मनुष्य अछूत होता है?
भगवान: हाँ! जो दिमागी कोढ़ से ग्रसित हैं उन्हें छुआछूत मानना चाहिए। क्योंकि इससे वो 12-15 प्रतिशत लोग जो दिमागी कोढ़ से ग्रसित हैं वो अगर बचे हुए 85 प्रतिशत को छुएँगे तो वो भी रोगी बन जाएँगे।

योद्धा: क्या कौआ हमारा पितर होता है?
भगवान: हाँ! चिंता मत करो। तुम जब मरोगे तो कौए ही बनोगे क्योंकि पूरा जीवन तुमने धर्म के नाम पर अपने-अपने धर्म स्थलों में बैठकर काँव-काँव ही तो की है।

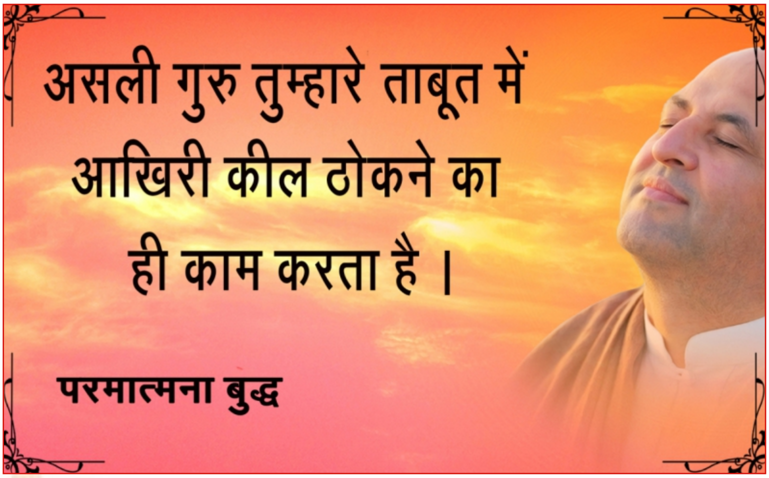

योद्धा: क्या ज्योतिष विद्या गलत है?

भगवान: नहीं! बिल्कुल ठीक है। क्योंकि वो विद्या जिससे हमारे देश में कुछ बेरोजगार लोग पेट भरने में सक्षम हैं वो गलत कैसे हो सकती है। और तुम्हारे भविष्य के बारे में वो ज्योतिष विद्या बिल्कुल ऐसी ही है जैसे एक अंधा दूसरे अंधे को अंधेरी रात में रास्ता बताए।

योद्धा: क्या काबा-काशी जाने से कोई लाभ नहीं होता है?

भगवान: होता है। तुम्हारी पिकनिक हो जाती है। लेकिन असल में तुम्हारे ही भीतर काबा-काशी है और वहीं जाने से लाभ होता है।

योद्धा: हमारे देश में गरीबी कब समाप्त होगी?

भगवान: जब समाज में करोड़ों जिन्दा कृष्ण, बुद्ध, नानक, कबीर, मोहम्मद, जीसस और अम्बेडकर घूमेंगे।

योद्धा: क्या दान, दक्षिणा से कुछ लाभ होता है?

भगवान: नहीं! अगर तुम दान-दक्षिणा के बदले अपने पापों का सौदा करना चाहते हो तो यह मुमकिन नहीं है। हाँ! यही काम अगर तुम समाज सेवा करके लोगों को शिक्षित और उनका जीवन उत्तम करने को करते हो तो यह परमात्मा यानी जीवन की ही सेवा है। अच्छा कृत्य है लेकिन धर्म का कुछ भी लेना-देना नहीं है क्योंकि धर्म को लेना-देना केवल मनुष्य से होता है।

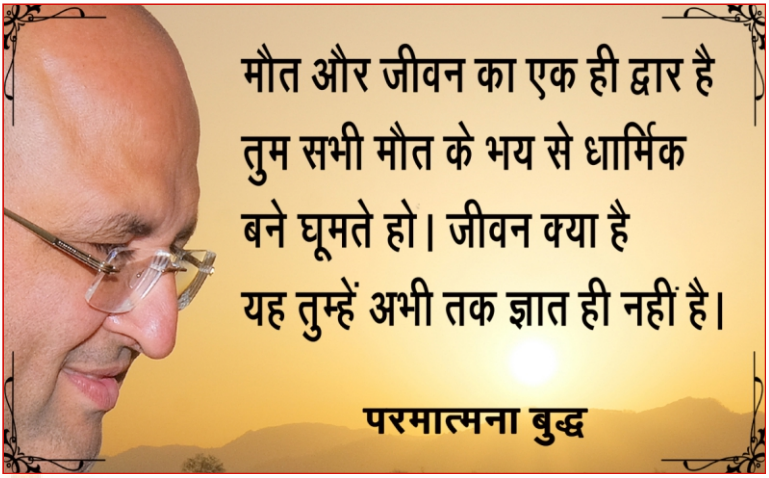

योद्धा: क्या धन का दान देने से खुदा प्रसन्न होता है?
भगवान: जिस धन को मनुष्यों ने बनाया और तुम्हारे मूढ़ महात्माओं ने जिसकी हमेशा निंदा ही की है वो निंदनीय वस्तु से भगवान प्रसन्न ही कैसे होगा?

योद्धा: मन्दिर-मस्जिद आदि बनाना क्या धर्म का कार्य नहीं होता?
भगवान: बिरला ने भारत में अनेक मन्दिर बनाए, अम्बेडकर ने लोगों को विद्या के मन्दिर में जाने को प्रेरित किया, टाटा और धीरूभाई ने देश के लिए धन का सृजन किया। स्वयं अपनी बुद्धि से निर्णय करो कि कौन सा कार्य धर्म का है।

योद्धा: मरते समय राम नाम या गंगा जल का क्या लाभ?
भगवान: जो व्यक्ति पूरा जीवन बंधन में रहा तुम सोचते हो मरते वक्त राम नाम से या गंगा जल की 2 बूंद से कोई लाभ होगा? लाभ जीवन में चाहिए था कि मुक्त जी पाता। लेकिन वो तो बंधा रहा अपनी ही परम्पराओं से, विचारधाराओं से। मरने के बाद मुक्ति की धारणा बुद्धों की नहीं, बुद्धुओं की सोच है।

योद्धा: क्या समाज में अम्बेडकर के मन्दिर बनाने से समाज सुधरेगा?
भगवान: नहीं। तुम समाज में जिन्दा ***5 करोड़ अम्बेडकर*** पैदा कर दो समाज तत्क्षण सुधर जाएगा।

योद्धा: क्या मनु संहिता के अनुसार चलना ठीक नहीं है?
भगवान: नहीं! बिल्कुल ही गलत है। पहले का समाज बहुत ही मंदबुद्धि समाज था, उस समय लोगों को भी चाबुक के सहारे ठीक रखा जाने का प्रयास किया जाता रहा होगा। लेकिन आज समाज का बौद्धिक स्तर बहुत ऊँचा है। आज उसी प्रकार से लोगों को हाँकना बिल्कुल ही गलत होगा।

योद्धा: ब्राह्मण ही ऊँच-नीच क्यों मानते हैं, छुआछूत क्यों मानते हैं?
भगवान: ऊँच-नीच या छुआछूत को मानने वाला व्यक्ति ही स्वयं को ब्राह्मणवाद की परम्परा में घोषित कर देता है। हर धर्म में ऐसे लोग मिल जाएँगे जो स्वयं को उच्च तथा दूसरों को निम्न मानते हैं। वो सभी एक पुरानी परम्परा को जिन्दा रखना चाहते हैं ***और उसी सड़ी-गली लाश का नाम है ब्राह्मणवाद।*** इसको किसी जाति विशेष से नहीं जोड़ना चाहिए।

योद्धा: क्या रामराज्य दुबारा लाया जाना चाहिए?
भगवान: नहीं! तुम्हें ज्ञात भी है कि रामराज्य में क्या व्यवस्थाएँ थीं। स्त्रियाँ-पुरुष गुलामों की तरह बाजारों में बिकते थे, स्त्रियों का शोषण होता था। चारों तरफ का समाज ऊँच-नीच के वर्गीकरण में विभाजित था। इस प्रकार का रामराज्य हमारे देश के माथे पर एक धब्बा ही लगाएगा।

योद्धा: क्या गरीब-अमीर प्रारब्ध के कर्मों के कारण बनता है?
भगवान: नहीं! यहाँ कभी कोई भी वस्तु दुबारा नहीं होती। एक पत्ता भी दुबारा नहीं होता तो मनुष्य कहाँ से दोबारा होगा।

योद्धा: इस जगत का असली मालिक कौन? खुदा या भगवान?
भगवान: तुम।

योद्धा: भारत धर्म प्रधान देश है फिर भी गरीब क्यों?
भगवान: क्योंकि तुम सभी के तथाकथित धर्मों की बागडोर भूखे, नंगे, भिखमंगे धर्मगुरुओं ने छीन ली है। और उन्होंने धर्म की परिभाषा ही बदल दी है। अगर आज भी हमने धर्म का सही अर्थ न समझा तो इस देश का भविष्य हमेशा ही अंधकार में रहेगा।

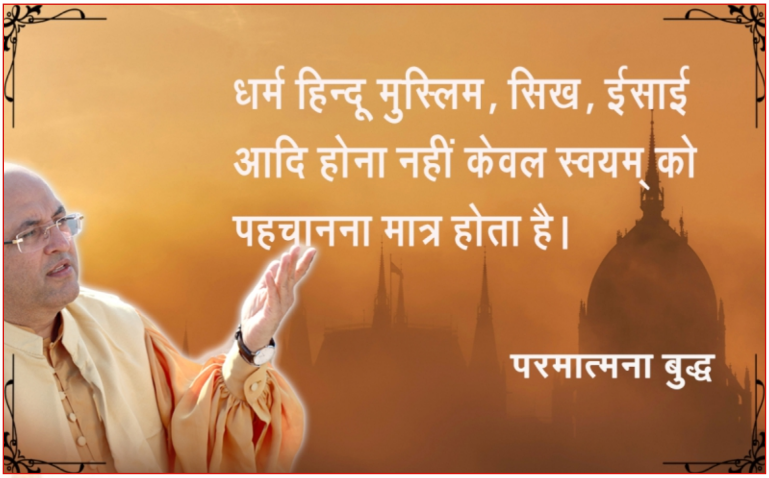

योद्धा: भारत का इतिहास 5500 वर्ष पुराना फिर भी भारत पिछड़ा क्यों?
भगवान: क्योंकि भारत की छाती पर अज्ञानता ने कब्ज़ा कर लिया है। भारत ने सोच पाली हुई है कि अमीर-गरीब प्रारब्ध कर्मों के कारण होता है जो कि पूर्णतया गलत है। जब तक तुम अपना भविष्य अपने हाथ में नहीं लोगे तब तक भारत गरीब और पिछड़ा ही रहेगा।

योद्धा: क्या हम यहां सुख पैदा कर सकते हैं?
भगवान: हाँ! जब तुम दुःख पैदा कर सकते हो तो सुख क्यों नहीं।

योद्धा: क्या जन्म-मृत्यु पूर्व निर्धारित है?
भगवान: शायद तुम्हारे लिए तो हाँ। और जिन्हें सत्य मिल गया उनके लिए कदापि नहीं।

योद्धा: क्या मरने के बाद हमें स्वर्ग मिलेगा?
भगवान: जिसे आज जीना आ गया वो कभी भविष्य के लिए सपने नहीं बुनता।

योद्धा: मौत से बचने के लिए कौन सा मंत्र है?
भगवान: इससे पहले मौत आए तुम मेरे पिलाए अमृत का स्वाद चख लो, मृत्यु तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर पाएगी।

योद्धा: हम देश के लिए, धर्म के लिए क्या करें?
भगवान: अभी भी वक्त है उठ खड़े हो जाओ। अपनी आवाज़ इतनी बुलंद कर दो कि वो तुम तक पहुँच जाए।

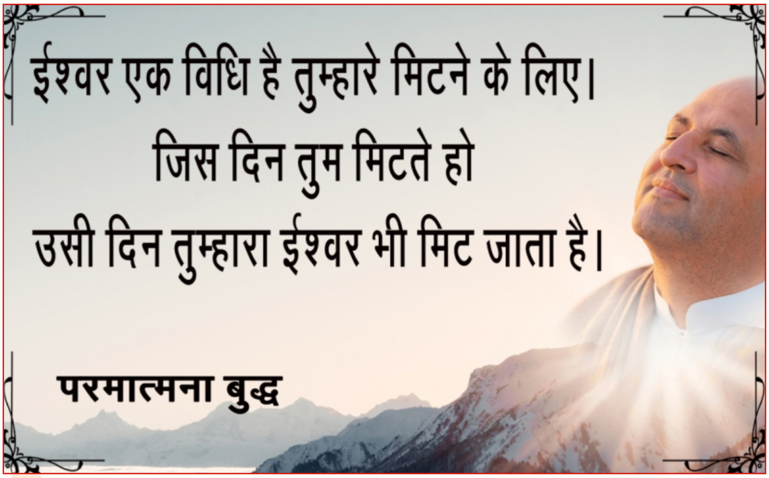

योद्धा: क्या धर्म की रक्षा के लिए हथियार उठाना ठीक है?
भगवान: नहीं! इंसान को मार कर धर्म की रक्षा करने से अच्छा है धर्म को मारकर इंसान की रक्षा कर ली जाए।

योद्धा: गुरु कौन सा सही है?
भगवान: पूरा अस्तित्व ही गुरु है तुम बस शिष्य बनने को तैयार हो जाओ।

योद्धा: क्या धर्म युद्ध में जान देने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है?
भगवान: यह किसी मूढ़ व्यक्ति के वचन हैं। कोई भी व्यक्ति अगर अपने धर्म का उत्थान चाहता है और दूसरे के धर्म का विनाश चाहता है तो वह व्यक्ति धार्मिक हो ही नहीं सकता।

योद्धा: धर्म किस उम्र में सीखना सही है?
भगवान: मनुष्य को पहले पेट भरने योग्य बनाओ। जब उसका पेट भर जाएगा तो वह स्वयं ही तुम्हारे पास आ जाएगा धर्म की खोज करने।

योद्धा: हमारा देश कब उन्नत होगा?
भगवान: जब देश में युवा पैदा होगा और उठकर एक क्रांति को जन्म देगा। अभी तो भारत भर में बूढ़े ही पैदा होते हैं।

योद्धा: मृत्यु के क्षण में क्या भगवान के नाम सिमरन से कुछ लाभ होता है?
भगवान: नहीं। इस प्रकार जीवन जियो कि मृत्यु के क्षण में यह कह सको कि ***"मज़ा आ गया जीवन जीने का"।*** हो सके तो ये जीवन हमें पुनः-पुनः देना मैं इसे बार-बार जीना चाहूंगा।

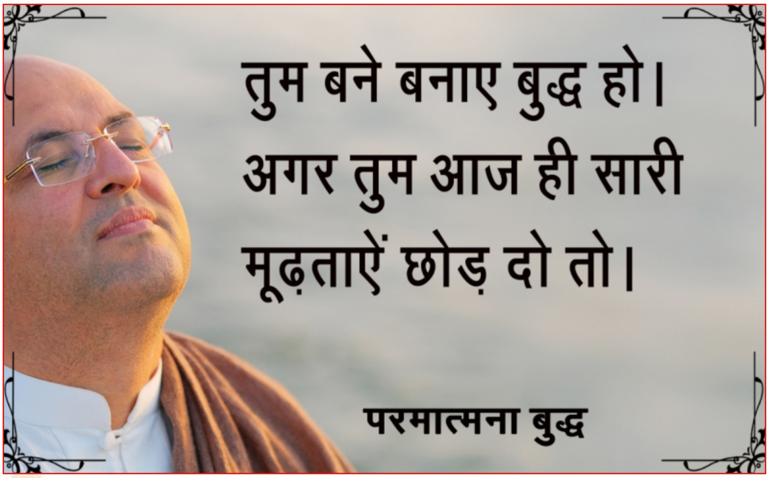

योद्धा: भारत अमीर कैसे होगा?
भगवान: कसम खा लो कि जिंदगी को भाग्य के भरोसे न छोड़ेंगे। बस यही सूक्त है भारत के और तुम्हारे अमीर होने का।

योद्धा: हम अज्ञान से कैसे मुक्त होंगे?
भगवान: तुम्हें अज्ञान से नहीं, तुम्हारी मूढ़ता भरे ज्ञान से मुक्त होना है जिसको आज तक तुम ज्ञान मानते आए हो, उससे मुक्त हो जाओ।

योद्धा: हमें यह अनुभव कैसे हो कि जीवन ही खुदा है?
भगवान: 10–20 दिन रोज़ एक घंटा श्मशान में जाकर बैठो। विपरीत में ही वास्तविक स्थिति का अनुभव होता है।

योद्धा: आत्मा का अस्तित्व है या नहीं?
भगवान: जिस प्रकार की आत्मा का वर्णन तुम्हारे शास्त्रों में है ऐसा कोई भी अस्तित्व नहीं है। वह कुछ और ही है तुम देख तो सकते हो लेकिन तुम उसे पुस्तकों में से पढ़कर कुछ भी नहीं समझ सकते हो।

योद्धा: संसार का स्वरूप क्या है? क्या यह स्थिर है या परिवर्तनशील?
भगवान: तुम्हारी सारी कल्पनाओं का नाम ही संसार है। और जो-जो मूढ़ता भरी कहानियां तुमने सुन रखी हैं अपने-अपने धर्मों के विषय की उसका नाम संसार है।

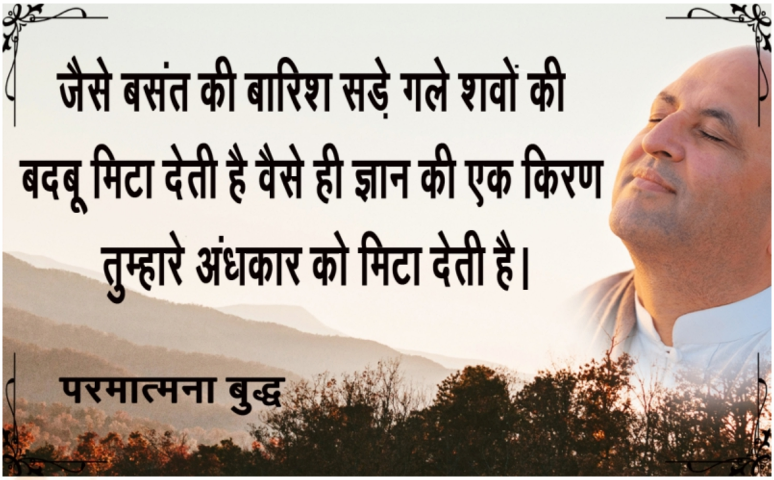

योद्धा: क्या धर्म की निरंतरता है, या यह परिवर्तनशील है?
भगवान: जिसे तुम धर्म कह रहे हो वो धर्म नहीं छलावा है। धर्म तो एक प्रकार के होश का नाम है तुम्हारे में घट गया तो तुम धार्मिक। और जब किसी को होश आ जाता है तो वह कम या ज्यादा नहीं होता। और निरंतरता! तो धर्म नहीं यह जगत का होना और तुम्हारा होना निरंतरता है।

योद्धा: निर्वाण की प्राप्ति कैसे होती है और यह क्या है?
भगवान: निर्वाण कोई मरने के बाद होने वाली उपलब्धि नहीं होती। तुम्हारा आज में उपस्थित होने का नाम ही निर्वाण है। और तुम्हारा भूत-भविष्य में होने का नाम ही बंधन है। इसी को प्रबुद्ध जनों ने महानिर्वाण कहा है।

योद्धा: संसार की उत्पत्ति और इसका कारण क्या है?
भगवान: वस्तु में गति और परिवर्तनशील होने के कारण अणु ने अपने जैसे अणुओं का विस्तार किया और अरबों वर्ष बाद जो हमें दिख रहा है यह उस एक अणु का ही स्वरूप है। अणु आज भी खिल रहा है उसका अंत कभी भी नहीं है। और इसका कारण कुछ भी नहीं है।

योद्धा: भौतिक वस्तुओं की स्थिति और उनकी वास्तविकता क्या है?
भगवान: कोई भी वस्तु स्थिर नहीं होती। तुम्हारे प्रयोग में जो आ जाए वो तुम्हारे लिए वास्तविक है।

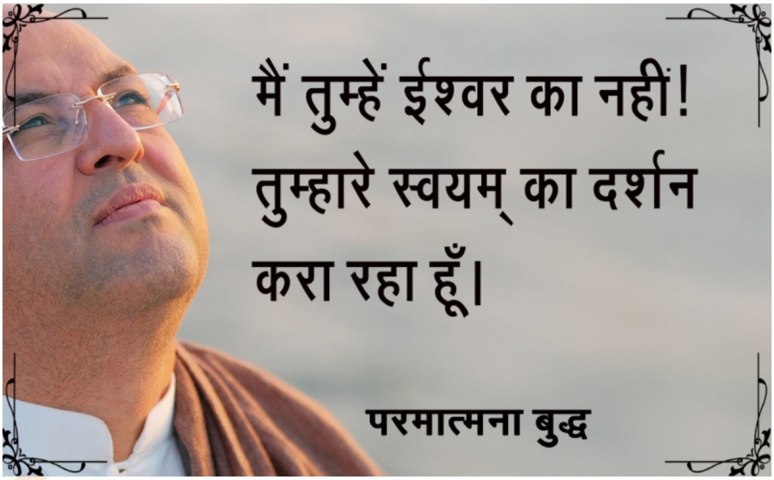

योद्धा: कर्म का प्रभाव किस प्रकार से कार्य करता है?
भगवान: तुम्हारे अवचेतन मन में जाकर तुम्हारे ही चारों तरफ सुख और दुख पैदा करता है। और उसके अलावा कहीं कोई व्यक्ति नहीं बैठा है जो तुम्हारे कर्मों के पाप-पुण्य का हिसाब रख रहा है।

योद्धा: ध्यान और साधना का क्या महत्त्व है और यह कैसे काम करता है?
भगवान: ध्यान का जो तात्पर्य तुम सभी ने आंखें बंद कर मौन होने से मान लिया है वह त्रुटिपूर्ण है। ध्यान का मतलब बाहर की आंखें बंद कर मौन नहीं रहना है बल्कि बुद्धि से मौन होना है।

योद्धा: विवेक और अज्ञान के बीच अंतर क्या है?
भगवान: ध्यान करो, विवेक आएगा तो अज्ञान का पता चल जाएगा। वैसे अज्ञान नामक कोई वस्तु नहीं होती। जैसे अंधकार नामक कोई वस्तु नहीं है केवल प्रकाश का न होना ही अंधकार है।

योद्धा: धर्म क्या है? क्या हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई होना धर्म नहीं है?
भगवान: धर्म नाम है तुम्हारे भीतर की वीणा के बजने का।

योद्धा: क्या प्रार्थना करना जरूरी है?
भगवान: प्रार्थना मैं कर सकता हूँ यह धारणा ही मूर्खतापूर्ण है। प्रार्थना तो चल ही रही है तुम्हारे चारों तरफ। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नदियां-सागर, सभी उसी विराट की प्रार्थना में लीन ही हैं। तुम्हें तो बस अपनी 'मैं' मिटा कर उसमें शामिल होना है।

योद्धा: क्या जन्म-मृत्यु पूर्व निर्धारित है?

भगवान: शायद तुम्हारे लिए तो हाँ। और जिन्हें सत्य मिल गया उनके लिए कदापि नहीं। दरअसल तुम जो-जो धारणाएँ पालते हो वो-वो तुम्हारे लिए दुनिया में सत्य हो जाती हैं। ***क्योंकि तुम परमात्मा हो।*** तुम अगर यह धारणा पालोगे कि तुम 40 वर्ष में ही बूढ़े हो गए तो तुम हो ही जाओगे। और अगर तुम यह मानते हो कि तुम 85 वर्ष में भी जवान की तरह भाग-दौड़ रहे हो तो तुम जवान ही हो।

योद्धा: क्या भारत कभी सोने की चिड़िया था ?

भगवान: हाँ! कुछ चुनिंदा व्यक्तियों के लिए पहले भी था और केवल चुनिंदा लोगों के लिए आज भी है। गूगल करो 145 करोड़ की संख्या में 280 लोगों के लिए आज भी है।

योद्धा: क्या जन्म-मृत्यु, लाभ-हानि, यश-अपयश विधि के हाथ है?

भगवान: इसी मूर्खता भरी सोच ने भारत को भाग्यवादी बना दिया और पूरा भारत भाग्य के ही भरोसे बैठ गया। और यही कारण है कि आज तक भारत पिछड़ा हुआ है। यहां कुछ भी किसी के हाथ नहीं है यह सभी तुम्हारे हाथ है। भाग्य से तुम्हें यह जीवन मिला है अगर नहीं मिलता तो शिकायत भी करने का कुछ उपाय नहीं था। ***"तो उठो और अपना भाग्य खुद लिखो"।***

योद्धा: बुद्धत्व क्या है? प्रबुद्ध होना क्या है?

भगवान: केवल स्वयं को जानना और तुम बने-बनाए बुद्ध हो। पहले हिन्दू-मुस्लिम होने में पागल हो रहे थे अब बुद्ध होने में पागल मत हो जाना। तुम्हें कुछ नहीं होना। तुम स्वयं में पूर्ण हो।

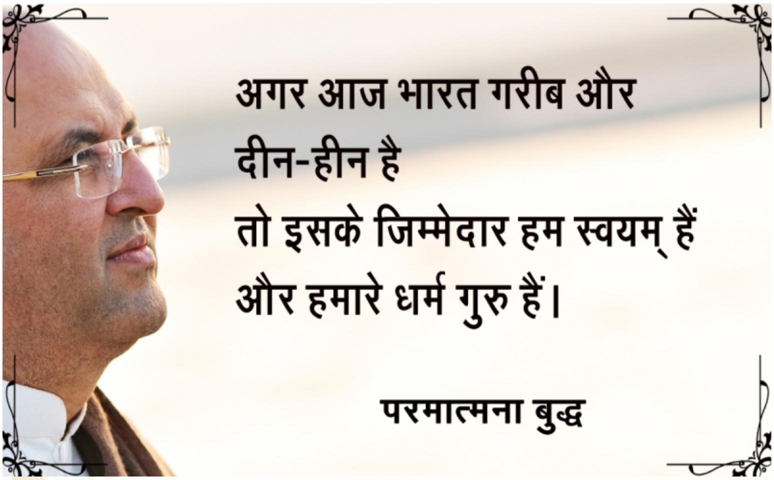

योद्धा: धार्मिक कैसे हुआ जाता है?

भगवान: धार्मिक हुआ जा ही नहीं सकता। क्योंकि जिसे धर्म मिलता है उसकी मौत पहले ही हो जाती है। या तो वहाँ तुम होते हो या धर्म। दोनों एक ही समय में नहीं होते। जिस प्रकार प्रकाश कभी भी अंधकार को नहीं देख सकता है उसी प्रकार तुम कभी भी धर्म को नहीं देख सकते हो क्योंकि तुम्हारे होने का ही तो दूसरा नाम अज्ञानता है, उपद्रव है। और तुम्हारे मिटने का नाम ही तो धर्म, बुद्धत्व, बोध, जागरण, प्रज्ञावान होना है। तो अगर परमात्मा को जानना है तो अभी मिटो।

योद्धा: प्रकृति की ओर हर किसी का मन क्यों आकर्षित होता है?

भगवान: क्योंकि यहाँ परमात्मा ही छुपा है और यही खुदा का ढंग है तुम्हें बुलाने का। अगर तुम्हें पक्षियों के संगीत में उस खुदा के घुंघरू की धुन सुनाई देने लगे या नदियों के कल-कल में कृष्ण की बांसुरी की धुन सुनाई देने लगे तो मानना कि प्रकृति ने जो जाल तुम पर फेंका था तुम उसमें फँस चुके हो। अब बच के निकलने का कोई भी मार्ग नहीं है। अगर तुम उस जाल से बचना चाहते हो तो मंदिर-मस्जिद में ही छुपे रहो। वहीं तुम बच सकते हो। क्योंकि ***"परमात्मा-खुदा, मंदिर-मस्जिद छोड़कर सभी जगह बिखरा हुआ है"।*** अच्छा होगा कि हिन्दू-मुस्लिम ही बने रहो खुदा के चक्कर में पड़ गए तो पागल हो जाओगे।

योद्धा: हम उसका मंदिर कहाँ बनाए और कैसा बनाएँ?

भगवान: अगर खुदा है तो हर कहीं है तो उसके लिए जगह कैसे निर्धारित करोगे? और अगर खुदा नहीं है तो कहीं भी नहीं है तो फिर मंदिर बनाकर परमात्मा कहाँ से बिठाओगे। सारा विश्व उनका मंदिर है, तुम्हें बस अपनी आँखें खुली रखने की जरूरत है।

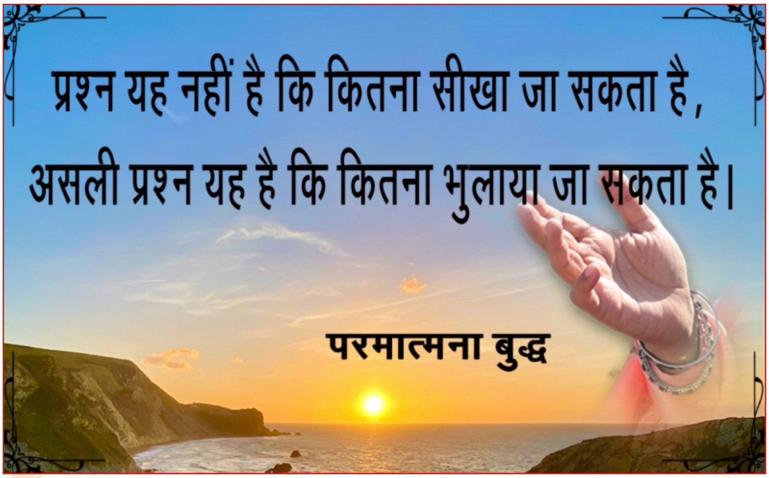

योद्धा: गर्भ में बच्चा रोता है और भगवान से कहता है कि मुझे यहाँ से बाहर निकाल। मैं पूरा जीवन तेरी भक्ति करूंगा। क्या यह वाक्य सही है?
भगवान: जिनको अपने बारे में कुछ नहीं पता वो मृत्यु से पहले और बाद के नक्शे हाथों में लिए घूमते हैं। ये केवल मूर्खतापूर्ण वक्तव्य है। भगवान ने इतना सुंदर जीवन दिया है और तुम्हारे मूर्ख धर्मगुरु उसी का तिरस्कार करने के लिए व्यर्थ ही जीवन की निंदा करते हैं।

योद्धा: अगर हमें खुदा मिल भी जाए तो हम उसे कैसे पहचानेंगे?
भगवान: जिस दिन तुम्हारे भीतर का सूर्य उगेगा उस दिन तुम स्वयं को भी पहचान लोगे और उस परमात्मा को भी पहचान लोगे। और देखोगे कि दोनों में तिल मात्र का भी भेद नहीं है। ***दोनों ही एक-दूसरे के कंधे पर चढ़े बैठे हैं।***

योद्धा: हम कौन सी प्रार्थना करें जिससे परमात्मा प्रसन्न हों?
भगवान: तुम्हारी सारी प्रार्थनाएँ व्यर्थ ही तो हैं। तुम प्रार्थना के नाम पर करते क्या हो? धन दे, मान दे, पद दे, प्रतिष्ठा दे। प्रार्थना नाम है प्रेम का! लेकिन भिखारियों ने तुम्हें भीख माँगना ही सिखा दिया। तुम्हें भिखारी ही बना दिया। कैसे करोगे तुम प्रार्थना?

योद्धा: हम कौन सा शास्त्र पढ़ें जिससे हमें भी धर्म का ज्ञान हो जाए, हम इनलाइटेंड हो जाएँ?
भगवान: शास्त्रों में पंक्तियों के बीच का खाली स्थान पढ़ो। यह जो पुस्तक तुम पढ़ रहे हो केवल इसके मुख्य पेज का पिछला वाला पेज पूरी तरह से एक-एक अक्षर पढ़ो। इनलाइटेंड एक क्षण में तुम हो सकते हो। केवल तुम्हारी प्रज्ञा प्रगाढ़ होनी चाहिए।

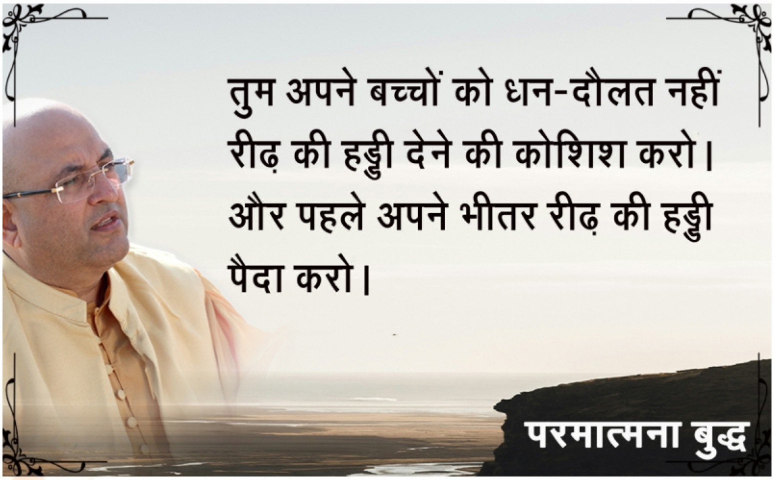

योद्धा: क्या मैं परमात्मा बन सकता हूँ?
भगवान: कहते हैं चिड़िया कभी बाज नहीं बन सकती। तुम मेरे साथ दस कदम चल कर तो देखो मैं तुम्हें पूरा-पूरा परमात्मा न बना दूँ तो कहना।

योद्धा: कौन सा धर्म उत्तम है?
भगवान: बीमारियाँ अलग-अलग होती हैं लेकिन स्वास्थ्य एक ही होता है। उसी प्रकार मूर्खता रूपी विचारधाराओं को तुमने धर्म का नाम दे रखा है वो धर्म नहीं है। धर्म एक ही होता है सत्य का बोध, स्वात्म का अनुभव हो जाना, तुम्हारे हृदय में संसार मात्र के लिए प्रेम हो जाना। और यह जो धर्मों को नाम दिए हैं। न तुमने हिन्दू-मुस्लिम, सिख-ईसाई आदि यह केवल बीमारियाँ मात्र हैं। इनका धर्म से कुछ भी लेना-देना नहीं है।

योद्धा: हमारे इस जीवन का क्या उद्देश्य है?
भगवान: तुम्हारे पास एक ही विकल्प था सदियों से। वह यह था कि तुम पुराने जन्मों-जन्मों के पापी हो और यह जीवन तुम्हें दुःख भोगने के लिए मिला है और मरने के बाद ही स्वर्ग या जन्नत में जाकर तुम सुखी हो सकते हो। आज हजारों वर्षों बाद मैं तुम्हारे सामने एक नया विकल्प खोल रहा हूँ कि यह जन्म तुम्हें सुख भोगने के लिए, आनंद से रहने के लिए, उत्सव मनाने के लिए मिला है। आनंद तुम्हारा स्वरूप है और तुम चाहो तो इसी जीवन को स्वर्ग बना लो। ***तुम ही परमात्मा हो और तुम्हारे अलावा कोई परमात्मा कहीं नहीं बैठा है।*** अब तुम्हारी जो इच्छा हो वही मानो! चाहे यहाँ दुःखी रहो और मरने के बाद स्वर्ग की कल्पना करो या मेरी बात मानकर आज ही सुखी हो जाओ।

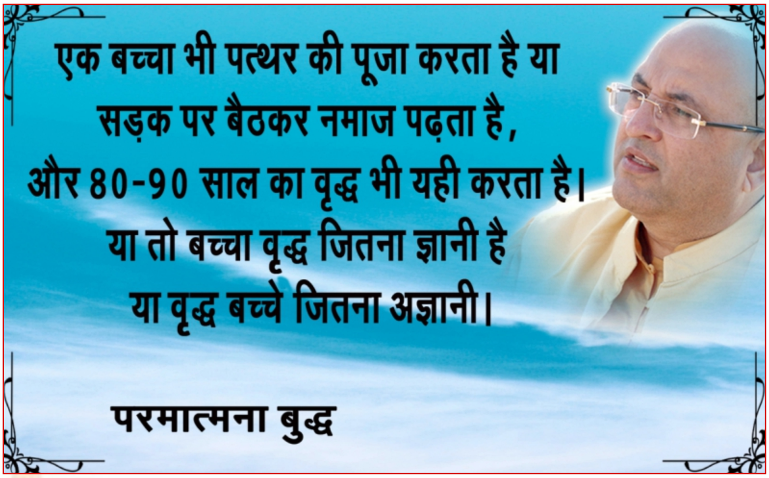

योद्धा: दुनिया कैसी होनी चाहिए?
भगवान: सोचो! अगर दुनिया भर के सारे बुद्धिजीवी मिलकर एक ऐसी दुनिया की संरचना करें जहाँ किसी भी देश की सीमा न हो, न जवान तैनात हों, न रक्षा के लिए जहाज या तोपें हों। और पूरी दुनिया में जो देश का सबसे बड़ा बजट रक्षा व्यय पर खर्च होता है वो धन लोगों की सेवा में लगाया जाए तो सोचो वो दुनिया बेहतर होगी या आज की दुनिया? मेरी दृष्टि में दुनिया को नेताओं की नहीं बुद्धिजीवी वर्ग की आवश्यकता है। अगर गूगल करो तो पता चलेगा कि पिछले 50 वर्षों में से दुनिया भर में देश की सीमाओं की रक्षा के नाम पर 49 वर्ष मनुष्य ने युद्ध में बिता दिए। क्या हम ऐसे समाज को धार्मिक कहेंगे? क्या जीजस, बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, नानक, कबीर ने ऐसा ही समाज बनाने की कल्पना की थी?

योद्धा: बुद्धत्व क्या है?
भगवान: बुद्धत्व एक प्रकार की समझ का नाम है जिसके प्राप्त होने के बाद केवल इतना पुनः स्मरण हो जाता है ***कि अब न कहीं जाना है और न कुछ पाना है।*** लेकिन ध्यान देना जिस दिन तुम्हें बुद्धत्व प्राप्त होगा उस दिन उसे पाने वाला नहीं बचेगा। क्योंकि तुम क्या हो? केवल एक माने हुए विचारों के, अहंकार के समूह! और जब यह अहंकार गिरेगा वहाँ कुछ भी न बचेगा। तुम भी नहीं।

योद्धा: क्या मैं मरने के बाद मुक्त हो सकता हूँ?
भगवान: जीवन में ही मुक्त हुआ जाता है मर कर नहीं। क्योंकि जो मर रहा है अगर वो बंधन में है तो मर कर भी बंधन में ही रहेगा। इसलिए अगर मुक्त होने की अभिलाषा है तो आज ही किसी मुक्त का हाथ पकड़ लो।

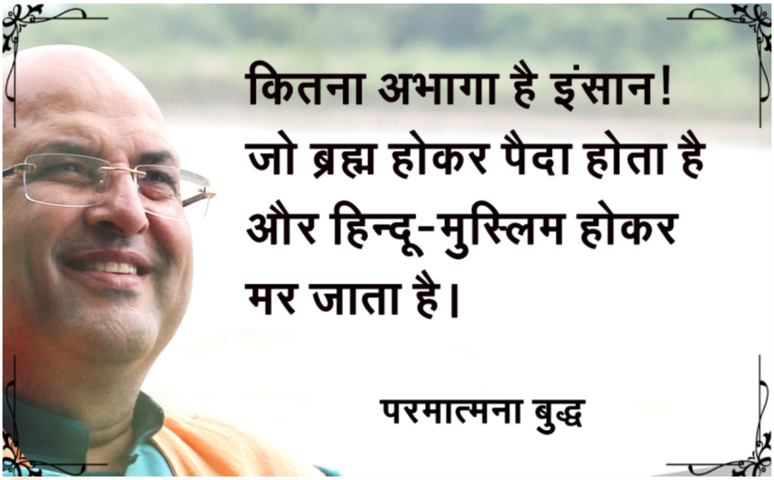

योद्धा: क्या हम परमात्मा को पा सकते हैं?
भगवान: परमात्मा, सत्य, खुदा, विराट, अल्लाह! इतना नज़दीक है कि वो तुम्हारे हाथों पर ही विराजमान है लेकिन तुम मुट्ठी बाँधना चाहते हो और वो छिटक जाता है। और जब तुम कुछ भी पकड़ने की आकांक्षा नहीं रखते तो वो वस्तु स्वाभाविक ही तुम्हारे पास होती है लेकिन जैसे ही तुम उस वस्तु को पकड़ने और उसके मालिक बनने की इच्छा व्यक्त करते हो वो वस्तु तुमसे हमेशा के लिए दूर चली जाती है। हाथ खोलो और देखो कि तुम्हारे हाथों पर प्रकाश विद्यमान है या नहीं? और अब मुट्ठी बंद करो और देखो प्रकाश गायब।

योद्धा: क्या तुम परमात्मा दिखा सकते हो?
भगवान: हाँ! तुम देखने वाले को खोज लाओ परमात्मा एक क्षण में दिखा दूँगा।

योद्धा: हमें कैसे ज्ञात होगा कि अब हमें वो मिल गया है?
भगवान: जब तक अपने ही कपड़े फाड़कर, चिल्लाकर और नाचकर कहने की इच्छा न हो कि तुमने उसे पा लिया है तब तक बिल्कुल मत मानना कि तुम्हें वो मिल गया है। अगर पहले ही घोषणा कर दी तो मानना वो हिन्दू-मुस्लिम होने की ही तरह झूठ ही होगी।

योद्धा: जब मौत निश्चित ही है तो जिंदगी से इतनी आसक्ति क्यों?
भगवान: तो क्या इसका मतलब यह मान लें कि पैदा होते ही बच्चे को अर्थी पर लिटा दें? गंगा को पता है सागर में जाकर अपने ही अस्तित्व को खोना पड़ेगा लेकिन सागर-मिलन की चाह अपनी मौत से भी नहीं घबराती।

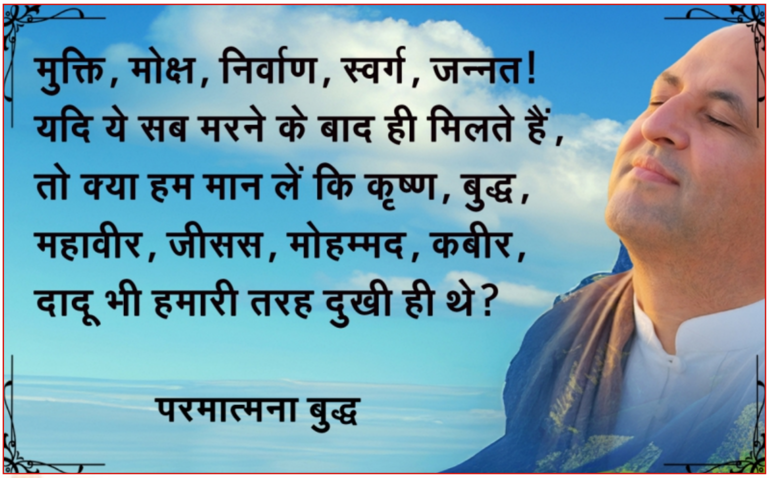

योद्धा: मुझे मुक्ति कब और कैसे मिलेगी?
भगवान: वो तो आज ही मिल सकती है लेकिन तुमने जो यह 'मुझे' की धारणा पकड़ रखी है उसे त्यागना पड़ेगा। क्योंकि जहाँ मुक्ति होगी वहाँ 'मुझे' कहने वाला नहीं होगा।

योद्धा: क्या हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई को एक-दूसरे से खतरा है?
भगवान: सोया हुआ व्यक्ति कब किसी की छाती पर पाँव रख दे क्या पता। सोए हुए मनुष्य से खतरा है।

योद्धा: क्या धर्म परिवर्तन से कोई लाभ होता है?
भगवान: हाँ! जब तुम एक पिंजरे से ऊब जाते हो तो दूसरा पिंजरा अच्छा लगता है। मुर्दे को कंधे पर उठाते समय लोग कंधे बदलते हैं न। लेकिन लाश का बोझ तो उतना ही रहता है कम थोड़े ही होता है।

योद्धा: कौन सा नाम जपें, किसकी पूजा करें जिससे हम सुखी हो जाएं?
भगवान: दुनिया का सबसे बड़ा झूठ यही है कि तुम्हें कोई दूसरा व्यक्ति, नाम, मंत्र या देवता सुखी करेगा।

योद्धा: गुरु शिष्य को कहां तक ले जाता है?
भगवान: गुरु कहीं भी नहीं ले जाता है और उंगली पकड़कर ले जाने वाला गुरु ही नहीं होता, वो पाखंडी तो बस उंगली पकड़कर यूँ ही घूमता रहता है। असली गुरु तो बस इशारा मात्र करता है। तैरना सिखाने वाला गुरु क्या करता है, केवल तुम्हें पानी में धक्का ही तो मारता है, तैरना तो तुम स्वयं ही सीख लेते हो। ***गुरु वो जो शिष्य को सभी से छुड़ा दे और अंत में स्वयं से भी मुक्त कर दे।***

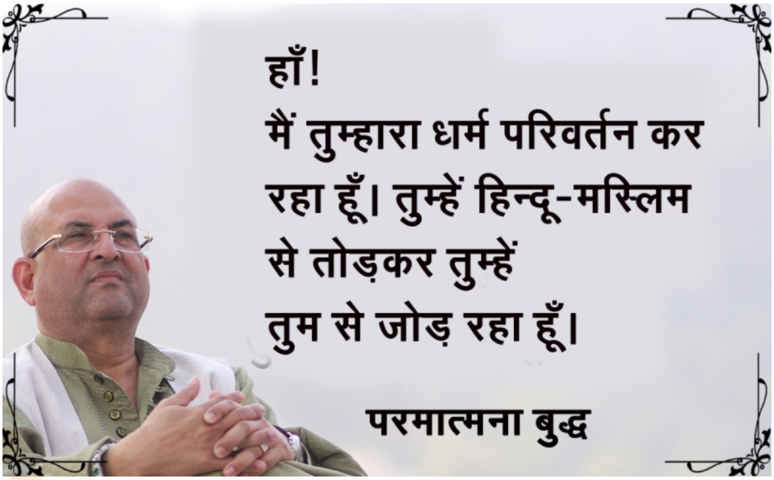

योद्धा: कौन सी प्रार्थना उत्तम है?
भगवान: अगर तुम्हारी आँखें नम हों, स्वयं के आनंद में हो तो उससे सुंदर कुछ भी नहीं। कोई प्रार्थना नहीं, कोई नमाज़ नहीं, कोई यज्ञ नहीं, कोई दान नहीं। उसे तुम्हारी नम आँखें क्षण भर में देख लेंगी। तुम्हारी निगाह झुकी तो हो गई प्रार्थना।

योद्धा: परमात्मा, खुदा ! आज क्यों नहीं दिखता?
भगवान: क्योंकि तुमने नकली परमात्मा गढ़े हैं। और तुम उसी नकली विचारधारा का चश्मा लगाकर उसे देखना चाहते हो। ***परमात्मा, खुदा, भगवान, अल्लाह! तो नग्न खड़ा है संसार में।*** और कहीं दूर खड़ा है ऐसा मत समझना। वो तो बिखरा पड़ा है रेत के कणों की भांति। तुम्हें देखना नहीं आ रहा है तो अपनी आँखें साफ करो। अपनी आँखों पर से हिन्दू-मुस्लिम के चश्मे हटाओ।

योद्धा: क्या हमें भी किसी बुद्ध की नकल करनी चाहिए और वैसा ही बनने की कोशिश करनी चाहिए?
भगवान: सृष्टि का एक भी पत्ता दूसरे के जैसा बनने की कोशिश नहीं करता और तुम दूसरा होना चाहते हो। तुम बस आँखें खोलो और तुम केवल तुम जैसे हो जाओ। पूरे अस्तित्व में एक जैसी दो वस्तुएँ कभी भी नहीं मिलेंगी जो परमात्मा की बनाई हुई होंगी और तुम बार-बार बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, जीजस, नानक बनने की चाह में अपना होना भी भूल जाते हो।

योद्धा: क्या बुद्ध पुरुषों के संग से कुछ लाभ होता है?
भगवान: जिस प्रकार एक जलती हुई मोमबत्ती से बिना जली मोमबत्ती भी जल सकती है उसी प्रकार बुद्ध पुरुषों के संग से अबुद्ध भी बुद्ध बन जाते हैं।

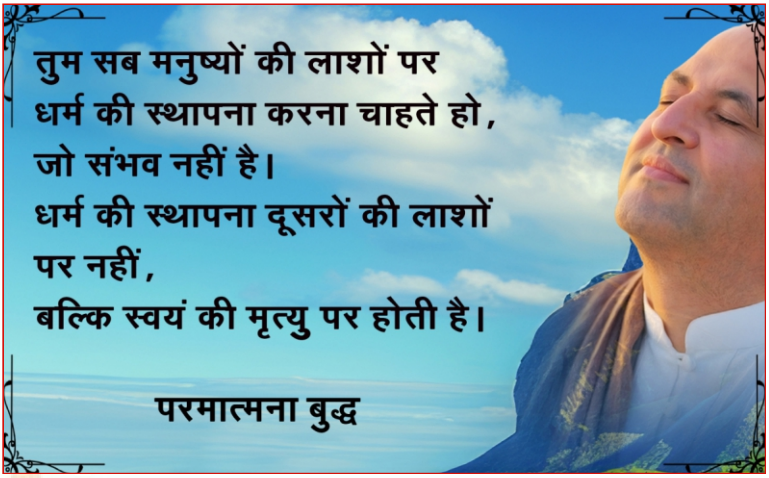

योद्धा: धर्म की परिणति तक पहुँचना क्या है?
भगवान: ***"तुम होना चाहते हो और धर्म मिटने की कला है"।*** अगर कुछ होना चाहते हो तो केवल हिन्दू-मुसलमान ही हो जाओ क्योंकि धर्म में तो तुम कहीं के न बचोगे। धर्म कुछ बनने का नाम नहीं, मिटने का दुस्साहस है। तुम मरो और देह बचे तभी तुम धर्म की परिणति तक पहुंच सकते हो। तुम अपने भीतर से हटो तो ही वो धर्म वहाँ विराजमान होगा।

योद्धा: हम परमात्मा को कैसे जान सकते हैं?
भगवान: तुम परमात्मा बनकर ही उसे जान सकते हो। बूंद सागर बनकर ही सागर को जान सकती है। तुम जिस दिन उसे जान लोगे उस दिन जानने वाला नहीं बचेगा। ***"मैं को खोकर ही तू को पाया जा सकता है"।***

योद्धा: परमात्मा का जन्म कब हुआ तथा कैसे हुआ?
भगवान: जिस दिन तू मरेगा उस दिन ही तेरा परमात्मा जन्मेगा। फिर जान लेना कि जन्म कब हुआ।

योद्धा: हम ब्रह्म को कैसे छू सकते हैं?
भगवान: जिस दिन बाँधने वाली मुट्ठी न होगी उस दिन सारा आकाश तुम्हारी मुट्ठी में होगा। खोलो अपनी हथेली को, देखो वहाँ प्रकाश बिखरा दिखेगा। अब मुट्ठी बंद करो, देखो प्रकाश छिटक गया। ***"मैं का अहंकार हटा दो वो पहले से ही तुम्हारे सिर चढ़ा बैठा है।"***

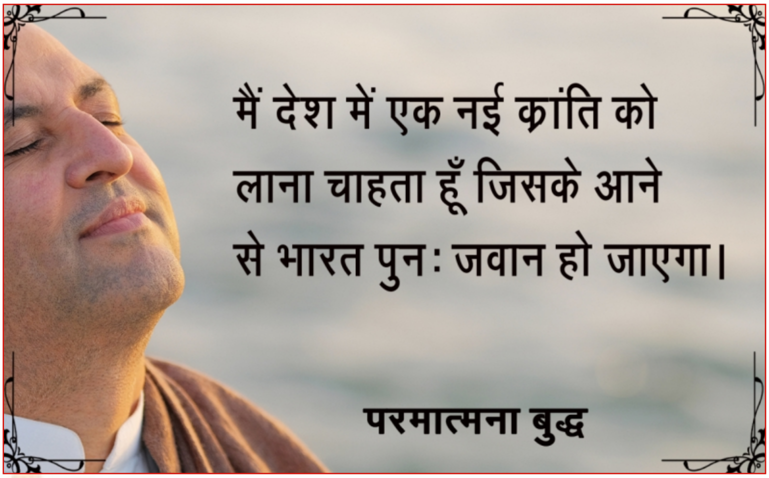

योद्धा: परमात्मा प्राप्ति में कौन बाधक है?
भगवान: परमात्मा प्राप्ति में केवल तुम ही बाधक हो। परमात्मा तुम्हारी मृत्यु पर तुरंत प्रकट होता है। लेकिन देह की मृत्यु पर नहीं! मैं की मृत्यु पर। तुम्हारा विसर्जन और उसका आगमन एक ही साथ घटता है। ***"मिटो तो पाओ"।*** तुम्हारा मरना हो जाए और उसका जन्मना हो जाए।

योद्धा: क्या शूद्र अछूत होता है?
भगवान: अछूत तो केवल परमात्मा है। तुम्हारे भेदभाव करने वाले समाज ने ये ठीकरा शूद्रों पर मढ़ दिया। अछूत यानी जिसे छुआ ही न जा सके। ***"यानी परमात्मा, खुदा अछूत है"।***

योद्धा: सत्संग से क्या कुछ लाभ होता है?
भगवान: बुद्धुओं का संग तुम्हें बुद्धू बनाता है और बुद्ध का संग बुद्ध बनाता है। बुद्ध संक्रामक रोगी होते हैं, उनके पास बहुत ही सोच-समझ कर जाना चाहिए। ***क्योंकि पागल के साथ बैठोगे तो तुम भी पागल ही बनोगे।***

योद्धा: क्या शरीर के साथ ही आत्मा भी मिल जाती है?
भगवान: शरीर माता-पिता से प्राप्त होता है लेकिन आत्मा की यात्रा तुम्हें स्वयं करनी होती है। झूठ हैं वो सारे वक्तव्य जो तुम्हें समझाते हैं कि आत्मा तुम्हें जन्म से ही मिल जाती है। अपनी पुस्तकों में संशोधन करो।

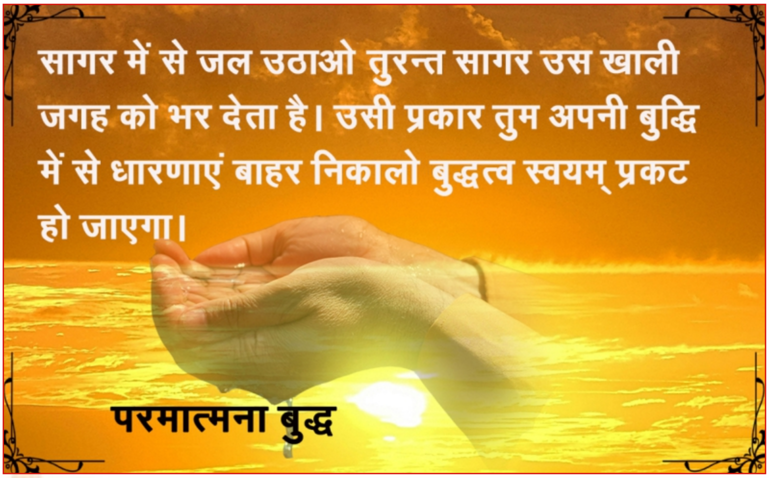

योद्धा: क्या धर्म गीता या कुरान से नहीं प्राप्त होता?
भगवान: धर्म के लिए अज्ञात में छलांग लगानी होती है। धार्मिक होना साहस का कार्य है। जिसे तुम लेकर पैदा होते हो वो धर्म नहीं है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन आदि 365 प्रकार के नाम धर्म के नहीं हैं। धर्म किसी भी पुस्तक से नहीं, जीवन को जी कर मिलता है।

योद्धा: संसार में सभी कुछ बढ़ रहा है लेकिन धर्म घट रहा है, क्यों?
भगवान: क्योंकि धर्म नासमझों के हाथ में आ गया है। ज्यादातर भूखे, नंगे, भिखमंगे, कामचोर प्रवृत्ति के लोग, आपराधिक प्रवृत्ति के व्यक्ति किसी भी धर्म का चोगा ओढ़ कर स्वांग रचाकर धर्म की बागडोर अपने हाथ में थाम लेते हैं और धर्म को गलत दिशा में ले जाते हैं। और ये भारत का दुर्भाग्य है। इसलिए ही भारत आज तक पिछड़ा हुआ है। अभी भी समय है अगर तुम सभी ने धर्म का सही अर्थ न समझा तो तुम सभी का जीवन इसी प्रकार दुःख में बीत जाएगा।

योद्धा: खुदा से मिलना कैसे संभव है?
भगवान: अपनी आत्मा की आग इतनी प्रज्वलित करो कि वहाँ उस आग के अलावा कुछ भी न बचे। बस वो शुद्ध आग ही तुम्हें परमात्मा से मिला देगी।

योद्धा: मृत्यु से कैसे बचा जा सकता है? हम कौन सा मंत्र जपें?
भगवान: तुम मौत खोजते हो मैं तुम्हें जीवन खोजना सिखाता हूँ। ***छोड़ो मौत का डर। मौत आए इससे पहले जीवन तो जी लो।***

योद्धा: कौन सा धर्म उत्तम है?
भगवान: मैं तुम्हारा कैदखाना नहीं बदलना चाहता हूँ। मैं तो तुम्हें कैदखानों से ही मुक्त करना चाहता हूँ। और जो धार्मिक सोच तुम्हें कैदखानों से ही मुक्त कर दे वही धर्म उत्तम है।

योद्धा: खुदा कैसा दिखता है?
भगवान: मैंने देखा है उसे! लेकिन फिर भी तुम्हें समझा न सकूँगा कैसा दिखता है। ***हाँ, लेकिन दिखा जरूर दूँगा।*** फिर तुम स्वयं जान लेना और देख लेना कि वह कैसा है।

योद्धा: तुम क्या प्रयास कर रहे हो?
भगवान: मैं असंभव के विरुद्ध लड़ रहा हूँ। देखते हैं कौन-कौन साथ खड़ा होता है। शायद संसार में सूर्योदय हो ही जाए। शायद तुम्हारी भी जन्मों-जन्मों की दौड़ मिट जाए।

योद्धा: तुम संसार को कैसा बनाना चाहते हो?
भगवान: मैं चाहता हूँ सभी प्रकार की धर्मान्धता का अंत हो। मैं चाहता हूँ कि धर्म के नाम पर जो तुमने कटुताओं को हृदय में दबा रखा है उसका अंत हो। मनुष्य आपस में प्रेम करे। सभी एक ही सिद्धांत को मानें। ***"प्रेम हमारा धर्म है, मनुष्य हमारी जाति"!***

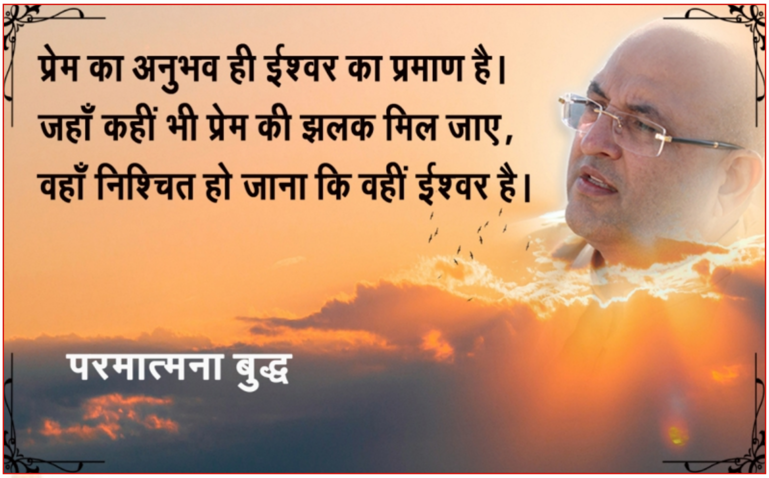

योद्धा: क्या धर्म दिया या लिया जा सकता है?

भगवान: धर्म को दिया जा सकता है लेकिन शर्त यह है कि वो तुम्हारे पास होना भी चाहिए। लेकिन वैसे नहीं जैसे तुम हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई बना देते हो। धर्म तो एक आग है जो जलाई जाती है स्वयं के भीतर। अगर तुम्हें भी जलानी है तो उससे थोड़ी-सी आग ले आओ जिसमें ये आग जल रही हो। लेकिन ध्यान से! धर्म मिलने के बाद धर्म ही बचता है। तुम न बचोगे।

योद्धा: तुम कैसा धर्म लाना चाहते हो?

भगवान: मैं एक सार्वभौमिक धर्म को इस दुनिया में लाना चाहता हूँ जिसमें हिंदुओं की-सी सहनशीलता हो, इस्लाम-सा भाईचारा हो, ईसाइयों की-सी दया भावना हो, बुद्ध की करुणा हो तथा महावीर की अहिंसा हो। आज समाज की मांग है ऐसा धर्म। अगर हम पृथ्वी को, आने वाले समाज को जीता हुआ, पनपता हुआ, खुशहाल देखना चाहते हैं तो यह अति आवश्यक है। बस ऐसे ही गुणों से भरपूर होना चाहिए धर्म।

योद्धा: अमृत क्या है?

भगवान: मैं जो तुम्हें पिला रहा हूँ उसे कंठ तक पीते जाओ। वही अमृत है जो तुम्हें जन्म-मरण से मुक्त कर देगा। और बाकी तुम्हारी किताबों में जो अमृत की कथा है वो सब झूठ है। बच्चों की मीठी गोली है।

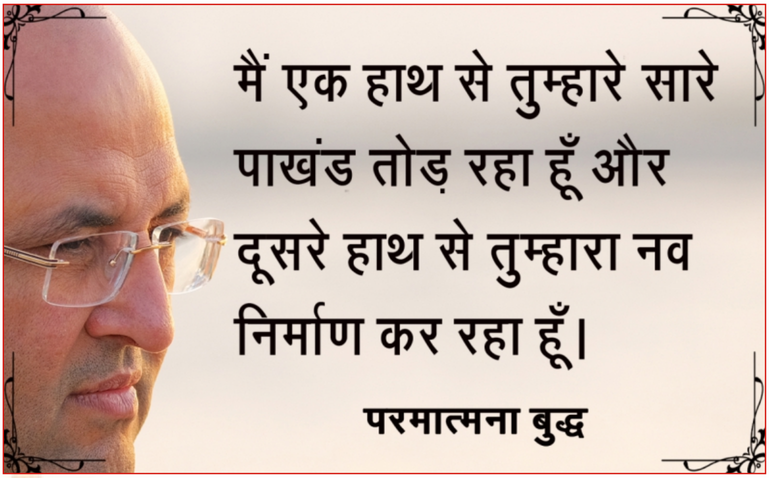

योद्धा: पुराने धर्मों में गलत क्या है?
भगवान: कितना बड़ा परिवर्तन किया होगा तुम्हारे अवचेतन मन में कि जब तुम एकदम जीवन खोजना छोड़ मौत खोजने लग जाते हो धर्म के नाम पर। और इससे भी ज्यादा गलत कुछ हो सकता है क्या? और तुम्हारे धर्मों में फेरबदल नहीं उन्हें उखाड़ फेंकने की आवश्यकता है। ताकि जीवन का सकारात्मक धर्म तुम्हें दिया जा सके।

योद्धा: क्या किसी मंदिर की मूर्ति गलत है?
भगवान: अगर परमात्मा की बनाई हुई मूर्ति में ही तुम्हें कुछ नहीं दिखता तो इंसान की बनाई मूर्ति में तुम्हें ईश्वर कैसे दिख सकता है? तुम केवल दिखावे के ही धार्मिक हो। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन! सभी तो किसी न किसी मूरत को ही पूज रहे हैं। तो इन मूर्तियों को पूजता हुआ संसार क्या तुम्हें धार्मिक दिखता है? क्या तुम धार्मिक हो?

योद्धा: सही में ब्राह्मण कौन है? क्या हिंदू जाति वाला नहीं?
भगवान: ब्राह्मण होना अलग है और पंडित होना अलग। ब्रह्मज्ञानी ही ब्राह्मण कहलाने योग्य होता है। लेकिन ध्यान देना ब्रह्मज्ञानी हिंदू या मुस्लिम नहीं होता। ब्राह्मण यानी जो सभी में ब्रह्म को देखे। ब्रह्म और खुदा ये वो शब्द हैं जिनकी ना तो कोई तस्वीर है और ना ही जिसका कोई आकार है। या यूँ कहें कि ये वो है जिसके ही सारे आकार हैं।

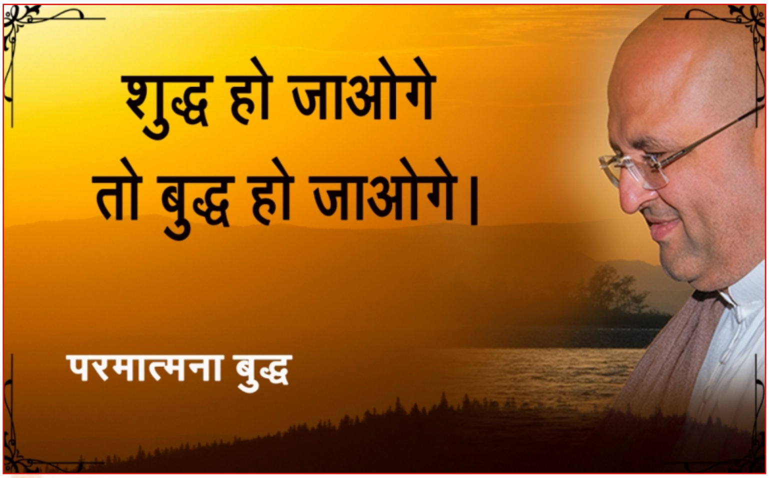

योद्धा: क्या धर्म बदलने से कोई लाभ होगा?

भगवान: तुम में से किसी को भी धर्म परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं है धर्म बदलकर तुम कुछ भी न पाओगे। मुसलमान आरती गाए तो तुम्हें क्या लगता है उसे राम मिल जाएंगे? नहीं! उसी प्रकार हिंदू अगर नमाज़ पढ़े तो तुम्हें क्या लगता है उसे अल्लाह मिल जाएंगे? नहीं! हमें धर्म नहीं बदलना! बल्कि एक-दूसरे की आत्मा को अपने भीतर समाहित करना है तभी सच्चे अर्थों में हम धार्मिक हो सकते हैं।

योद्धा: क्या जीवन दुःख है?

भगवान: तुम्हें हमेशा से ही यह समझाया गया है कि यहाँ इस धरा पर बार-बार आना ठीक नहीं है। जीवन दुःख है। इसी कारण तुम जीवन से घृणा करने लग गए। जिस दिन मनुष्य स्वयं से घृणा आरंभ कर दे तो समझ लेना वह बहुत नीचे गिर चुका है, समझ लेना वो सद्‌मार्ग पर नहीं किसी कुमार्ग पर है। किसी अज्ञान ने, किसी अंधविश्वास ने उसे आ घेरा है। ***जीवन दुःख नहीं जीवन तो एक संगीत है, उत्सव है, आनंद है।*** तुम्हें जीना ही नहीं आया।

योद्धा: हमें कुछ भी नया क्यों अपनाना चाहिए?

भगवान: आज वो समय आ गया है कि आप पुनः स्वयं पर दृष्टि दौड़ाएं और सोचें अपने बारे में कि क्या अभी भी आपको धर्मभीरु बनकर रहना है, समाज की रूढ़िवादी विचारधारा को ही ढोना है या उठ खड़े होकर सत्य धर्म की नींव पर एक इमारत अपनी भी बनानी है। अगर आप आज भी नहीं जाग पाए तो न जाने फिर ये

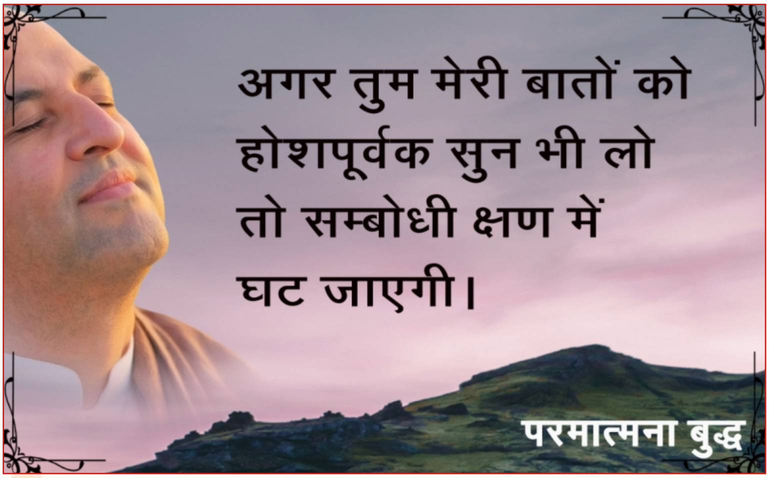

अवसर कब, कितने जन्मों बाद तुम्हें प्राप्त हो। कितने जन्मों बाद मैंने इसलिए कहा कि यह बात बिल्कुल सत्य है कि तुम पुनः आओगे और मनुष्य बनकर ही आओगे। नाम अलग होगा, जात अलग होगी लेकिन तुम ही होंगे। अगर तुम्हारे भीतर ज़रा-सी भी प्यास है उसकी, तो जरूर आओगे। फिर तुम्हें कोई बुद्ध मिले या न मिले। इसलिए आज ही धार्मिक हो जाओ, आज ही जाग जाओ।

योद्धा: आज मुख्य चिंता क्या है?
भगवान: आज के समय में अगर कुछ भी चिंता करने योग्य है तो वो यह है कि हमारा देश धर्म के क्षेत्र में अग्रणी होते हुए भी धर्म के पतन का कारण बन रहा है। और उसका एक ही कारण है कि धर्मगुरुओं ने धर्म को पहचानना ही छोड़ दिया है और धर्म को हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई की कन्दराओं में कैद कर रखा है। अच्छा होता कि सभी धर्म गुरु मिलकर लोगों को समझाते कि धर्म का मतलब प्रेम से होता है न कि हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई से। लेकिन ऐसा समझाया तो उनकी दुकान बंद हो जाएगी। ***लोग धर्म के नाम पर लड़ते रहें इसमें धर्म गुरु का और राजनेताओं का लाभ है।***

योद्धा: धर्म या जीवन! दोनों में से क्या आवश्यक है?
भगवान: एक जगह गोलियाँ चलीं, चार व्यक्ति मरे। पोस्टमार्टम हुआ, रिपोर्ट निम्न प्रकार से आई—पहले के भीतर से आवाज आई राम, दूसरे के भीतर से आवाज आई अल्लाह, तीसरे के भीतर से आवाज आई बुद्धत्व और चौथे के भीतर से आवाज आई रोटी। आगे अगर तुम समझदार होगे तो पूरा समझ ही जाओगे।

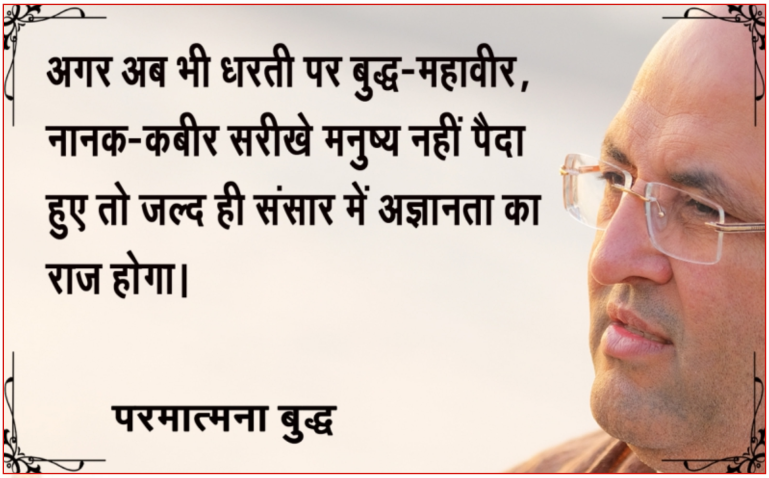

योद्धा: हमारा देश कब उन्नत होगा?
भगवान: अगर कुछ बुद्धिजीवी लोग सामने आएँ और वो मिलकर लोगों को समझाएँ कि धर्म यह हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई नहीं है जो तुम समझ रहे हो। यह सभी पाखंड है तो मैं मानता हूँ कि निश्चित ही एक क्रांति का जन्म होगा। और वही क्रांति देश को सही मार्ग पर ले जाएगी। आज भारत में मंदिर या मस्जिद बनाने की आवश्यकता नहीं है, एक क्रांति की आवश्यकता है। ये जो तुम दीपावली के नाम पर दिए जला रहे हो या हज के नाम पर स्वयं को गुमराह कर रहे हो, ये तुम दूसरे को नहीं स्वयं को ही धोखा दे रहे हो।

योद्धा: धार्मिक कट्टरता से क्या हानि होती है?
भगवान: अगर हम चाहते हैं कि हमारी आने वाली पीढ़ी एक अच्छे समाज में रहे और सुखी रहे तो हम सभी को यह सोच बदलनी होगी कि हिंदू सबसे पुराना धर्म है और एक दिन पूरी दुनिया हिंदू हो जाएगी या इस्लाम भाईचारे का धर्म है और दुनिया को इस्लामिक होना चाहिए या मिशनरी सेवा भाव का धर्म है तो दुनिया क्रिश्चन होनी चाहिए। नहीं! हिंदू से सहिष्णुता, इस्लाम से भाईचारा और क्रिश्चन से सेवा, बोध से करुणा, जैन से अहिंसा आदि गुणों को लेकर ही एक नया समाज आगे बढ़ सकता है।

योद्धा: आज धर्म क्या हो गया है?
भगवान: आज धर्म केवल भ्रमात्मक हो चुका है। आज धर्म केवल पुरानी धार्मिक मान्यताएँ, सिद्धांत, रूढ़िवादी परंपरा, विचारधारा और सोए-सोए अनुष्ठान ही होकर रह गया है और तुम सोचते हो इसके दम पर कोई भी धर्म जीवित रह सकता है? नहीं! यह तुम्हारी भूल है। धर्म को जीवित करने के लिए किसी को तो अपने प्राण फूंकने पड़ेंगे इसमें। तुम उठो और आगे बढ़ो और पुनः इसे जीवित करो।

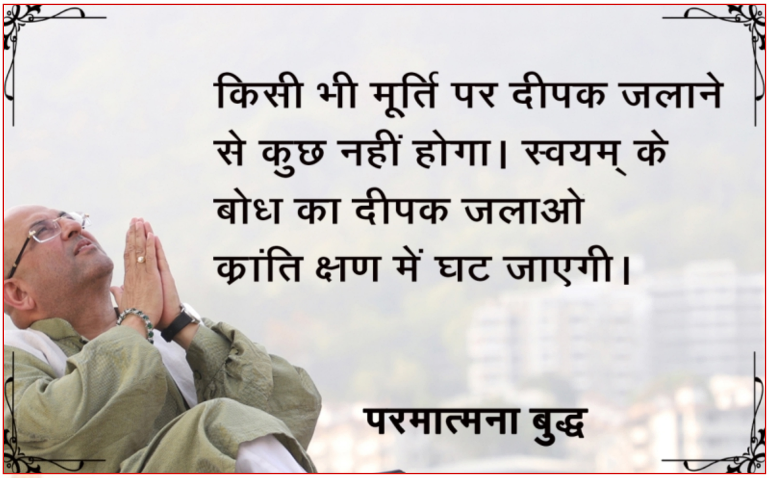

योद्धा: धर्म की अनुभूति से क्या मतलब है?
भगवान: जब तक तुम्हारा धर्म तुम्हें ईश्वर की अनुभूति न करा दे वो बेकार का धर्म है फिर चाहे तुम मंदिरों में नाचो, दिन-रात कथाएँ सुनो, पाँचों समय नमाज़ पढ़ो या प्रत्येक रविवार अपने-अपने धर्म स्थलों में जाओ। ***"वो अल्लाह ज़र्रे-ज़र्रे में रसा-बसा नज़र आना चाहिए"।***

योद्धा: क्या गीता या कुरान पढ़ना उचित नहीं है?
भगवान: जो केवल पुस्तकों को ज्ञान के लिए पढ़ता है वो उस मजदूर की भाँति है जो दिन-रात चीनी की बोरियों को ढोता है पर जिसने कभी भी चीनी की मिठास को नहीं जाना। धर्म तो एक स्वाद है जो चखने पर ही मिलता है।

योद्धा: सोए और जागे में क्या भेद है?
भगवान: जिस दिन धर्म और अंधविश्वास में भेद पता चल जाएगा उस दिन तुम सोए और जागे का भेद भी जान जाओगे।

योद्धा: क्या भगवान नहीं है?
भगवान: मैंने कब कहा कि भगवान नहीं है। मैं तो बार-बार समझा रहा हूँ कि मनुष्य ही भगवान है।

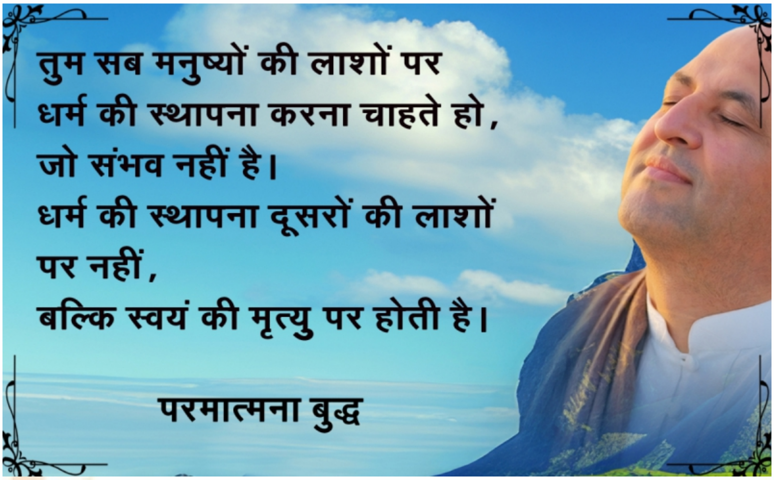

योद्धा: परमात्मा को कहाँ खोजें?

भगवान: परमात्मा मंदिर, मस्जिद, गिरजे, गुरुद्वारे में न मिलेगा। लेकिन जिस दिन वो मिल जाएगा उस दिन मंदिर, मस्जिद, गिरजे, गुरुद्वारे में भी तुम उसे देख लोगे। फिर तुम राह में पड़े अनगढ़ पत्थरों में भी उसके पदचिह्न खोज लोगे। जिस दिन वो मिल जाता है फिर कौन परवाह करता है संध्या की या नहीं, नमाज़ पढ़ी या नहीं। जब भीतर मिलन चलता रहता है तो कैसी शिष्टता? और उसे खोजने के लिए बाहर मत भागो केवल मरो। यही विधि है।

योद्धा: आज के कथा वक्ता क्या धार्मिक नहीं हैं?

भगवान: कैसे धार्मिक बनना चाहते हो तुम? कि लोग तुम्हें धार्मिक समझें, तुम पर भरोसा करें। ताकि तुम उन्हें धर्म के नाम पर लूट सको। बुद्ध तुम्हें कभी भी धार्मिक चिह्नों से सुसज्जित नहीं मिलेंगे और बुद्धू रोज सजे-सवरे ही मिलेंगे।

योद्धा: क्या धर्म की रक्षा करना सही नहीं है?

भगवान: जिस प्रकार अंडे के भीतर रहने वाला चूजा अंडे के खोल को ही बचाना चाहता है उसी प्रकार सोया-सोया व्यक्ति केवल तथाकथित धर्मों को ही बचाने की बात करता रहता है। वह समझ ही नहीं पाता कि उसके बाहर संपूर्ण ब्रह्मांड, पूर्ण अस्तित्व विद्यमान है। और विराट, परमात्मा, अस्तित्व किसी भी दायरे के भीतर नहीं आता। इसलिए सारे अंडे फोड़ दो। फिर जो बचेगा वह प्रेम ही धर्म है।

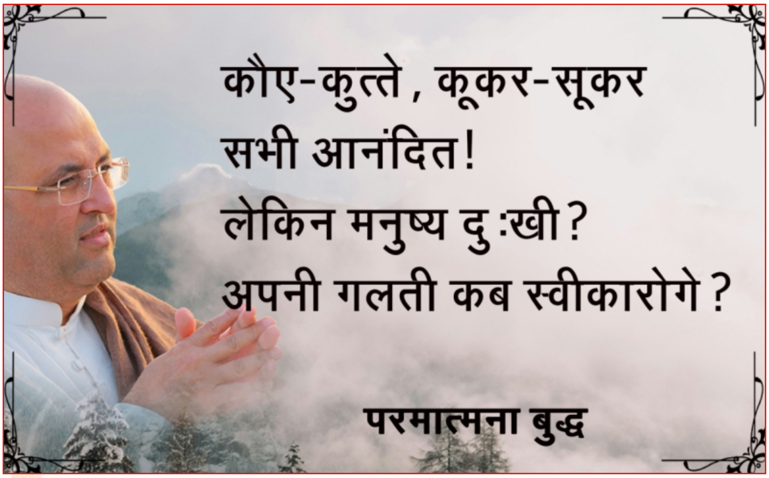

योद्धा: कौन सा मार्ग सही है और मंजिल तक पहुँचाता है?
भगवान: उस अस्तित्व को पाने का मार्ग ही नहीं है। तुम्हें मार्गों से हटकर चलना भी नहीं है केवल बैठना भर है और यही ध्यान है। परमात्मा को पाने की सभी यात्राएँ तुम्हें उससे दूर ही ले जाती हैं। केवल स्वयं की ओर घूमो! तुम्हें मंजिल वहीं मिलेगी।

योद्धा: परमात्मा की विराटता का हमें कुछ भी अनुभव क्यों नहीं हो पाता?
भगवान: घर के भीतर से आकाश देखोगे तो आकाश 5-7 फीट का ही दिखेगा क्योंकि खिड़की ही इतनी है। अगर उसकी विराटता देखनी है तो खिड़की से देखना बंद करो और बाहर निकलो। ऐसे ही परमात्मा की विराटता देखनी है तो इन हिंदू-मुस्लिम रूपी गड्ढों से बाहर निकलो। ***चारों तरफ उसी का हुस्न बिखरा पड़ा है। परमात्मा, खुदा, अल्लाह नग्न खड़ा है, तुम्हें देखना ही नहीं आ रहा।*** क्योंकि उल्टे धर्मों के चश्मे चढ़ाए बैठे हो तुम। पुरानी धारणाओं को त्यागो।

योद्धा: क्या संसार में जो साधु-संन्यासी दिखते हैं, उनको परमात्मा मिल चुका है?
भगवान: वो तुम्हें उनके चेहरे से ही पता चल सकता है। क्योंकि जिसको परमात्मा मिल जाता है, वह स्वयं में ही पूर्ण हो जाता है। ***परमात्मा मिलता नहीं है, परमात्मा हुआ जाता है।*** और जो परमात्मा ही हो जाता है, वो फिर मंदिर मस्जिद में उसे खोजने क्यों जायेगा?

योद्धा: काबा या काशी में जाने से क्या लाभ होता है?
भगवान: तुम व्यर्थ में ही काबा–काशी भटक रहे हो। यह क्या कम आनन्द की बात है कि तुम हो और जीवित हो! अभी इससे और क्या लाभ चाहिए तुम्हें?

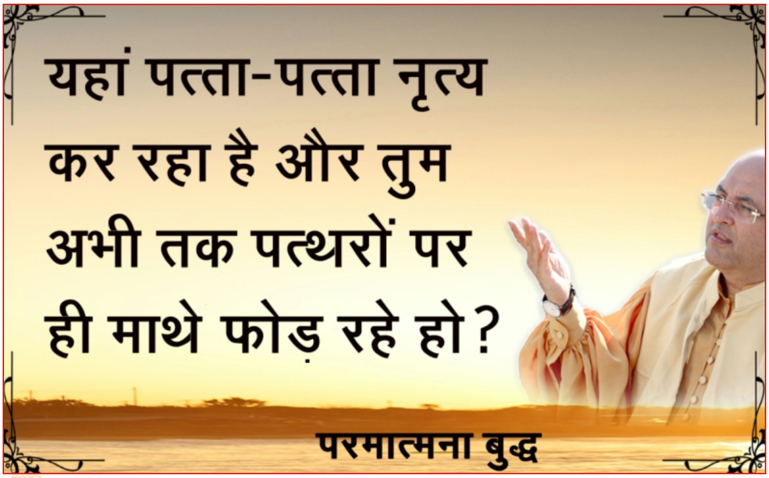

योद्धा: क्या संसार में दिखाई देने वाले धर्म के कारण उपद्रव है ?
भगवान: अज्ञानता उपद्रव लाती है, ज्ञान नहीं। अभी तुमने आधा-अधूरा ज्ञान जाना है, वही उपद्रव का कारण है। मैं तुम्हें पूर्णता की ओर ले जा रहा हूँ — कि ***तुम ही ईश्वर हो, तुम ही परमात्मा हो, तुम ही खुदा हो।*** यह अनुभव हो जायेगा तो सारा उपद्रव तुम्हारे भीतर से मिट जाएगा।

योद्धा: क्या मंदिर–मस्जिद की रक्षा करना हमारा कर्तव्य नहीं है?
भगवान: जिसे तत्त्वज्ञान हो गया, वह ईंट–पत्थर के मंदिर–मस्जिद की चिंता नहीं करता। उसके लिए तो सारा संसार ही उसका मंदिर है, सारा जहाँ उसकी मस्जिद है। ***उसे तो हर धड़कन में वही खुदा की शराब उतरती दिखती है।***

योद्धा: क्या संन्यासी के वस्त्र धारण करने से परमात्मा प्राप्ति शीघ्र हो सकती है?
भगवान: पहले यह समझो कि परमात्मा क्या है। और जब यह समझ में आ जाये, तो स्वयं ही समझ आ जाएगा कि वह ***बोध से, प्रज्ञा से मिलता है न कि वस्त्र बदलने से।***

योद्धा: हिन्दुओं में जो नागा संन्यास है, उसका क्या महत्त्व है?
भगवान: सरकारें भी चाहती हैं कि तुम किसी भी तरह की मूर्खता में पड़े रहो और प्रणाली आसानी से चलती रहे। तुम नागा होकर पहाड़ों में घूमो या बुर्का पहनकर कॉलेजों में दिखावा करो। यह केवल तुम्हारी मूर्खता को दर्शाता है। धर्म भीतर की आत्मा बदलने का नाम है, न कि बाहर के रूप बदलने का।

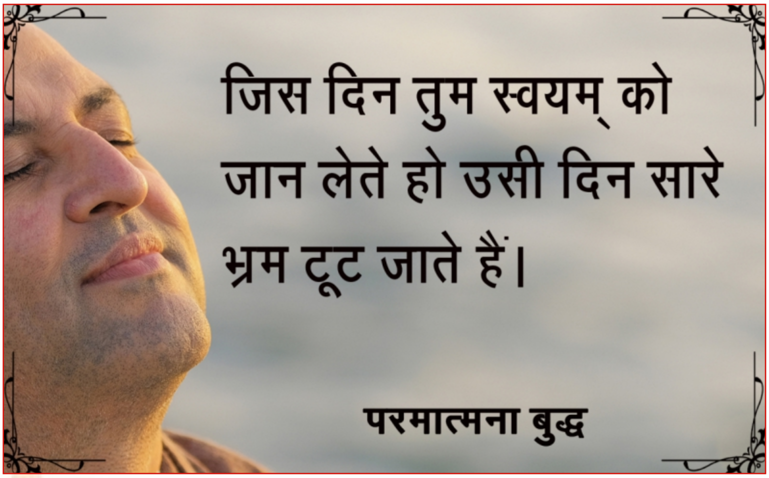

योद्धा: मुक्ति के लिए क्या आवश्यक है — दान, जप, तप, व्रत?
भगवान: तुम कुछ भी करो, ***ज्ञान के बिना मुक्ति घटित नहीं होती।*** लेकिन ज्ञान का मतलब किताबें रटना मत समझ लेना। पुस्तकों से कब किसे ज्ञान हुआ है? दान, जप, तप, व्रत—सब आसान हैं, पर उनसे कुछ नहीं होगा। यदि मुक्ति का स्वाद चखना है तो इन आडम्बरों को छोड़ दो।

योद्धा: आखिर मनुष्यों को यह भ्रम कैसे हुआ कि वह बंधन में है, मुक्त नहीं है?
भगवान: तुम्हारे मूर्खतापूर्ण शास्त्रों के कारण। यदि WHO यह घोषणा कर दे कि हवा में कोई वायरस है, तो आधी दुनिया अगले दिन पॉज़िटिव निकल आएगी। यदि तुम्हारी छाती पर ये धर्म–ग्रंथ न रखे होते, तो तुम्हें यह भ्रम ही नहीं होता।

योद्धा: हमें यह अनुभव क्यों नहीं होता कि जीवन ही खुदा है?
भगवान: तुम छोड़ो खुद को। मछली को भी पूरा जीवन यह नहीं पता चलता कि जहाँ वह है, वही समुद्र है। उसे दो मिनट किनारे रख दो — तत्क्षण सागर का बोध हो जाएगा। तुम भी 10–20 दिन रोज़ एक घंटा श्मशान में बैठो, चाहे सिर्फ़ बैठो, अनुभव घटेगा। दीपक की लौ रात में ही दिखती है, दोपहर 12 बजे कहाँ दिखती है?

योद्धा: क्या किसी शास्त्र से बोध मिल सकता है?
भगवान: नहीं। तुम्हारे तथाकथित 365 धर्मों के किसी भी शास्त्र से नहीं। जो खुद अलमारी में बंद पड़ा रहे, वह तुम्हें कैसे खोलेगा? ***जिस दिन तुम स्वयं को पढ़ लोगे, उसी क्षण उस खुदा को जान लोगे।***

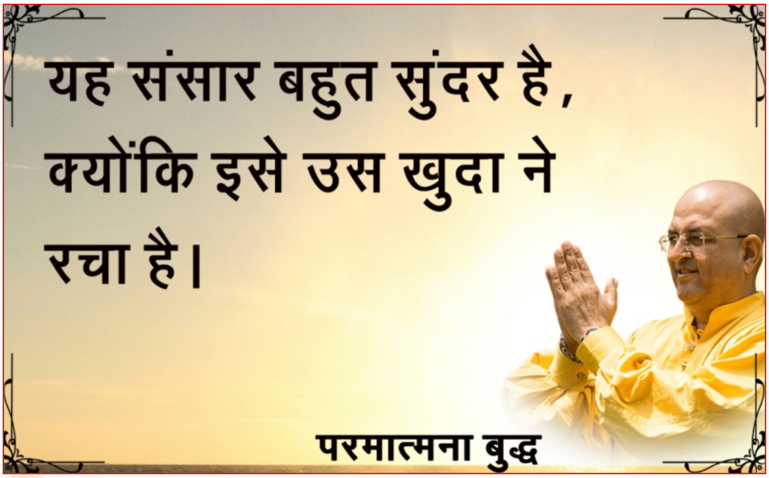

योद्धा: इस बात का क्या प्रमाण है कि तुम जो कहते हो कि समाज धार्मिक नहीं है, वह सही है?
भगवान: यदि घर में अँधेरा हो, तो यह मत मान लेना कि दीपक जल रहा होगा। दीपक का चित्र होगा। वास्तव में दीपक जले, तो अँधेरा कैसे रहेगा?

योद्धा: राम नाम की किताबें बनाते हैं लोग, क्या वह ठीक नहीं?
भगवान: नहीं। इससे तो यह सिद्ध हुआ कि तुम करोड़ों बार नाम ले चुके, पर कुछ भी नहीं हुआ। जो अब तक के करोड़ों से नहीं हुआ, वह आगे के करोड़ों से कैसे होगा?

योद्धा: धर्म कहता है कि जीवन हमें भगवान भक्ति के लिए मिला है; और तुम कहते हो यह गलत है?
भगवान: खरगोश ने सौ पैरों वाले जीव से पूछा कि तुम पहले कौन-सा पैर उठाते हो। बस, फिर वह कभी चल ही नहीं पाया। यही हुआ है तुम्हारे साथ। जीवन जीने की जगह तुम उसके तरीके खोजने में उलझ गए।

योद्धा: हम जीवन में क्या पाएँ?
भगवान: तुम जीवन खोज रहे हो और जीवन तुम्हें खोज रहा है। पर तुम भविष्य में हो! मेल ही नहीं हो पा रहा। यदि इसी तरह सपनों में खोए रहे, तो खाली आए थे, खाली ही लौट जाओगे।

योद्धा: क्या सही और क्या गलत?
भगवान: कुछ नहीं। न पाप, न पुण्य, न सही, न गलत ***अहंकार छोड़कर बहो।***

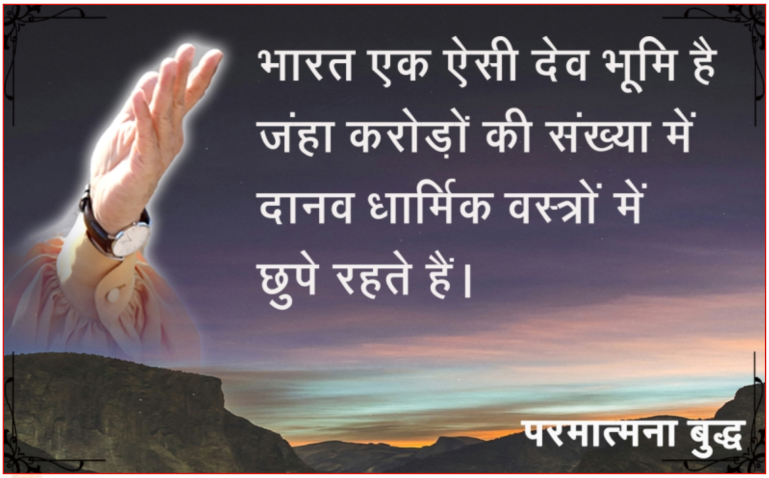

योद्धा: संसार को कौन चला रहा है?
भगवान: संसार जीवित है और जीवित वस्तुएँ स्वयं चलती हैं। मृत को उठाना पड़ता है। जैसे तुम्हारे शास्त्र उन्हें तुम उठाते फिरते हो। जीवित तो स्वयं उड़ जाते हैं।

योद्धा: किसी के मरने पर यह क्यों कहते हैं कि वह भगवान को प्यारा हो गया?
भगवान: मूढ़ों ने लिखा है, हस्ताक्षर तो अपने ही डालेंगे। भगवान का मतलब जीवन है। जीवित रहते जीवन से प्रेम नहीं किया, और मरते ही कह दिया कि भगवान को प्यारा हो गया!

योद्धा: जीवन में जागरण कैसे होता है?
भगवान: जीवन में आई परिस्थितियों का सामना करके। मंत्रों से नहीं अनुभव से।

योद्धा: आत्मज्ञान कब होगा?
भगवान: आत्मज्ञान कोई अर्जित किया हुआ ज्ञान नहीं। यह प्रक्रिया है, जो निरंतर घटती रहती है। ज्ञानी कभी नहीं कहता कि उसे सब ज्ञात है, क्योंकि वह देखता है कि ज्ञान प्रतिक्षण नया जन्म ले रहा है।

योद्धा: क्या पुण्य की कामना सुख देती है?
भगवान: कामना का स्वभाव ही दुःख है—चाहे वह धन की हो या धर्म की।

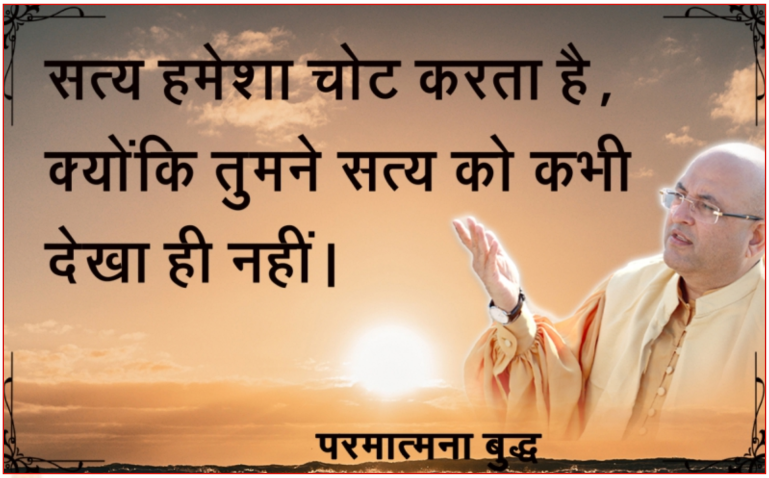

योद्धाः जन्म और मृत्यु के बाद भी जीवन है?
भगवानः तुम समझते हो जीवन जन्म से मिलता है और मृत्यु पर समाप्त हो जाता है। नहीं। जीवन की धारा में जन्म और मृत्यु के दृश्य घटते हैं। ***जीवन अनन्त है।***

योद्धाः क्या भगवान हमें सुखी करता है?
भगवानः पिछले 300–400 वर्षों के वैज्ञानिक न हों तो आज भी मानवता जंगल युग में लौट जाए। अब सोचो सुख किससे मिला? और भगवान का अर्थ है जीवन। तुम जीवित हो यही तो सुख है।

योद्धाः हिन्दू–मुस्लिम धर्म के महात्माओं का समाज में क्या योगदान रहा?
भगवानः यदि 1975 के बाद के सभी संत–महात्माओं को हटाकर देश का मूल्यांकन करो, तो ठीक-ठीक समझ आ जाएगा कि उनका योगदान कैसा रहा और किस दिशा में।

योद्धाः क्या धर्म की जो परम्पराएं हम सभी ने संजोई हैं वो गलत हैं?
भगवानः ग्रीक के लोगों ने भी परम्पराएं संजोई थीं जिनको आज हम केवल इस नज़र से देखते हैं कि इतने बड़े पत्थर उन्होंने ऊपर कैसे चढ़ाए? लेकिन ज़रा सोचो क्या ममी बनाना किसी भी कारण से लाभदायक था? और धर्म के नाम पर तुम भी कर क्या रहे हो? केवल ममी ही बना रहे हो। वो ज़िन्दा को मर जाने के बाद ममी बनाते थे और तुम पत्थरों की ममी बना रहे हो। उनकी ममी को सही-सलामत रखने के लिए मसाला लगाना होता था और तुम्हारी ममी को सही दिखाने के लिए तुम्हें चन्दन लगाना होता है।

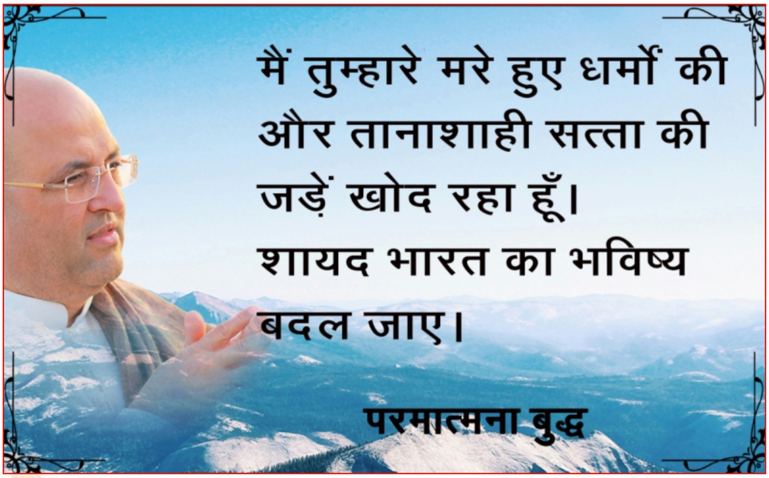

योद्धा: कल्पवृक्ष क्या कर सकता है?
भगवान: कल्पवृक्ष किसी आलसी महात्मा की सोच की पैदाइश है। यह एक आलसी आदमी को नये-नये स्वप्न दिखाता है और उसे धोखे में रखता है कि एक न एक दिन तुम्हारे स्वप्न ज़रूर पूरे होंगे।

योद्धा: परमात्मा का दीदार कैसे होगा?
भगवान: जब परमात्मा की भी चाह न बचे। खुदा, परमात्मा कोई चापलूसी पसंद व्यक्ति नहीं है जिसकी तुम क़ीमत लगा रहे हो कि इतना जप, तप हो गया, इतनी नमाज़ पढ़ ली, अब कब मिलेगा। खुदा, परमात्मा तो एक सुख की अनुभूति का स्तर है और ये सुख की अनुभूति होती ही तब है जब कोई भी चाह न बचे।

योद्धा: परमात्मा को खोजने कहाँ जाएं?
भगवान: परमात्मा तुम हो! यही अड़चन है कि तुम उसे ढूँढ़ने दर-दर भटक रहे हो लेकिन अपनी जेब नहीं टटोल रहे हो। कहीं नहीं जाना केवल भीतर आना है।

योद्धा: जीवन का असली अर्थ क्या है?
भगवान: केवल प्रेमपूर्वक जीना।

योद्धा: क्या आत्मा अजर है?
भगवान: आत्मा जीवन का नाम है और जीवन कभी भी समाप्त नहीं होता।

योद्धा: प्रेम और करुणा का क्या महत्त्व है?
भगवान: ये तुम्हारे जीवित होने का प्रमाण है, क्योंकि पत्थरों में ये गुण नहीं पाए जाते।

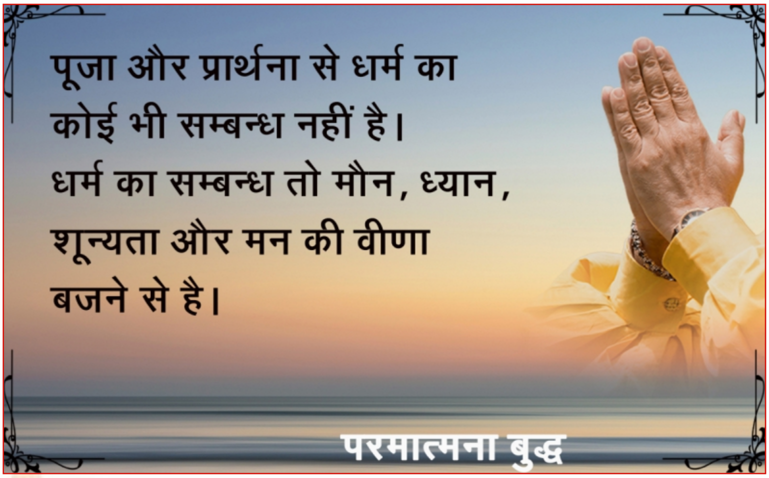

योद्धा: मन और आत्मा के बीच क्या सम्बन्ध है?
भगवान: यह केवल शब्दों की कवायद है, वास्तव में तो तुम एक ही हो। फिर चाहे स्वयं को काल्पनिक मन कहो या चिरस्थायी आत्मा।

योद्धा: क्या ध्यान वास्तव में जीवन को बदल सकता है?
भगवान: हाँ! ध्यान यानी तुम्हारी ही न होने की अवस्था। और जैसे ही तुम नहीं होते हो वहाँ परमात्मा ही होता है। और जब तुम परमात्मा ही होते हो तो जीवन तो बदल ही गया।

योद्धा: क्या भाग्य हमारे हाथ में है?
भगवान: बिल्कुल! भाग्य का तात्पर्य होता है कि जीवन हमें भाग्य से ही मिला है। लेकिन जब से भाग्य का अर्थ लोगों ने धन के मिले होने से ले लिया है तब से भारत गरीब ही होता जा रहा है। जीवन भी तुम्हारे हाथ में है और धन पैदा करना भी तुम्हारे ही हाथ में है।

योद्धा: मृत्यु के बाद क्या होता है?
भगवान: एक दीपक जलाओ, देखो कहाँ से ज्योति आई और अब बुझाओ, देखो कहाँ गयी। बस वहीं तुम पहुँच जाते हो।

योद्धा: आस्तिक कौन और नास्तिक कौन?
भगवान: अस्तित्व को स्वीकारने वाला और उसी स्वीकार के अनुसार जीने वाला आस्तिक। और अस्तित्व के प्रति नकार की दृष्टि रखने वाला नास्तिक। इस आस्तिक और नास्तिक का मंदिर-मस्जिद जाने और न जाने से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है।

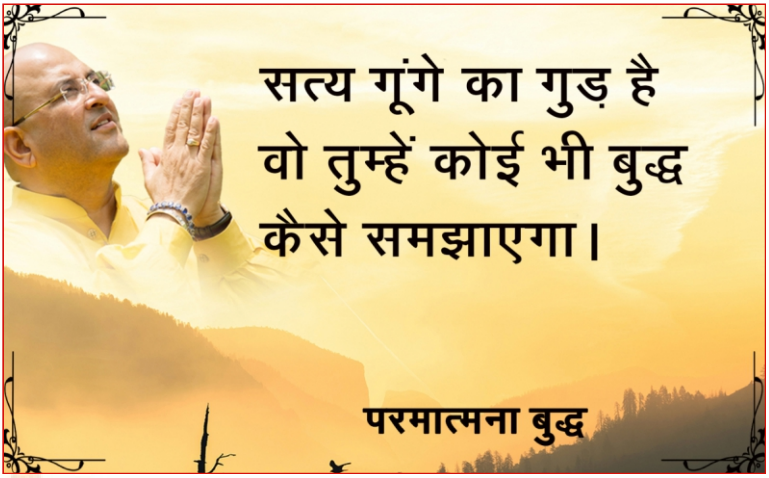

योद्धा: क्या गरीब और अमीर भाग्य से होता है?

भगवान: नहीं! ये सामाजिक व्यवस्था की बात है और तुम्हारे भीतर कितनी बुद्धि है उसकी बात है। 1947 के लगभग चीन, जापान, हांगकांग, दुबई आदि की प्रति व्यक्ति आय देख लो और भारत की प्रति व्यक्ति आय देख लो। और आज पुनः उनकी आय और भारत की प्रति व्यक्ति आय देख लो। जब तक तुम देश की कमान पढ़े-लिखे व्यक्तियों के हाथ में नहीं दोगे तब तक भारत गरीब ही रहेगा।

योद्धा: सनातन शब्द कहाँ से आया?

भगवान: सनातन की गंगोत्री बुद्ध है। ***एस धम्मो सनन्तनं!*** और सनातन का मतलब केवल प्रेम होता है न कि हिन्दू या बौद्ध होना।

योद्धा: मन की शांति कैसे प्राप्त करें?

भगवान: निरमना अवस्था से ही शांति संभव है। क्योंकि जब तक मन है तब तक मन का दमन हो सकता है, शांति नहीं। महावीर ने कहा है ***असुत्ता सो मुनि।*** और जो मुनि है वही तो शांत है। लेकिन ये लक्षण वास्तविक मुनि के हैं, जैन का नग्न मुनि वो तो केवल नाम का मुनि है।

योद्धा: क्या सभी धर्म एक ही सत्य की ओर जाते हैं?

भगवान: हाँ! लेकिन वो सत्य तुम्हारा निज का होता है, वो सत्य हिन्दू या मुसलमान की पुस्तकों जैसा नहीं होता। और जिस दिन तुम्हें वो सत्य मिलता है तुम्हारी सारी पुरानी धारणाएँ उलटी दिखाई देती हैं।

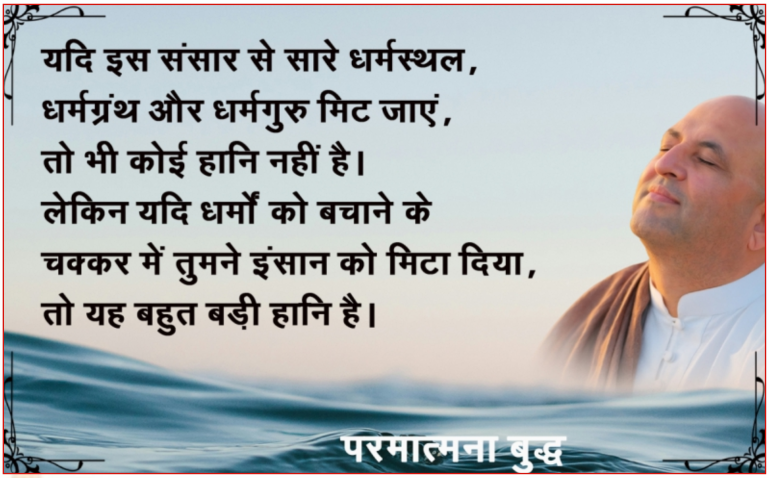

योद्धा: क्या भगवान को मानना चाहिए?
भगवान: नहीं! स्वयं को ही मानना चाहिए। भगवान को जीना है, भगवान को खाना है, भगवान को ओढ़ना है। मानने से कुछ नहीं होगा केवल तुम आँखों के अंधे ही बनोगे। भगवान यानी तुम्हारा जीवन! और कुछ भी तो नहीं।

योद्धा: अंधविश्वास क्या है?
भगवान: बिना तर्क के किसी के भी कहने को सत्य मान लेना। जैसे तुम धार्मिक किताबों की बातों को सत्य मान लेते हो, बिना अपने बोध द्वारा विचार किए। पूरा भारत किसी न किसी मंदिर, मस्जिद, गिरजे, गुरुद्वारे में जाता है, सभी को स्वर्ग जाना है। इतना सुंदर जीवन किसी को भी समझ नहीं आ रहा है। बस इसी मूढ़ता भरी सोच का नाम अंधविश्वास है।

योद्धा: हम अपने धर्मों में कैसा संशोधन करें कि ये भी तुम्हारी सोच की तरह मुक्ति प्रदान करें?
भगवान: जेल को कितना भी सुंदर बना लो घर नहीं बना सकते। मुक्ति घेरों में नहीं, घेरों से बाहर रहकर ही मिलती है। सारे बंधन तोड़ दो और अपनी मुक्ति की घोषणा कर दो। कोई भी सोच तुम्हें बाँध नहीं सकती। ये बंधन तुम्हें किसी और ने नहीं बाँधे हैं, तुम्हीं ने इन बेड़ियों को सुन्दर-सुन्दर नाम दिए हैं। ***तोड़ दो और मुक्त हो जाओ।***

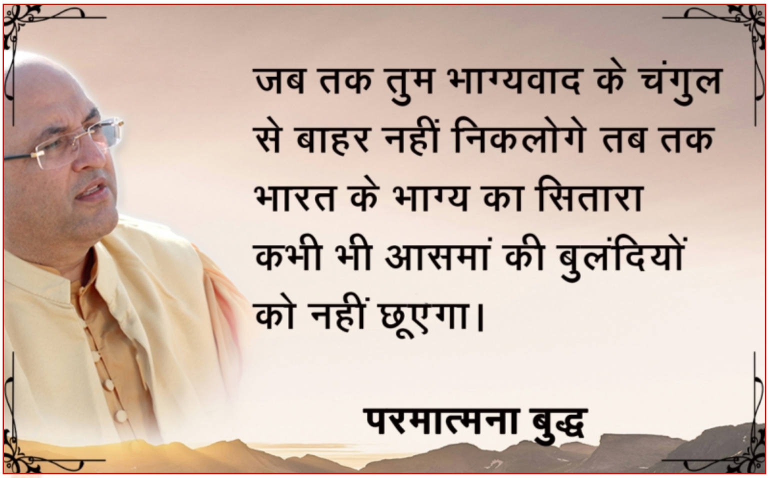

योद्धा: इतने लोग मंदिर-मस्जिद जाते हैं क्या वो सही नहीं करते?
भगवान: उत्तर बहुत आसान है। स्वयं से पूछो कि तुम मंदिर क्यों जाते हो। ***"मस्जिद बहुत करीब थी मयखाना दूर था।"*** समाज क्या कहेगा? बच्चों की शादी न रुक जाए क्योंकि लोग कहेंगे कि ये व्यक्ति मंदिर नहीं जाता, अगर भगवान हुआ ही तो क्या होगा? मंदिर जाना ही नहीं होता। मंदिर तो पूरा जहाँ है। उस परमात्मा के बनाये मंदिर से भाग कर जाओगे भी तो कहाँ?

योद्धा: क्या मंगलवार को कुछ खाने-पीने में सोचना चाहिए?
भगवान: ***या रब शराब पीने दे मुझे मस्जिद में बैठकर या ऐसी जगह बता जहाँ खुदा न हो।***

योद्धा: गीता और कुरान के सूक्त पढ़ने से क्या लाभ?
भगवान: उधार बुद्धिमानी काम नहीं आती। जीवन के अनुभव से जो मिले वही ज्ञान काम आता है। गीता बुद्ध के समय भी थी, तो क्या गौतम को बुद्धत्व उपलब्ध करा पायी? कुरान तब उतरी जब मोहम्मद खुदा से प्रेम कर बैठे। कुरान के कारण प्रेम नहीं उपजा, प्रेम उपजने के बाद कुरान उतरी।

योद्धा: क्या मरने के बाद ही परमात्मा प्राप्ति होती है?
भगवान: परमात्मा या खुदा को फेंक दो! जीवन को देखो। ***"वहाँ कौन है तेरा - मुसाफिर जाएगा कहाँ। दम ले ले घर पे - ये जहाँ पायेगा कहाँ।"***

योद्धा: क्या भगवान है, क्या खुदा है?
भगवान: हाँ! मेरे को देख लो। ***मैं पूरा-पूरा हूँ।*** और पागल मत बनो, तुम भी पूरे-पूरे हो। बस अंतर इतना है कि तुम्हें पता नहीं है।

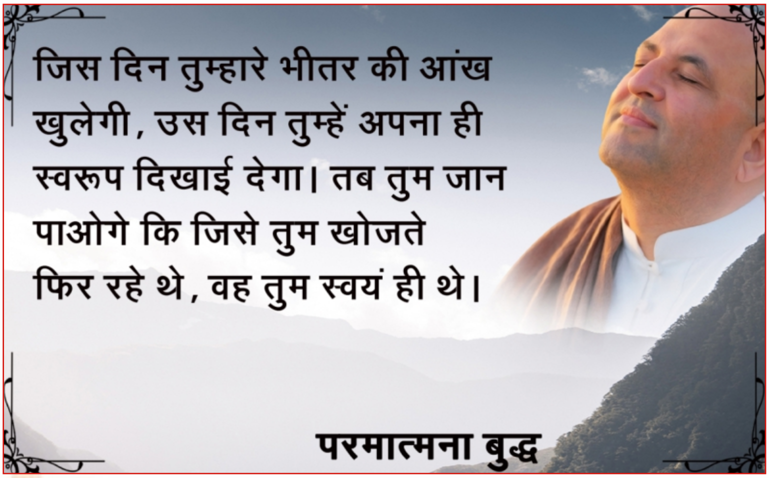

योद्धा: जीवन और परम जीवन में क्या भेद है?
भगवान: चेतना के एक तल से दूसरे तल में जाना और कुछ भी नहीं। दोनों तुम्हारे ही चेतना के तल हैं लेकिन दोनों में ज़मीन और आसमान का अंतर है।

योद्धा: जीवन यानी खुदा, यानी परमात्मा! उसके लिए पूरा संसार क्या है?
भगवान: आकाश के लिए न कोई सूरज है, न धरती। उसके लिए तो रेत के कण बिखरे हैं। उसी प्रकार तुम प्रकट होते हो या अप्रकट, कुछ भी अंतर नहीं पड़ता उसमें। सागर में बुलबुले उठें या मिटें? तुम क्या सोचते हो सागर उसके विषय में कुछ भी सोचता है?

योद्धा: सनातन धर्म का क्या अर्थ है ?
भगवान: गूगल करो! सनातन का अर्थ होता है जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा। लेकिन जैसे निकम्मा नेता जो देश का हित करने में असमर्थ होता है वो अपने से पहले जन्मे सभी महापुरुषों से अपना नाम जोड़कर जनता को गुमराह कर भ्रमित करता रहता है उसी प्रकार पाखंड फैलाने वाले लोग ऐसे ही किसी भी शब्द को अपने से जोड़कर अपने पाखंड को सदियों पुराने होने के सबूत देने लगते हैं। सनातन धर्म नामक कोई धर्म नहीं होता। ***हाँ! धर्म जरूर सनातन होता है।*** धर्म यानी प्रेम, दया, करुणा आदि ये सनातन हैं। लाखों वर्ष पहले से पशु-पक्षी अपने बच्चों से प्रेम करते हैं, बाघ जैसा हिंसक जानवर भी गर्भवती हिरणी को छोड़ देता है। हाँ! ये गुण इंसानों के लिए नहीं हैं। और इंसानों को इसकी आवश्यकता भी नहीं है। ***क्योंकि हम तो धार्मिक हैं?***

योद्धा: क्या सभी धर्म एक समान हैं ?

भगवान: अगर धर्म से तुम्हारा मतलब तथाकथित 365 प्रकार के धर्मों से है तो ये एक ही समान हैं। क्योंकि इन सभी धर्मों में पाप मुक्ति के उपाय विद्यमान हैं। सभी कहते हैं कि दान और पुण्य से पापों की सजा से बचा जा सकता है। सभी के धर्म गुरु एक समान धर्म की दुकान सजाए बैठ जाते हैं। ***सभी धर्म एक समान मृत वस्तुओं की पूजा करने को ही धर्म मानते हैं।*** जैसे कोई खड़े पत्थर की पूजा करता है तो कोई अनगढ़ पत्थर को चूमता है, कोई कागज़ को तो कोई लकड़ी के क्रॉस को पूजने को ही धर्म मानता है। सभी धर्म में ईश्वर कोई दूसरा व्यक्ति होता है जो कहीं दूर किसी और ही ग्रह पर रहता है। सभी धर्म मूर्खतावश अपनी-अपनी सुविधा अनुसार अपने लिए स्वर्ग में सुख सुविधाओं की कल्पना कर लेते हैं तथा अपने ही धर्म को न मानने वालों के लिए कठोर से कठोर नरक की यातनाओं की कल्पना कर लेते हैं। ***"हाँ! जिसे मैं धर्म कहता हूँ वो तो तुम्हारा सत्य है"।***

योद्धा: क्या प्रेम ही अंतिम सत्य है ?

भगवान: हाँ! प्रेम ही हर मार्ग की पूर्णता है, तुम किसी देश के राजा हो तो भी राजकाज तभी धार्मिक होगा जब राजा प्रजा से प्रेम करे, अगर तुम पति-पत्नी हो तो परिवार तभी सार्थक होगा जब प्रेम होगा, अगर तुम धर्म की बात करते हो तो तभी तुम वास्तव में धार्मिक होगे जब तुम संसार मात्र से प्रेम करोगे। तुम किसी भी कार्य में हो, बिना प्रेम के तुम उस कार्य में सही दिशा न ला पाओगे। कृष्ण, बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, जीसस, नानक, कबीर आदि महापुरुषों ने प्रेम की बदौलत ही पूर्णता को पाया। और तुम आज सभी मूर्खतावश अपने-अपने धर्मों के मंदिर, मस्जिद, गिरजे, गुरुद्वारे से ही प्रेम करने को धर्म मानने लग गए। क्या उत्तम विचार है तुम धर्मियों के, ***ज़िंदा से प्रेम को दुत्कार कर मृत से प्रेम?***

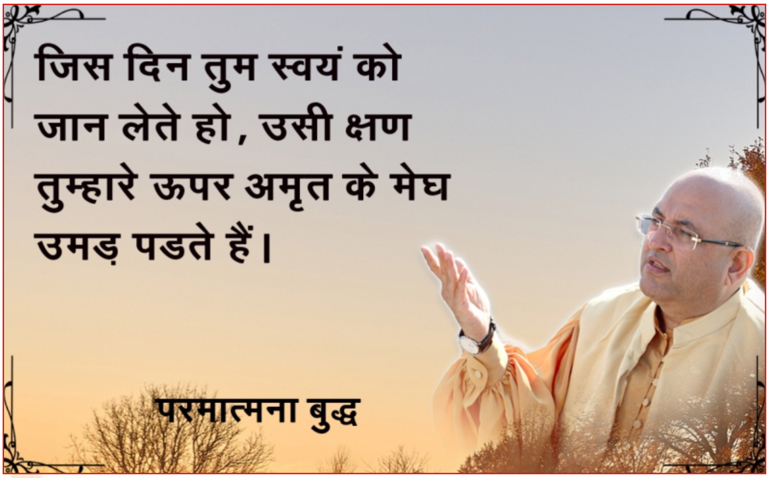

योद्धा: क्या आत्मा का पुनर्जन्म होता है?
भगवान: आत्मा का जन्म ही नहीं होता तो पुनर्जन्म कैसा? शरीर आता-जाता है, आत्मा अखंड रूप से बिखरी पड़ी है, वो कहीं आती-जाती नहीं। लेकिन कच्चे घट कुछ नहीं समझ पाएंगे? उनके लिए तो जो किताबों में लिखा है वही ठीक है।

योद्धा: क्या मृत्यु के बाद आत्मा का कुछ होता है?
भगवान: मृत्यु से पहले ही आत्मा का कुछ नहीं होता तो बाद में क्या होगा। तुम सोचते हो कि तुम श्वास नहीं लोगे तो वायु का क्या होगा? तुम्हारे पैदा होने से पहले भी वायु थी और बाद में भी रहेगी। तुमसे पहले भी आत्मा कण-कण में विद्यमान थी और बाद में भी रहेगी। ***"बैलगाड़ी के नीचे चलने वाले कुत्ते की कहानी सुनी है तुमने"?*** एक हाथी के ऊपर एक चिड़िया बैठी थी तो उसे भ्रम हो गया कि मेरे चलने से धूल उड़ रही है। बस वही स्थिति हो रही है तुम्हारी।

योद्धा: क्या जो मृत्यु के बाद धर्म गुरु कहता है कि मौन रखकर प्रार्थना करो! हे ईश्वर उनकी आत्मा को शांति देना और अपने चरणों में निवास देना। क्या ये वाक्य ठीक है ?
भगवान: पूर्णतया गलत। अब तुम्हारे धर्मगुरु को कुछ भी पता नहीं है तो वो कुछ तो बोलेगा ही। जो उसने आज तक सुना है वही तो बोलेगा। अपना तो अनुभव ज़ीरो है। मैं तो तुम्हें अपना अनुभव बता रहा हूँ। तुम भी इस सत्य के मार्ग पर कुछ कदम मेरे साथ चलोगे तो ही मेरी बातें समझ आएँगी। अब बताओ जो मर गया

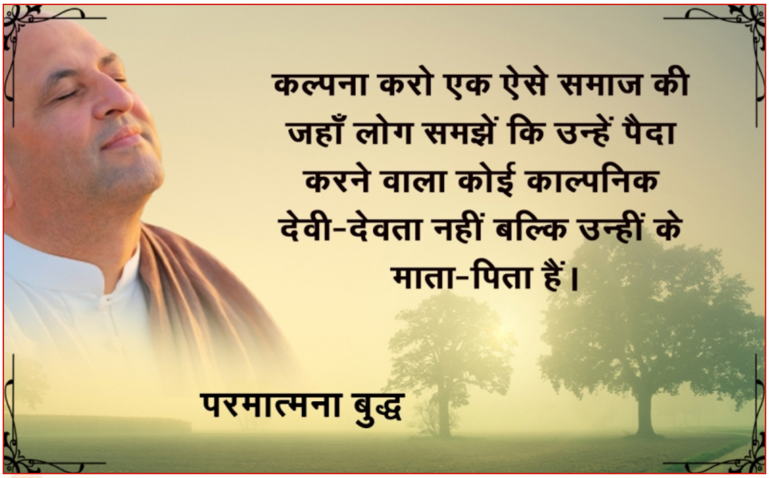

उसके बाप की आत्मा थी क्या? जब वो पैदा हुआ तो पहले से ही आत्मा अस्तित्व में विद्यमान थी और जब वो मरा तो वो आत्मा पुनः अस्तित्व में समा गयी। तो आत्मा जो अस्तित्व में थी वो तुम्हारे पैदा होने से अशांत कैसे हुई? क्या बादलों के आने-जाने से आसमान मैला हो जाता है? और अपने चरणों में निवास देना, तो जो परमात्मा कण-कण में है उसके चरण कहां हैं? कुछ पता भी है तुम्हें? क्या पृथ्वी के ऊपर आकाश है? अगर स्पेस स्टेशन से देखोगे तो पाओगे कि अनंत आकाश के भीतर पृथ्वी है एक छोटे से रेत के कण के बराबर।

योद्धा: जब इस जीवन को छोड़ना ही है तो यहां जीवन में संघर्ष क्यों करना?
भगवान: यही कमी है तुम्हारे उल्टे धर्मों में। वो हमेशा से ही जीवन से भागने की ही शिक्षा देते आ रहे हैं। जीवन से भागना नहीं है, जीवन में जागना है। मरने के बाद कहीं स्वर्ग नहीं है, उठो और इसी जीवन को स्वर्ग बना लो। और जो लोग बोलते हैं कि ये संसार सराय है, यहां कुछ भी करना उचित नहीं है! उनका मत है कि बच्चा पैदा हुआ आखिर तो वो एक दिन मरेगा ही। चलो पैदा होते ही उसे श्मशान ले जाकर जला दो। जब एक दिन जाना ही है तो व्यर्थ ही 80 वर्ष का झंझट क्यों करना। स्वयं बुद्धि से सोचो, कौन सा मत उत्तम है?

योद्धा: क्या अंत समय में लिया गया परमात्मा का नाम कुछ लाभ करता है?
भगवान: तुम्हारी मूर्खता को ही दर्शाता है। कि तुम आज भी मरने के बाद स्वर्ग की चाह के ही स्वप्न देख रहे हो। इससे सिद्ध होता है कि तुम्हारा पूरा जीवन नरक में ही बीता। मैं तुम्हें यहां सुखी करने की बात कर रहा हूँ और तुम अब भी मूर्खता भरे स्वप्न देख रहे हो।

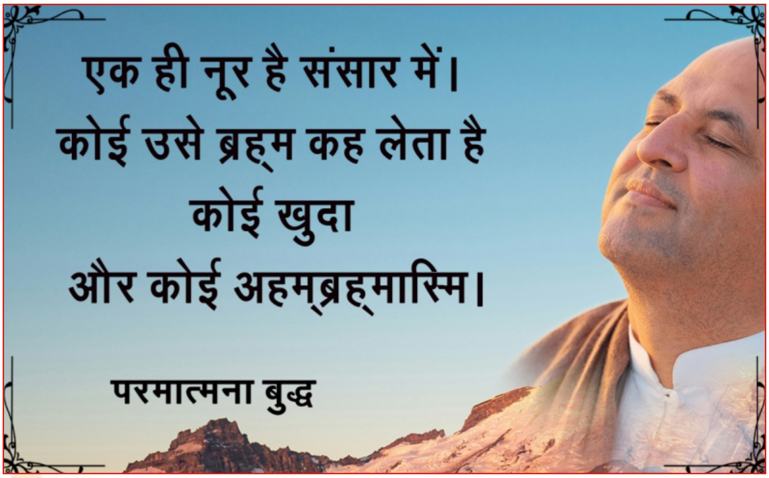

योद्धा: क्या धर्म जीवन के अंत में करना चाहिए ?
भगवान: धर्म जीवन को स्वर्ग बनाता है जीते-जी। और तुम इसे अंत पर टालना चाहते हो यानी जीवन को नरक बनाए रखना चाहते हो?

योद्धा: मंदिर और मस्जिद में झगड़े क्यों हैं ?
भगवान: मंदिर-मस्जिद, हिन्दू-मुस्लिम धर्म नहीं, सम्प्रदाय हैं। धर्म दो होते ही नहीं। और जहां दो हैं ही नहीं वहां झगड़ा कैसा। धर्म इनसे कोसों दूर है। उसका कुछ भी नाम नहीं है। बस तुम उसका अनुभव कर सकते हो। ***द्वैत ही झगड़े की जड़ है।***

योद्धा: हम उसे कहां देखें तथा कैसे देखें ?
भगवान: पत्ते-पत्ते पर उसी का नूर हिलोरे भर रहा है। क्योंकि तुम सभी ने पुराने चश्मे लगाए हैं और तुम धारणाएं धरकर उसे देखने का प्रयास कर रहे हो और इसी कारण चूक रहे हो। जहां हो, वहीं बस आंखें खोल लो।

योद्धा: तुम्हारे कहे अनुसार अगर हम ये मान ही लें कि यह दुनिया सुख है तो हमें वो सुख कैसे मिलेगा ?
भगवान: अपने-अपने धर्मस्थलों पर माथा फोड़ने की जगह अगर तुम सभी इस संसार को सुंदर बनाने की ओर ध्यान देते तो आज यही संसार स्वर्ग बन जाता। फिर न तो ये जीवन नरक होता और न ही तुम्हें मरने के बाद स्वर्ग की चाह होती। अभी भी समय है, अगर चाहो तो आज ही अपना स्वर्ग निर्मित कर लो।

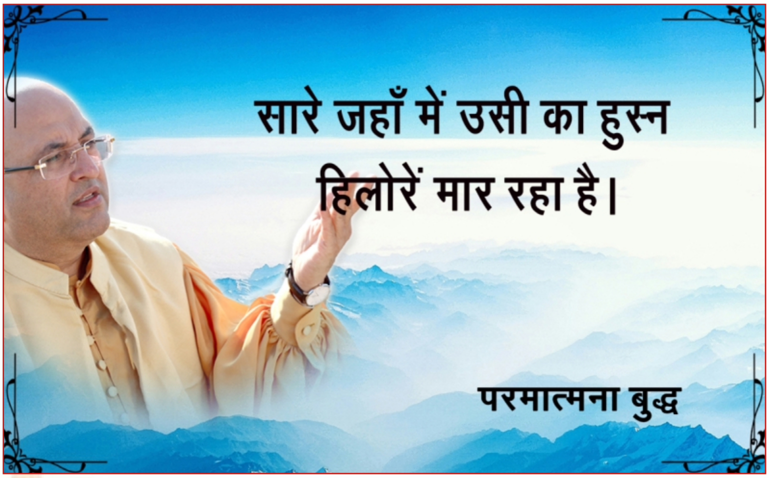

योद्धा: मृत्यु के क्षण में कौन सा नाम मुख में आना चाहिए?
भगवान: इस प्रकार जीवन जियो कि मृत्यु के क्षण में यह कह सको कि ***"मज़ा आ गया जीवन जीने का। हो सके तो ये जीवन हमें पुनः-पुनः देना, मैं इसे बार-बार जीना चाहूंगा।"*** इतनी सुंदरता से जीवन जियो कि मृत्यु की आंखों में आंखें डाल कर कह सको कि देख, तू रोज आई और मैंने तुझे 90 वर्ष छकाया। तुझे 90 वर्ष रोज हराया। जा, एक दिन तुझे जीतने देता हूँ।

योद्धा: ज्ञान क्या है ?
भगवान: तुम्हारे होने की अवस्था का नाम। तुम कुछ बोलो तो ज्ञान झरे, तुम चलो तो ज्ञान झरे, तुम्हारा हर कार्य ज्ञानमय हो। तुम ज्ञान की एक खुली किताब हो जाओ।

योद्धा: आज संसार में कौन व्यक्ति है जो सही में महात्मा या संत है?
भगवान: बहुत हैं लेकिन धार्मिक वस्त्र पहने, पीले, नीले कपड़े पहने, तिलक लगा आगे-पीछे हिटलर की तरह कैमरों का फौज-फांटा लेकर वॉक करते नहीं दिखेंगे। वो संत या महात्मा तुम्हें काम-धंधा करता मिलेगा। पत्नी, बच्चों के साथ रहता मिलेगा। तुम उसे पहचान नहीं पाओगे। क्योंकि तुम तो ढोंगी को ही महात्मा मानते आए हो। ***धार्मिक हो ना!*** धार्मिक दिखने वाला व्यक्ति आँख का अंधा होता ही है। मुस्लिम आदमी, एक मुसलमान के ढोंगी को ही महात्मा मानता है। सिख व्यक्ति सिख के वस्त्र पहनने वाले को ही महात्मा मानता है, बौद्ध भी अपनी सोच के प्रकार के वस्त्र वाले को ही महात्मा मानता है। सभी का तो ये हाल है। धार्मिक व्यक्ति आँख का अँधा होता है। और हमारे देश का तो दुर्भाग्य ही यह है कि ***यहां का तो राजा भी आँख का अंधा है।***

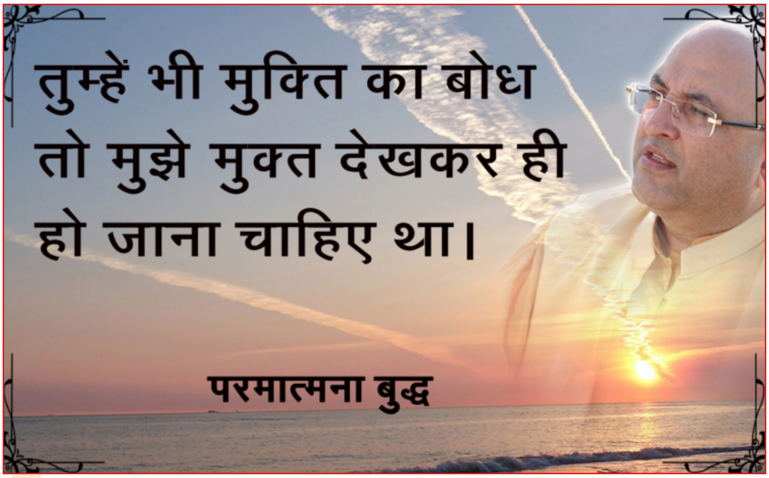

योद्धा : शास्त्रों से कुछ भी क्यों नहीं समझ आता?
भगवान: क्योंकि शास्त्र तुम बुद्धि से पढ़ते हो और उसका द्वार हृदय से खुलता है। इसलिए ही पंडित कोरे के कोरे ही रह जाते हैं। कुरान कंठस्थ हो जाती है, और समझ क्या आता है? जिहाद?

योद्धा : क्या भगवान हृदय में रहते हैं ?
भगवान: ये तुमने किसी पुस्तक में पढ़ लिया होगा। अगर तुम हार्ट को ही हृदय मानते हो तो देखो क्या भगवान हाथ या पैर में नहीं रहते? ये तो जिसे अनुभव हो गया उस बुद्ध पुरुष का वर्णन है। केवल शब्दों से इस प्रश्न का उत्तर तुम्हें दे भी दिया जाए तो समझ कुछ भी नहीं आएगा।

योद्धा : आध्यात्मिक गुरु की पहचान कैसे करें?
भगवान: गुरु को जब तक एक व्यक्ति मानते रहोगे तब तक भटकते रहोगे। तुम्हें गुरु की आवश्यकता नहीं है, तुम्हें शिष्य होने की आवश्यकता है। तुम बस शिष्य हो जाओ पूरा अस्तित्व ही गुरु है। और जब तुम पूरे अस्तित्व से कुछ सीखने की अभिलाषा रखोगे तभी कुछ सीख पाओगे।

योद्धा : कर्मकांड आवश्यक है?
भगवान: हाँ! इससे पता चलता है कि आप कितने मूढ़ हैं। कालिदास अगर कुछ न बोलता तो कैसे पता चलता कि वो महामूर्ख है।

योद्धा: कौन सा मार्ग मुक्त करता है ?
भगवान: सत्य मुक्तिदायी है और तुम्हारे धर्म बंधनदायी। अगर मुक्त होना है तो स्वयं का सत्य खोजो। किसी दूसरे का सत्य भी तुम्हें मुक्त न कर पाएगा।

योद्धा: क्या पुस्तकों में जो स्वर्ग का वर्णन है वो सही है ?
भगवान: नहीं! ये मूढ़ों की कल्पनाओं का विस्तार है और कुछ भी नहीं।

योद्धा: मैंने इतना जप किया, तीर्थ किया कुछ तो लाभ होगा ?
भगवान: तुमने भ्रम में भ्रम टूटने का स्वप्न देख लिया होगा? इसे कहते हैं स्वप्न में नींद से उठ जाने का स्वप्न देखना। लाभ की बात करते हो तुम! उल्टा भेड़ों की भीड़ से इतना घिर गए हो कि बाहर निकलना भी चाहो तो तुम निकल न पाओगे।

योद्धा: क्या साधु बने हुए लोग गलत हैं, क्या वो साधु नहीं हैं ?
भगवान: दाढ़ी-मूंछ हटा दो, धार्मिक ड्रेस हटा दो, तिलक हटा दो, शास्त्र हटा दो, चेले-चपाटे हटा दो, रटी हुई प्रार्थनाएँ हटा दो। अब उनसे कहो ज्ञान दो। तब पता चलेगा साधु था या साधु के वेश में रोटी कमाने वाला भिखारी?

योद्धा: क्या प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन आवश्यक है?
भगवान: एक अर्थ से तो हाँ! क्योंकि जब बाहर सभी जगह ढूंढ़ लोगे तो मेरी बात मानने के अलावा कोई और रास्ता ही नहीं बचेगा। लेकिन वो मिलेगा नहीं तुम्हें प्राचीन ग्रंथों से। मिलेगा तो भीतर से ही। ***"कोई मंदिर, मस्जिद तुम्हें उसका दीदार नहीं करवा सकता। न काबा न काशी।"*** भटको, खूब भटको। आखिर जिस दिन थक कर, हार कर बैठ जाओगे और मन से मर जाओगे उस दिन उस खुदा को सामने ही खड़ा पाओगे। और देखोगे कि वो कब से बांहे फैलाकर खड़ा था। तुम ही अपने होश में नहीं थे।

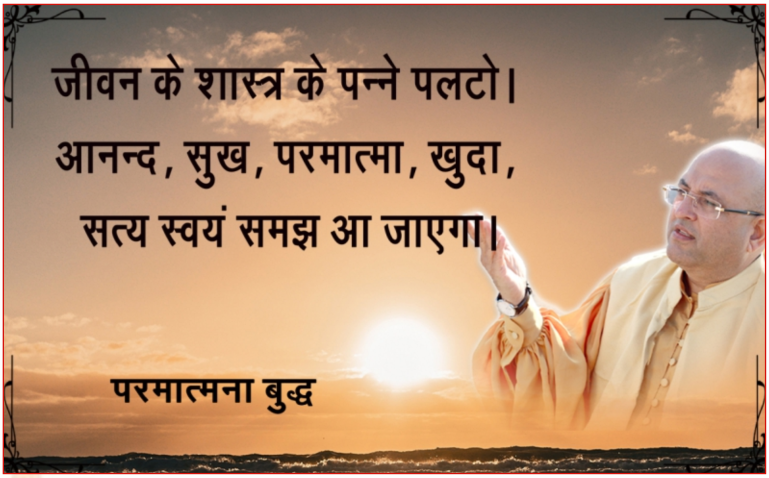

योद्धा: क्या एक का अनुभव संभव है?
भगवान: हाँ! तुम्हारा होना ही बाधा है। तुम्हीं दो माने फिर रहे हो। एक ईश्वर के अलावा यहां दूजा है ही नहीं। और कमी ये है कि तुम्हें मरना ही नहीं आ रहा है। क्योंकि तुम्हारे सभी धर्म तुम्हें धर्म में कुछ बनना सिखा रहे हैं और धर्म मरने की कला है। मेरे पास आओ, मैं तुम्हें पूर्णतया मार दूंगा, तुम्हारा सिर ही नहीं रहने दूंगा। फिर जब तुम बिना सिर के घूमोगे तभी तुम्हें धर्म का अनुभव होगा।

योद्धा: क्या अकाल मृत्यु के बाद प्रेत योनि मिलती है ?
भगवान: एक करोड़ 19 लाख व्यक्ति एक्सीडेंट में, 7 लाख 20 हजार आत्महत्या करके तथा 6 करोड़ लोग अपनी ही मौत प्रतिवर्ष मरते हैं। लेकिन इनकी वासनाएँ भी तो बची हुई होंगी। अब इतने प्रेत बनते हैं तुम्हारे रूढ़िवादी, अंधविश्वासी, मूर्खता भरे धर्मों की सोच के कारण। अब बताओ तुम इन प्रेतों के बीच में कैसे रहोगे? अच्छा तो होगा तुम भी प्रेत बन जाओ। तभी अच्छी निभेगी।

योद्धा: आत्मा और शरीर का संबंध क्या है?
भगवान: जो संबंध पृथ्वी और आकाश का है, जो संबंध सागर और लहरों का है, जो संबंध बल्ब और लाइट का है, जो संबंध नर्तक और नृत्य का है, जो संबंध भूख और भोजन का है, जो संबंध ज्ञान और समझ का है, जो संबंध दीपक और प्रकाश का है, जो संबंध प्रेम और प्रेमी की रक्षा का है।

योद्धा: आध्यात्मिक साधना में धैर्य का क्या महत्त्व है?
भगवान: धैर्य से मर जाओ आध्यात्मिक साधना पूर्ण हो जाएगी।

योद्धा: क्या जीवन में संघर्ष आध्यात्मिक विकास का हिस्सा है?
भगवान: हाँ! अगर गौतम 6 वर्ष ना भटकते तो बुद्ध ना बनते। तुम भी भटको, मरो, मिटो, और जब तक पूरे-पूरे ही न मर जाओ, रुकना मत। तुम भी उस पूर्णता को पा जाओगे जिस पूर्णता को कृष्ण, बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, जीसस, नानक, कबीर आदि महापुरुषों ने पाया।

योद्धा: क्या प्रकृति से जुड़ना आध्यात्मिकता है?
भगवान: हाँ! क्योंकि प्रकृति और परमात्मा अलग-अलग नहीं हैं। आँख खोलकर देख लिया तो परमात्मा और आँख बंद कर देखा तो प्रकृति।

योद्धा: क्या मैं किसी और की आत्मा को प्रभावित कर सकता हूँ?
भगवान: अगर तुम आत्मा को प्रभावित कर पाओ तो तुम बड़े हो गए और आत्मा छोटी हो गई। तुम सीधे-सीधे परमात्मा को अपने चरणों पर झुकाना चाहते हो। कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

योद्धा: क्या चार सम्प्रदायों के अलावा परमात्मा प्राप्ति का कोई और मार्ग नहीं है?
भगवान: परमात्मा की ओर जाने वाले सारे मार्ग जो पहले से बने हैं गलत हैं। किसी और का मार्ग किसी दूसरे को नहीं पहुँचा सकता। और ये जो तुम जिन चार सम्प्रदायों की बात कर रहे हो, इनसे आज तक एक भी नहीं पहुँचा। मार्ग तुम्हें खुद बनाना पड़ता है।

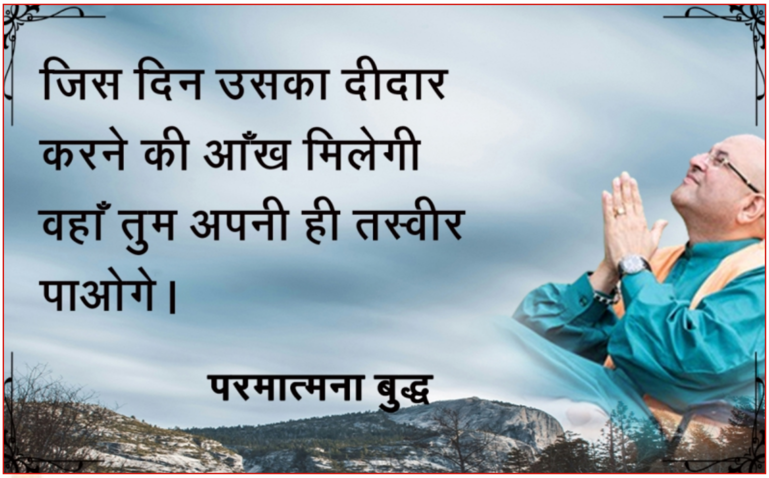

योद्धा: बुद्धों की भाषा समझ क्यों नहीं आती?
भगवान: जो समझ आ जाए वो बुद्धों की नहीं, तुम्हारी ही भाषा होगी। तुम्हें उन्हीं बातों से लाभ है जो कुछ तुम्हें समझ आए और कुछ तुम्हारे ऊपर से निकल जाए। अगर सत्य तुम्हें पूरा-पूरा समझ आ जाए तो वो सत्य नहीं होगा, वो झूठ होगा।

योद्धा: क्या मंदिर-मस्जिद समाज परिवर्तन में कुछ भी नहीं कर सकते?
भगवान: अगर कर सकते तो करोड़ों मंदिर-मस्जिद हैं दुनिया में। सुबह-शाम करोड़ों लोग आरती-प्रार्थनाएँ करते हैं। लेकिन उन प्रार्थनाओं से भगवान, अल्लाह, खुदा के चिन्हों की छाया कुछ बनी है समाज में?

योद्धा: तीर्थ कौन-सा सही है?
भगवान: जहाँ तुम्हारा हृदय जागृत और द्रवित हो जाए। तीर्थ मंदिर-मस्जिद से नहीं बनते, तुम्हारे सजदे से बनते हैं। मोहम्मद के सजदे के कारण काबा तीर्थ हो गया।

योद्धा: पुजारी के द्वारा पूजा करवाने से क्या हानि है?
भगवान: जो पुजारी 15000 की तनख्वाह पाकर तुम्हारे भगवान के गुणगान करता है वो किसी और से दोगुनी तनख्वाह पाकर तुम्हारे भगवान के विपक्ष में भी बोल सकता है। पूरे भारत में पैसे के लालच में आकर आखिर पंडितों ने एक नई मूर्ति के चरित्रों का गान किया ही ना।

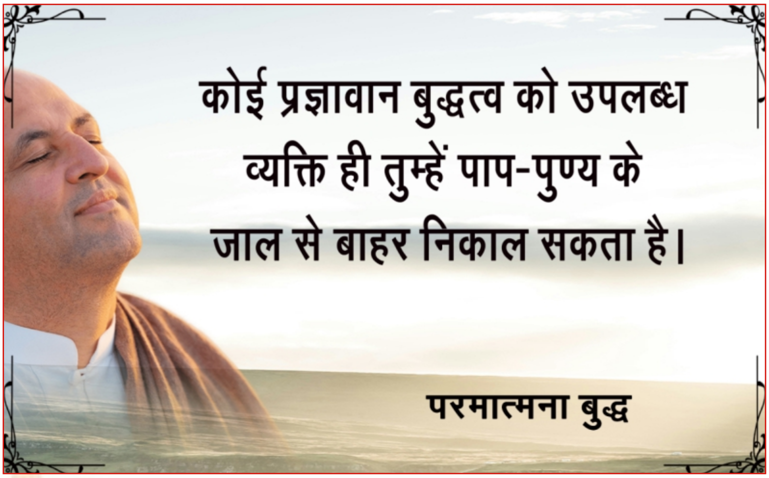

योद्धा: क्या हमें गुरु के आगे सब कुछ अर्पण कर देना चाहिए?
भगवान: जब कभी तुम किसी भी व्यक्ति के सामने अपनी सोचने-समझने की शक्ति को ही अर्पण कर देते हो तो तुम्हारा पतन आवश्यक है। ये मनुष्य होने की स्थिति से गिर जाना है। ये श्रद्धा नहीं है।

योद्धा: क्या धर्म से देश सुखी होगा?
भगवान: देश में कितने महापुरुष जन्मे, क्या देश सुखी या अमीर हो पाया? 5500 वर्षों से तुम जप, तप, व्रत, उपवास और मूर्खता भरे हजारों अनुष्ठान कर रहे हो, तुम्हारे पुरखे भी यही करते मर गए, अब तुम्हारी बारी है। देश धर्म से नहीं धार्मिकता से, जागरण से, सुखी, सम्पन्न और अमीर होगा। जितने डंडे और झंडे तुम धर्म के नाम पर उठा रहे हो अगर इतना ही बोझ तुमने पुस्तकों का उठाया होता तो देश कब का सुखी और सम्पन्न हो गया होता।

योद्धा: कहते हैं कि आत्मा के पीछे ही उसके पाप और पुण्य चलते हैं जो उसे अगले जन्म में सुख या दुःख देते हैं? क्या ये सही है?
भगवान: तुम्हारे शास्त्रों ने अपनी ही आत्मा का सिद्धांत खंडित कर दिया। मानो बादल को अग्नि जला नहीं सकती, जल डुबा नहीं सकता, शस्त्र काट नहीं सकता। तो उन्हीं बादलों से तुम कुछ भी बाँध कैसे सकते हो? तुम्हें क्या लगता है जब बादल नहीं होते तो वो क्या कहीं हैंगर में चले जाते हैं? नहीं! बादल हमेशा से ही होते हैं कहीं प्रकट और कहीं अप्रकट। आत्मा से कुछ नहीं बंधता। जिन्होंने शास्त्र लिखे उन्होंने बुद्धि का प्रयोग किया। आत्मज्ञान बुद्धि से पार का विषय है।

योद्धा: क्या मरने के बाद हम स्वर्ग में पैदा होते हैं?

भगवान: आज से हजारों वर्ष पहले इजिप्ट में राजा लोग अपनी ममी बनवाते थे कि जब कभी मनुष्य को ज़िंदा करने की विधि हाथ लगेगी तो हमें भी ज़िंदा कर लिया जाएगा। आज तुम क्या मानते हो वो ठीक कृत्य था या कोरी मूर्खता?

योद्धा: ब्राह्मण कैसे हुआ जाता है?

भगवान: ***मैं को मारो अगर तू को पैदा करना है।*** ब्राह्मण बनने के लिए मैं रूपी अहंकार को मारना होता है। यह सूक्त शास्त्रों में दिया गया है। नेति-नेति का सिद्धांत तुम सभी ने पढ़ा होगा। यानी ये नहीं ये नहीं। लेकिन अज्ञानतावश लोगों ने इसका अर्थ हाथ-पैर, सिर और शरीर से ले लिया है। नहीं! इसका सही अर्थ है मैं ब्राह्मण-शूद्र आदि जाति नहीं, मैं पुण्यात्मा-पापात्मा नहीं, मैं ऊँच-नीच नहीं, मैं हिन्दू-मुसलमान नहीं। यानी मैं कुछ भी नहीं। फिर जो बचता है वही ब्रह्म है और वह ब्रह्म ही तो ब्राह्मण है।

योद्धा: ध्यान और साधना का क्या महत्त्व है और यह कैसे काम करता है?

भगवान: ध्यान का जो तात्पर्य तुम सभी ने आँखें बंद कर मौन होने से मान लिया है वह त्रुटिपूर्ण है। ध्यान का मतलब बाहर की आँखें बंद कर मौन नहीं रहना है बल्कि बुद्धि से मौन होना है। यानी निर्विचार होना है। और निर्विचार होना ध्यान है और उस निर्विचार होने की विधि का नाम साधना है।

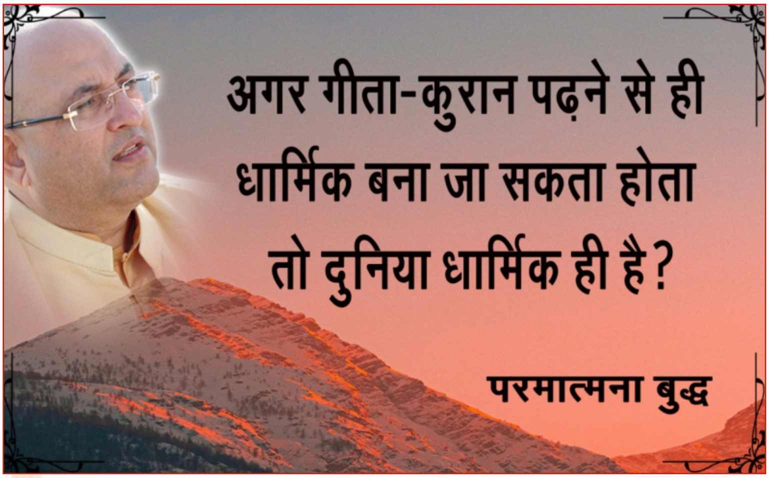

योद्धा: ब्राह्मणों का जाल कैसा है?

भगवान: ब्राह्मणों के जाल से हिन्दू ब्राह्मण से तात्पर्य नहीं है। ब्राह्मणों के जाल का तात्पर्य है उन लोगों से जो दूसरों को अपनी सोच के अनुसार चलाकर अपना उल्लू सीधा कर स्वयं को पुजवाना चाहते हैं और ऐसे लोग हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई या दुनिया भर में फैले सभी 365 प्रकार के धर्मों में पाए जाते हैं और ऐसे ही सभी राजनेता होते हैं। तो जाल का मतलब है कि वो विचारधारा जो यह कहती है कि तुम कुछ मत सोचो जैसा मैं समझाऊँ वैसा ही करो। यह सोच रखने वाले लोगों के जाल का नाम है ब्राह्मणों का जाल। इसको केवल हिन्दू धर्म से जोड़ना नाइंसाफी होगा।

योद्धा: ब्राह्मणों का जाल कैसे कटेगा?

भगवान: लोगों को बुद्धि द्वारा अपना हर कार्य सोच-समझकर ही करना चाहिए। हमें हर किसी को हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई या दुनिया भर में फैले सभी 365 प्रकार के धर्मों वाले लोगों को यह विचारधारा रखनी होगी कि धर्म से ज्यादा महत्त्वपूर्ण शिक्षा है। और समाज में प्रेम, करुणा, दया, समानता की भावना, आर्थिक समानता का होना आवश्यक है। केवल इस सोच से ही यह जाल कट सकता है।

योद्धा: भारत में देवता भी पैदा होने को क्यों तरसते हैं?

भगवान: यह कहानियाँ मात्र हैं, देवता शरीर नहीं होता। देवता तो एक गुण है। अगर आपके भीतर करुणा, दया, समानता की भावना, प्रेम आदि के गुण हैं तो आप देवता हैं और अगर आपके भीतर हिंसा, क्रोध, अहंकार की भावना है तो आप दानव हैं। मेरी दृष्टि में तो आज अगर देखें तो दुनिया भर में दानव ही पैदा होने को तरसते हैं।

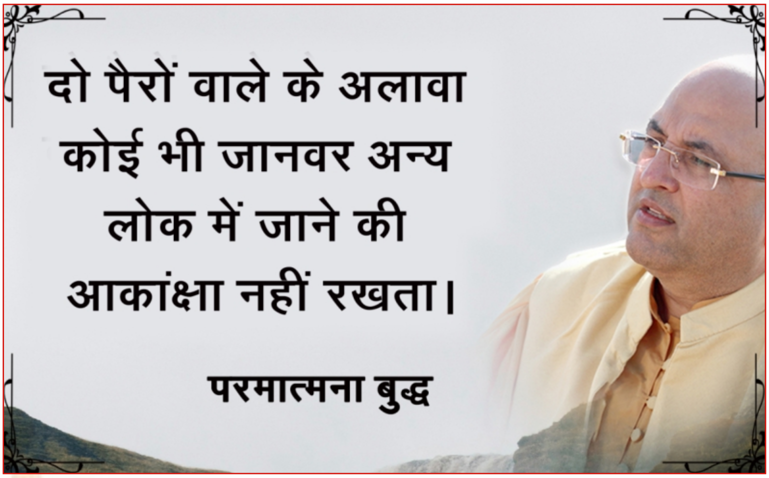

योद्धा: 33 करोड़ देवी-देवता की अवधारणा क्यों और किसने बनाई?
भगवान: जिस किसी प्रबुद्ध, ज्ञानी, जाग्रत ने यह अवधारणा बनाई थी, उसे उस समय के लोगों में जिनकी जनसंख्या लगभग 33 करोड़ थी, उनमें देवी-देवता ही दिखते थे। तो उस बुद्ध ने कह दिया था कि 33 करोड़ देवी-देवता हैं। लेकिन लकीर के फकीर लोगों ने 33 करोड़ मूर्तियाँ समझ लिया। क्योंकि उन्होंने सभी में देवी-देवता की भावना को नहीं समझा।

योद्धा: हमारे धर्म गुरु मृत्युलोक की निंदा क्यों करते हैं?
भगवान: क्योंकि उन्हें यहाँ सुख, आनंद, उत्सव, नृत्य, प्रेम नहीं दिखा। उन्हें यहाँ दुख, वेदना, पाप, कष्ट ही दिखा तो उन्होंने स्वर्ग, जन्नत या अन्य लोकों की कल्पनाएँ गढ़ लीं कि उन्हें वहाँ जाकर सुख मिलेगा। लेकिन मेरी दृष्टि में जीवन से बड़ा आनंद और कहीं नहीं है।

योद्धा: अमीर प्रारब्ध के कर्म के कारण बनता है क्या?
भगवान: नहीं! यहाँ कभी कोई भी वस्तु दुबारा नहीं होती। एक पत्ता भी दुबारा नहीं होता तो मनुष्य कहाँ से दोबारा होगा। जिन्होंने कुछ न करने की अवधारणा पाली है और जो आलसी हैं, जीवन को बदलना नहीं चाहते हैं, वो ऐसी मूर्खता भरी सोच पाल लेते हैं। और वो सभी धर्म गुरु जो भोली-भाली जनता से पुण्य कर्मों के नाम पर दान लेना चाहते हैं, वो सभी अगले जन्मों में तुम्हारा प्रारब्ध ठीक बने, उसी मूर्खता के कारण ऐसी धारणाओं की कहानियाँ रच देते हैं।

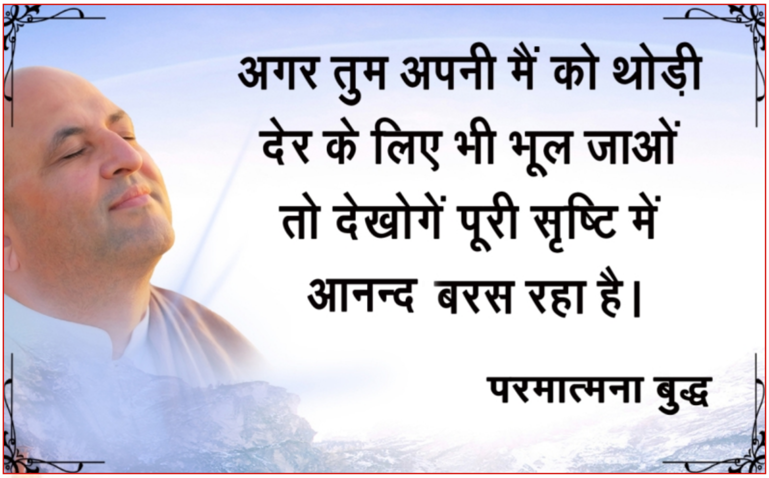

योद्धा: स्वस्थ या बीमार बच्चे के जन्म के पीछे क्या कारण है? एक धार्मिक मत के अनुसार वो पिछले जन्मों के लेन-देन के कारण आता है, क्या यह सही है?
भगवान: नहीं! यहाँ संसार में भी फसल आदि का बीजारोपण एक निश्चित समय होता है, अगर उससे आगे-पीछे बीज धरती में डालोगे तो फसल अच्छी नहीं आएगी। उसी प्रकार बच्चे के पैदा करने के बीज का सही समय रात 10 से 12 बजे के बीच होता है, इसके अलावा गलत समय में अगर बीज डालोगे तो बच्चे बीमार, विकलांग या मंदबुद्धि आदि ही पैदा होंगे। और हमारे देश में पति-पत्नी के मिलन को प्रेम की दृष्टि से न देखकर काम यानी गलत कृत्य की दृष्टि से देखने को कहा गया है, इसी कारण जब पति-पत्नी प्रेम मग्न होते हैं तो उनके मन में प्रेम या पुण्य की सोच न होकर पाप या गलत काम की सोच ही होती है। इसी सोच के कारण बच्चा मानसिक या शारीरिक बीमार पैदा होता है। यह विज्ञान है कोई धार्मिक कृत्य नहीं।

योद्धा: ईश्वर का क्या स्वरूप है?
भगवान: पहले यह समझना आवश्यक है कि ईश्वर कौन है? ईश्वर व्यक्ति नहीं है, न कोई 8-10 हाथ वाला महामानव है। ईश्वर तुम्हारे जीवन का नाम है। तभी तो कहते हैं कि ईश्वर का माता-पिता नहीं है, ईश्वर कभी मरता नहीं है, कभी बूढ़ा नहीं होता। अब यह सभी धारणाएँ जीवन पर लगाकर देखो। तो पाओगे कि जीवन का ही दूसरा नाम ईश्वर है, परमात्मा है, खुदा है। तुम मरते हो लेकिन जीवन किसी न किसी रूप में जिंदा ही रहता है। नदी, पर्वत, वायु, अग्नि, धरती, सभी में जीवन विद्यमान है।

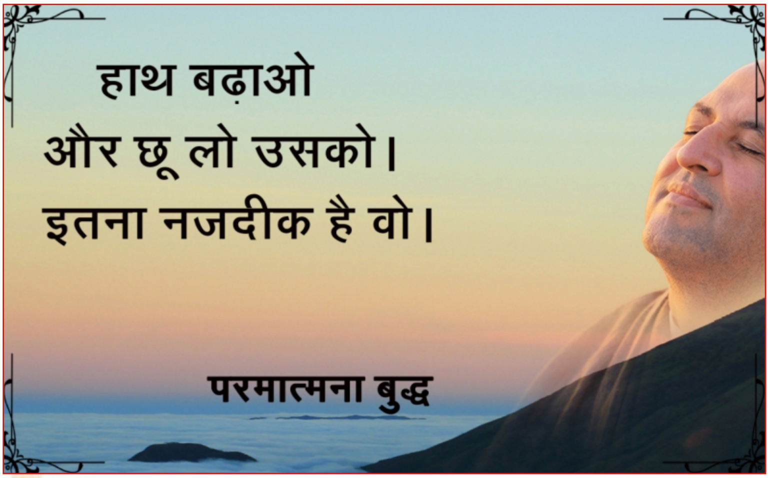

योद्धा: ईश्वर, परमात्मा, खुदा क्या भिन्न-भिन्न व्यक्ति हैं?
भगवान: नहीं! यह व्यक्ति ही नहीं है। यह तो तुम्हारे जीवन का ही स्वरूप है। तुम जिंदा हो तो खुदा जिंदा है, ईश्वर और परमात्मा जिंदा है। लेकिन तुम्हारे साथ अड़चन यह है कि इस प्रकार के प्रश्न तुम केवल मरी हुई पुस्तकों से या मंदबुद्धि वाले भिखारी महात्माओं से ही सुनना पसंद करते हो। ***और मजे की बात यह है कि दोनों को ही नहीं ज्ञात।***

योद्धा: धर्म की जिस परिणति को बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, जीजस, नानक तथा कबीर ने छुआ, उसे आज तक कोई भी हिन्दू या मुसलमान क्यों नहीं छू पाया?
भगवान: क्योंकि सभी इन महापुरुषों को पकड़कर इन्हीं की पूजा करने लग गए, कोई भी चला ही नहीं। मंज़िल पूजा करने से नहीं, चलने से मिलती है। लेकिन बाहर संसार में काबा-काशी जाने से नहीं, स्वयं की ओर चलने से।

योद्धा: अगर हम धन का दान देना चाहें तो किसे दें?
भगवान: मंदिरों में दान देने से अच्छा है कि 10-20 व्यक्ति मिलकर संस्था बनाएँ और अपने आस-पास में बसे गरीब बच्चों को पढ़ाएँ, जिससे आने वाले समय में एक स्वस्थ समाज बने।

योद्धा: क्या धार्मिक कार्य के लिए बच्चों के स्कूल बंद करना ठीक है?
भगवान: हाँ! अगर तुम आने वाली पीढ़ी को अनपढ़ ही बनाना चाहते हो और अपनी सत्ता कायम रखना चाहते हो तो यह ठीक ही है।

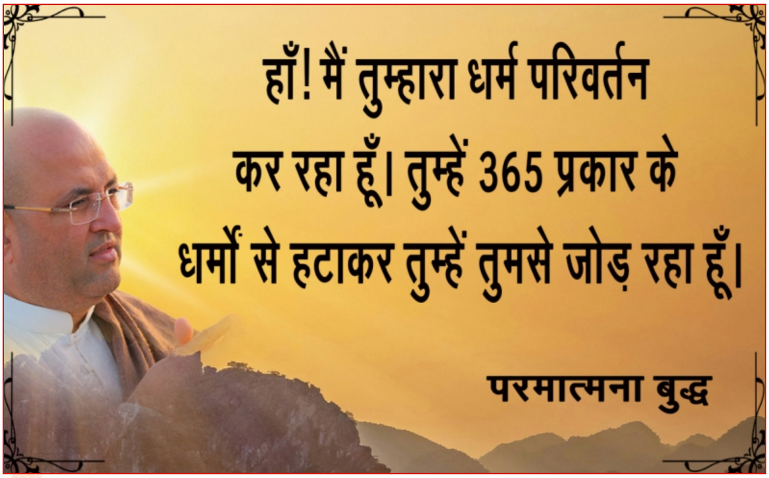

योद्धा: भारत का भविष्य कैसा होगा?
भगवान: जिस देश में कर्जा लेकर भी भिखमंगे धर्म गुरुओं को हलवा-पूड़ी खिलाने को महत्त्व दिया जाता हो उस देश का भविष्य कैसा होगा तुम स्वयं ही कल्पना कर लो।

योद्धा: रूढ़िवादी विचारधाराएँ ढोने से क्या हानि है?
भगवान: जिन देशों में धर्मों के आडंबर नहीं हैं, उन देशों ने ज्यादा तरक्की की है और जिन देशों में आज भी रूढ़िवादी विचारधाराओं को ही मान्यता दी जाती है, वो आज भी पिछड़े हैं, तुम स्वयं देख लो।

योद्धा: तथाकथित धर्मों से क्या हानि है?
भगवान: अगर तुम चाहते हो कि भविष्य में मानव सभ्यता बची रहे और सुखी रहे तो तुम सभी को अपने-अपने बने बनाए कल्पित धर्मों का, विचारधाराओं का, रूढ़िवादी परम्पराओं का त्याग करना ही होगा।

योद्धा: क्या हमारी संस्कृति में जो पर्दा प्रथा है वो गलत है?
भगवान: कई देश ऐसे हैं जहां पिता, माता, बेटा, बेटी इकट्ठे निर्वस्त्र होकर एक ही साथ स्विमिंग पूल में स्नान कर लेते हैं। तुम सोचते हो वो संस्कृति गलत है। ज़रा ध्यान से सोचना कि क्या उस समाज में कोई पिता अपनी बेटी को गलत निगाह से देखता भी होगा?

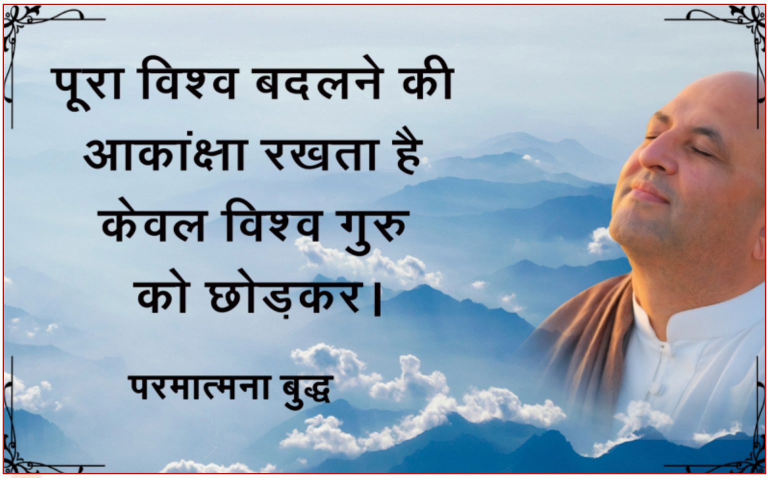

योद्धा: मंदिर में मूर्ति पूजन सही नहीं है?
भगवान: अगर मूर्ति पूजा को ही पंडित-पुजारी ठीक मानता तो मैं कहता हूँ कि तुम सभी अपने-अपने घर में एक-एक मूर्ति ले आओ और बाहर के धर्मस्थलों में जाना और चंदा देना बंद कर दो। देखना तुम्हारे ही धर्म गुरु तुम्हारी ही लाई हुई मूर्ति को गलत करार दे देंगे।

योद्धा: क्या कांवर लाना या नमाज़ पढ़ना धर्म नहीं है?
भगवान: हिन्दू कांवर लाकर अपना दम दिखाने का प्रयत्न करते हैं और मुसलमान सड़क पर नमाज़ पढ़कर अपना दम दिखाने का प्रयत्न करते हैं और तुम्हें कुछ भी तो लेना-देना नहीं है धर्म से।

योद्धा: क्या हिन्दू या मुस्लिम धर्म को अपनाना सही नहीं है?
भगवान: तुम समझ ही नहीं पाते कि तुम सभी मानसिक रूप से दूसरे के द्वारा चलाए जा रहे हो। कुछ हिन्दू की विचारधारा द्वारा, कुछ इस्लाम की विचारधारा द्वारा और तुम सभी स्वयं को स्वतंत्र मानते हो?

योद्धा: क्या हमारी सोच स्वतंत्र नहीं है?
भगवान: एक समय था जब चारों तरफ संतोषी माता का गुणगान होता था। आज चारों तरफ साईं और शनि का गुणगान होता है। फिर भी तुम नहीं समझ पाए कि तुम दूसरे की सोच द्वारा चलाए जा रहे हो।

योद्धा: पाठ, पूजा, तीर्थ से लाभ नहीं होता तो हानि ही क्या है?
भगवान: एक बार कुंभ के मेले में दम घुटने से एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई। डॉक्टर आए, चेक किया, बोले—अब कोई उपाय नहीं है, ये मर चुका है। तभी वहाँ खड़े एक व्यक्ति ने कहा—छाती पर तेल मालिश करो और हाथों से दबाओ। डॉक्टर ने कहा—कोई लाभ नहीं होगा, ये मर ही चुका है। तब वो व्यक्ति बोला—लाभ नहीं होगा तो हानि भी क्या होगी, तुम करो बस।

योद्धा: क्या आध्यात्मिकता का कोई अंत होता है?
भगवान: आध्यात्मिकता एक निरंतर यात्रा है, जो जीवन भर चलती रहती है। और चलना ही पवित्रता बनाए रखता है। तुम्हारे धर्मों में सड़ांध क्यों आ गई? क्योंकि सदियाँ हो गईं उन्हें ठहरे। तुम भी कहीं ठहरोगे तो सड़ोगे। मेरे पास भी मत ठहरना। ***"तू जाग जा, तू भाग जा"।***

योद्धा: तुम्हारी यह पुस्तक कितनी बार पढ़ें कि समझ आ जाए? ज्ञान हो जाए और घटना घट जाए? खुदा का, परमात्मा का साक्षात्कार हो जाए?
भगवान: अगर मेरी पुस्तक की एक भी पंक्ति तुम्हें समझ आ जाए तो कुछ और पढ़ने की आवश्यकता ही नहीं है। क्योंकि मैंने पूरी पुस्तक में एक ही सूक्त लिखा है। हजारों सूक्त पढ़कर करोगे भी क्या? ज्यादा सूक्त पढ़कर तो यही पता चलता है कि तुमने पहले के सूक्त नहीं समझे। बस उसी एक सूक्त को पहचान जाओ, और वो मिलेगा दो पंक्तियों के बीच में। शायद अब तक तुम समझ गए होगे, और नहीं समझे तो हनुमान चालीसा का पाठ करो और नमाज़ अदा करो, क्योंकि ये

प्रश्न और उत्तर मूर्खतापूर्ण हैं। ऐसे मूर्खतापूर्ण प्रश्न से बचे रहोगे तो सुखी रहोगे, वरना जीना दूभर हो जाएगा, मरना आसान दिखेगा। इसीलिए मैंने कई बार कहा है कि मुझसे दूरी बनाए रखो क्योंकि मुझे सुनोगे तो मौत निश्चित है। फिर भी मरने को इतने उतावले हो तो ***चलो साथ में मृत्यु को छेड़ते हैं।***

योद्धा: भारत गरीब और पिछड़ा हुआ क्यों है?
भगवान: केवल तुम्हारे कारण। जब तक तुम अकेले इन धर्म रूपी मूर्खता भरी सोच को नहीं छोड़ोगे, तब तक भारत गरीब और पिछड़ा ही रहेगा। और केवल तुम्हारे कारण इसलिए लिखा कि तुम केवल इस मूर्खता भरे मार्ग को छोड़ो और ऐसे ही जब 145 करोड़ लोग अकेले ही इस मूर्खता भरी सोच को छोड़ेंगे तो यह देश शायद ऊपर उठ सकेगा।

योद्धा: कलयुग में कल्कि अवतार कब होगा?
भगवान: यह मूर्खता भरी धारणा है। आज तक जो भी तुमने अवतारों की कहानियाँ सुनी हैं वो बस बच्चों को थपकी देकर सुलाने के लिए ही हैं। जैसे माँ बच्चों को थपकी देकर कहानी सुनाकर सुला देती है, वैसे ही तुम सभी के धर्म गुरु तुम्हें कहानियाँ सुनाकर सुलाते आ रहे हैं। क्योंकि हुकूमत करने वाला कभी भी नहीं चाहता कि जिस पर वो हुकूमत कर रहा है वह कुछ भी प्रश्न करे। फिर वो सरकारें? या धर्म गुरु! अवतार आज तक कभी भी नहीं हुआ। हाँ! भगवत्ता का, ज्ञान का, प्रज्ञा का, बोध का अवतरण होता है और वो होता है "मैं" के मिटने के बाद। और वो तो आज भी दुनिया में हजारों के ऊपर हो रहा होगा। तुम आंखों पर से धारणाओं का चश्मा उतारकर देखो तो दिख जाएगा।

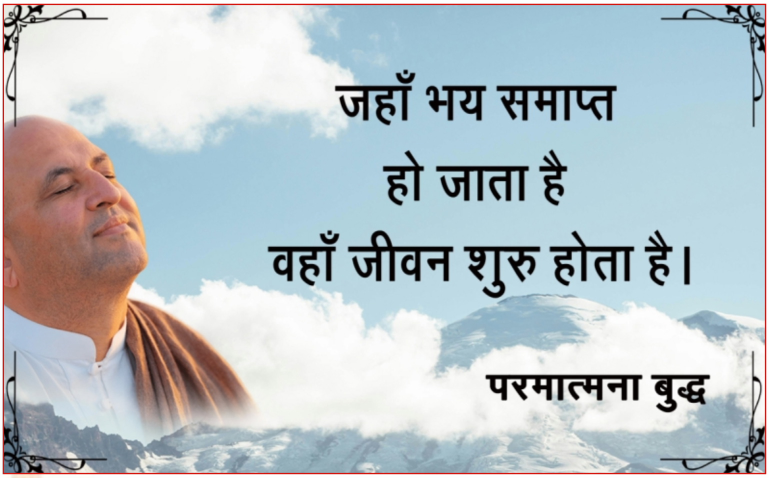

योद्धा: क्या शास्त्रों में जो वर्णन है कि चार युग हैं और यह कलयुग चल रहा है वो सत्य है?
भगवान: इसी प्रकार की मूर्खता के कारण ही यह देश आज तक गरीब और पिछड़ा हुआ है। जिन लोगों को अपना पेट भरने के लिए कमाने का ज्ञान नहीं है, वह सभी किसी न किसी धर्म का चोला ओढ़कर जनता को मूर्ख बनाने लग जाते हैं। कोई चार युग नहीं होते। तुम अगर अच्छा सोचते हो और समाज में अच्छा व्यवहार करते हो तो तुम आज भी सतयुग में हो। और अगले ही दिन अगर तुम हिंसा, डकैती, खून-खराबा, बलात्कार करने की सोचते हो तो तुम कलयुग में हो।

योद्धा: परमात्मा, ईश्वर की जो प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है उसका क्या महत्त्व है?
भगवान: यह कृत्य केवल अहंकार के कारण ही होता है। वरना मनुष्य एक पत्ते को भी स्वयं पैदा नहीं कर सकता। लेकिन दंभ भरता है परमात्मा में प्राण फूँकने का। कोरी-कोरी मूर्खता है।

योद्धा: यह जीवन दुःख है, ऐसा शास्त्रों का वचन है, क्या यह सही है?
भगवान: तुम्हारे 99 प्रतिशत से ज्यादा शास्त्र कचरा हैं। उनमें कुछ-कुछ सिद्धांत ही काम के हैं। लेकिन कचरा इतना अधिक है कि वो सोना भी फेंकने योग्य है। जिसने भी ऐसे शास्त्रों को रचा वो दुखवादी सोच का व्यक्ति रहा होगा। मैं तो कहता हूँ जीवन सुख है, आनंद, उत्सव, नृत्य, उमंग है। तुम्हें जो अच्छा लगे उसे मान लो। मेरी आज की सोच अच्छी लगे तो उसे मानो या पहले की तरह हमेशा ही दुखी रहो।

योद्धा: परमात्मा और खुदा में क्या अंतर है?

भगवान: दोनों ही तुम्हारे जीवन के नाम हैं, एक पैसे का भी अंतर नहीं है। हाँ! मूढ़ों ने हिन्दू-मुसलमान बनाकर अंतर तुम्हें दिखा दिया है। तभी तो जिसको उसका दीदार हो जाता है वो गा उठता है ***"नकल नहीं तेरी असल हूँ मैं"। "अब मैं छुपता हूँ तू ढूंढ़"।***

योद्धा : क्या लोगों को मंदिर-मस्जिद नहीं जाना चाहिए?

भगवान: मंदिर-मस्जिद जाना चाहिए लेकिन ईंट-पत्थर के मंदिर-मस्जिद नहीं। उस मंदिर-मस्जिद जाना चाहिए जिस मंदिर-मस्जिद को खुदा ने, ईश्वर ने रचा है। और जिन मंदिर-मस्जिद रूपी दुकानों को भिखमंगों ने बनाया है वहां जाकर तुम्हें कोई भी लाभ न होगा। उल्टा तुम अंधविश्वासी और पाखंडी ही बनोगे।

योद्धा: क्या हम मूल से जुड़े हुए हैं ?

भगवान: हाँ! टूटने का कोई उपाय ही नहीं है। एक ही ऊर्जा पूरे ब्रह्माण्ड में विद्यमान है। मुझमें और तुम में, सभी में। हमारे मिटते ही वो पुनः मूल ऊर्जा में मिल जाती है। तभी तो जो लोग जीते जी अपने विचारों को शांत कर मस्तिष्क की सूक्ष्म तरंगों में पहुँच पाते हैं वो वहां से उस मूल ऊर्जा के सोत्र से एक होकर विज्ञान की सभी पहेलियों के हल पा लेते हैं। जैसा कि हमारे देश में कई बुद्ध पुरुषों ने पूर्व में किया है। लेकिन यह एक विज्ञान है इसमें किसी भी देवी-देवता का हाथ नहीं है।

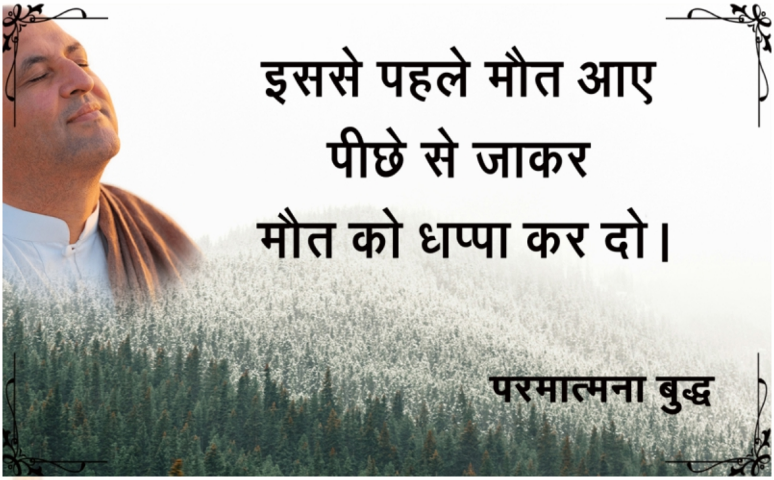

योद्धा: आखिर धर्म क्या है? और परमात्मा कौन है?
भगवान: जीवन, भगवान, परमात्मा, खुदा, अल्लाह, सत्य! यह सभी एक ही शब्द के भिन्न-भिन्न नाम हैं। यह सभी शब्द तुम्हारे यानी मनुष्य के ही पर्यायवाची हैं। लेकिन जागते हुए मनुष्य के। और सोये हुए मनुष्य के नाम हैं तुम्हारे तथाकथित 365 प्रकार के धर्म।

योद्धा: क्या हमारी संस्कृति ठीक नहीं है?
भगवान: यह निर्भर करता है कि हम संस्कृति कह किसे रहे हैं। क्या मंदिर-मस्जिद जाने को? या अपने माता-पिता या बुजुर्ग आदि से अच्छा व्यवहार करने को? संस्कृति के नाम पर हमने कचरा ही लादा है—कुछ ने हिन्दू होने की संस्कृति लाद ली है कुछ ने मुस्लिम होने की। और किसी ने भी यह नहीं देखा कि इस सड़ी-गली संस्कृति ने आज तक उन्हें दुःख के अलावा दिया क्या है। संस्कृति उसे मानना चाहिए जो तुम्हें आज सुखी करे।

योद्धा: क्या मनुष्य का भविष्य अंधकारपूर्ण है?
भगवान: यह तुम पर निर्भर करता है। अगर तुम मानते हो कि जो बीत गया वो अच्छा युग था और आने वाला समय अंधकारपूर्ण होगा तो तुम्हारा भविष्य जरूर ही अंधकारपूर्ण होगा। और यह नकारात्मक धारणाएं तुम सभी को तुम्हारे मूढ़, अनपढ़, गंवार, कामचोर, भिखमंगे, निठल्ले धर्म गुरुओं ने ही सिखाई है। आज भारत का भविष्य अंधकारपूर्ण क्यों है? केवल इन मूढ़ों के ही कारण। और अगर आज भी समाज में कुछ बुद्धिजीवी वर्ग उस ऊंचाई को उपलब्ध न हुए जिस ऊंचाई को कृष्ण, बुद्ध, महावीर, जीजस, नानक, कबीर ने छुआ तो निश्चित ही मनुष्य का भविष्य अंधकारपूर्ण है और समय के साथ अंधकार में चला जायेगा।

योद्धा: जब इस दुनिया में सनातन धर्म नहीं था तब दुनिया में कौन सा धर्म था?
भगवान: तुम्हें क्या लगता है बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर, मोहम्मद, जीजस आदि महापुरुष सनातन धर्म को रटकर जागृत हुए थे? सनातन धर्म नामक कोई धर्म होता ही नहीं। ***हाँ! धर्म जरूर सनातन होता है।*** यानी धर्म जरूर स्थिर होता है। और वो स्थिरता है प्रेम, करुणा, दया आदि गुण। सोचो अगर हमारी ही दुनिया में मंदिर, मस्जिद, गिरजे, गुरुद्वारे नहीं होते, गीता, कुरान, बाईबिल, ग्रन्थ, धम्मपद आदि नहीं होते तो क्या दुनिया आज से बेहतर होती या आज की दुनिया बेहतर है? सोचो और अपनी ही मूर्खताओं पर हँसो।

योद्धा: महात्मा बुद्ध के अनुसार परमात्मा कौन है?
भगवान: महात्मा बुद्ध कोई एक व्यक्ति नहीं है। जिसको भी बोध हो जाता है वही बुद्ध बन जाता है, इसका बौद्ध धर्म से कुछ भी लेना देना नहीं है। ***और मेरी दृष्टि में जो जागा वही परमात्मा, खुदा, भगवान, अल्लाह।***

योद्धा: हमने गंगा को माँ कहा और माँ की मूर्ति बनाई और परमात्मा तुम कहते हो मूर्तियां गलत हैं? क्यों?
भगवान: गंगा की मूर्ति वाली माँ जैसी माँ कहीं भी नहीं है, किसी भी दुनिया में नहीं। गंगा! केवल गंगा ही नहीं दुनिया में कोई भी नदी, कोई भी जल स्त्रोत हमें जीवन देता है यानी जीवित रखता है और जो जीवित रखता है जिसके कारण हम जीवित रहते हैं उस प्राणदायनी स्त्रोत को माता या पिता कहना उचित ही है और उसे संभाल कर रखना है, उसका सम्मान करना है, उसे बचाना है यह उचित ही है। लेकिन मूढ़ों की तरह मूर्ति बनाकर आरती उतारना? उससे कुछ भी नहीं होगा वो उचित नहीं है। वो तो तुमने दुकान बना ली दूसरों को ठगने की।

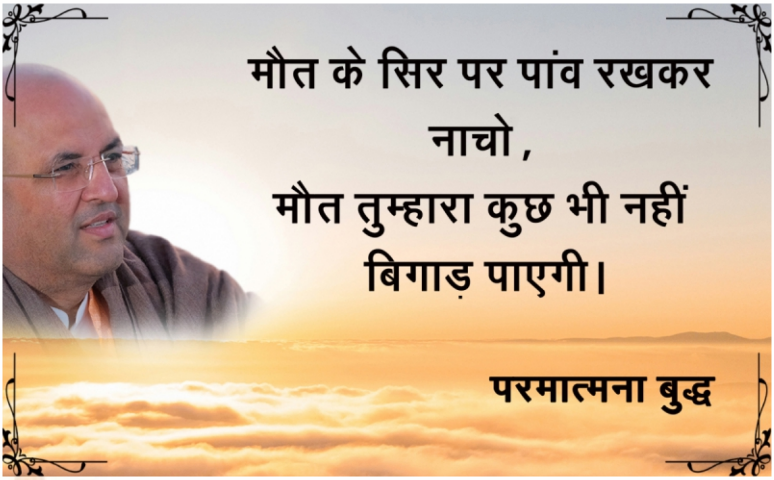

योद्धा: क्या हमें मंदिर-मस्जिद में दीपक जलाना चाहिए?
भगवान: क्या अजीब लोग हो तुम? दीपक तो जलाना था स्वयं के भीतर। जो तुम्हारी जिंदगी को रोशन कर देता। लेकिन तुम्हें भीतर ज्ञान ही नहीं है। तुम सभी मिट्टी-पत्थर के खिलौनों के सामने, ईंट-पत्थर के मंदिर-मस्जिद में दीपक जलाकर स्वयं को संतुष्ट कर लेते हो।

योद्धा: आज के धर्मगुरु दुनिया को धार्मिक क्यों नहीं बना पा रहे?
भगवान: एक दिए से पूरे संसार के दिए जल सकते हैं। लेकिन तब! जब पहला दिया जलता हुआ हो। इसलिए पहले वो धर्मगुरु स्वयं का दीपक जलाने की सोचें। लेकिन वो बेचारे तो थाली घुमा कर धन बटोरने के लिए ही धर्म गुरु बने हैं, वो स्वयं ही धार्मिक नहीं हैं लोगों को कैसे बनाएँगे।

योद्धा: आज कौन सा महात्मा सही है?
भगवान: बड़े शर्म की बात है जिस देश में बुद्ध, महावीर, कृष्ण, नानक, कबीर जैसे महापुरुष जन्मे! जिनका मुकाबला पूरी दुनिया में नहीं है। वो देश आज अनपढ़ राजनेताओं के, पाखंडी धर्म गुरुओं के हाथ की कठपुतली बना हुआ है। कौन सा महात्मा ठीक है, इससे कुछ भी लाभ होने वाला नहीं। स्वयं से ये पूछो कि क्या मैं ठीक हूँ?

योद्धा: इस देश से बुद्ध के भिक्षुओं को जिंदा जला दिया गया। ऐसा क्यों?
भगवान: यह शायद मेरे साथ भी हो। यहाँ अनपढ़, गँवार की संख्या इतनी ज्यादा है कि जब कोई एक बुद्ध लोगों को जगाने की कोशिश करता है तो वो सभी मिलकर उसे ही सुलाने की साजिश कर लेते हैं। अंधों के देश में आँख वाले को पसंद नहीं किया जाता।

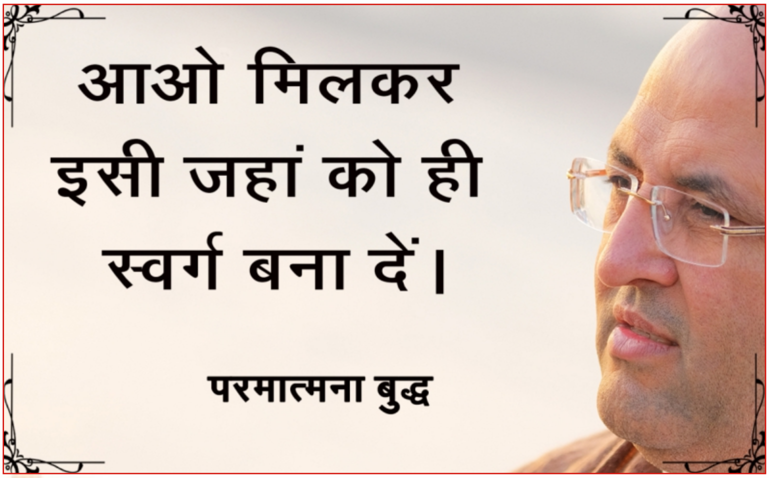

योद्धा: कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम्हारी बातें मानें और अपने हिन्दू या मुसलमान होने से भी हाथ धोना पड़े?
भगवान: हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन तो छोड़ो तुम्हें स्वयं से भी हाथ धोना पड़ेगा। लेकिन फिक्र मत करो, यही होता है नदी के साथ भी। नदी जब सागर से मिलती है तो नदी तो नहीं बचती लेकिन सागर जरूर बन जाती है। बस यही होगा तुम्हारे साथ भी। तुम हिन्दू-मुस्लिम तो नहीं बचोगे लेकिन खुदा जरूर हो जाओगे। मेरे साथ कुछ कदम चल कर तो देखो तुम्हें पूरा-पूरा खुदा बना दूंगा। मैं को खोकर ही तू को पाया जाता है। खुद को मारो और अपने खुदा को पैदा करो। ***यही सनातन सत्य है और यही सनातन धर्म है।***

योद्धा: मनुष्य इतना कठोर क्यों होता जा रहा है?
भगवान: पत्थरों को पूजोगे तो हृदय पत्थर का ही होगा। जिन्दा लोगों से प्रेम करते तो तुम्हारा हृदय भी जिन्दा ही होता।

योद्धा: क्या गंगा स्नान से पुण्य मिलता है?
भगवान: नहीं! केवल तुम्हारी मूढ़ता ज्यादा दृढ़ हो जाती है क्योंकि पाप तो तुम मन से करते हो और गंगा में धो आते हो शरीर को।

योद्धा: क्या शूद्र से भेदभाव गलत है?
भगवान: कितने शर्म की बात है हमारे देश के लिए कि हम जानवर को घर में अपने साथ सुला लेते हैं लेकिन एक शूद्र या दूसरे धर्म के व्यक्ति के घर खाने से धर्म भ्रष्ट होने का खतरा मान लेते हैं। हमारे देश के धार्मिकों से तो पशु पक्षी अच्छे हैं। सारे पक्षी अपने जैसे पक्षियों के साथ घुल-मिल कर रहते हैं। और हम धार्मिक लोग तो! ***भगवान भी ब्राह्मणों का अलग और शूद्रों का अलग बनाए बैठे हैं।***

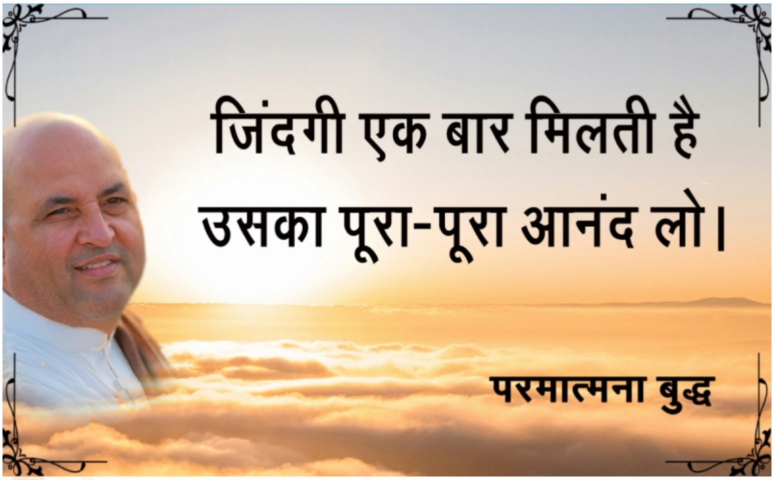

योद्धा: भवसागर कहां होता है? क्या मरने के बाद उसे पार करना होता है?
भगवान: तुम्हारे इसी जीवन का नाम तो भवसागर है। और इसे ही हँसी-खुशी जीना होता है। जिन लोगों ने तुम्हें मरने के बाद के भवसागर की कहानियाँ सुनाईं, वे अभी भी बालबुद्धि हैं। उन्होंने धर्म को केवल मरी हुई किताबों से ही रटा है, जीवन का अनुभव नहीं किया।

योद्धा: संसार में लोग कभी लाशों को भी साइकिल, रिक्शा या गोद में उठाकर ले जाते हैं, ऐसा क्यों?
भगवान: यह भारत का दुर्भाग्य है कि यहाँ लोग मनुष्य से अधिक धर्म को महत्त्व देते हैं। जीवित मनुष्यों से अधिक मरी हुई पत्थर की मूर्तियों की सेवा करना उन्हें उत्तम लगता है। कृष्ण, बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर के देश में ऐसा दृश्य होगा, वे भी शायद कल्पना न कर पाए हों।

योद्धा: क्या मंदिरों में सोने-चाँदी के आभूषण चढ़ाना गलत है?
भगवान: हाँ! जिस देश में गरीब अपने परिजनों के शवों को भी धनाभाव के कारण वाहन में नहीं ले जा पाता और वहीं पत्थर की मूर्तियों के लिए सोने-चाँदी के आभूषण चढ़ते हों, उसे मूर्खता कहना भी कम है।

योद्धा: क्या गुरु आदि को दान देने के लिए लोन लेना सही है?
भगवान: जहाँ पहली मूर्खता की, वहीं पीछे-पीछे पूरी मूर्खता चली आती है। जिस रास्ते पर गड्ढा दिखाई दे रहा हो, वहाँ पाँव रखना ही गलत है।

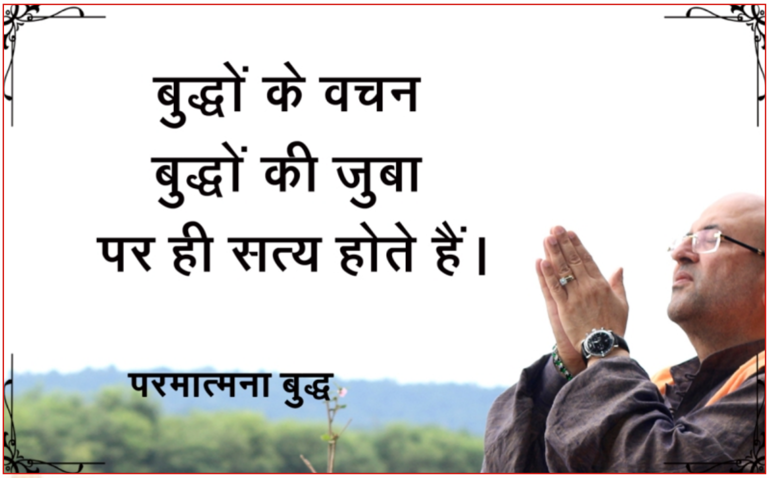

योद्धा: क्या सभी पुराने मंदिरों में बुद्ध की ही प्रतिमाएँ हैं?
भगवान: कोई अंतर नहीं पड़ता कि तुम बुद्ध की प्रतिमा के आगे सिर झुकाओ या किसी और की। तुम वही रहोगे। बुद्ध तो बिना प्रतिमा के आगे सिर झुकाए ही बुद्धत्व को प्राप्त हो गए। तुम्हारे जागने से ही क्रांति घटेगी।

योद्धा: संसार मात्र से प्रेम कैसे करें?
भगवान: प्रेम घर बैठे भी किया जा सकता है। प्रेम के लिए किसी दूसरे का होना आवश्यक नहीं। हाँ, द्वेष, हिंसा और दुख देने के लिए दूसरे का होना ज़रूर आवश्यक है।

योद्धा: परमात्मा के भजन का क्या तात्पर्य है?
भगवान: भजन अर्थात लगातार उसका चिंतन—परमात्मा का, यानि जीवन का। आज में रहना, आज में सुखी होना। न कि किसी देवता की माला जपना।

योद्धा: गुरु पूजा का क्या अर्थ है?
भगवान: अस्तित्व मात्र के प्रति प्रेम और करुणा की अनुभूति। पूरा अस्तित्व ही गुरु है।

योद्धा: तप का क्या तात्पर्य है?
भगवान: जीवन की हर चुनौती में भी कृष्ण की तरह मुस्कुराते रहना ही तप है। तन को सताना मूढ़ता है।

योद्धा: क्या धन का भोग गलत है? रावण ने भी धन भोगा, वो भी नहीं बचा?
भगवान: तो पहले उसे खोजो जिसने धन का उपयोग न किया हो और वह आज भी जीवित हो।

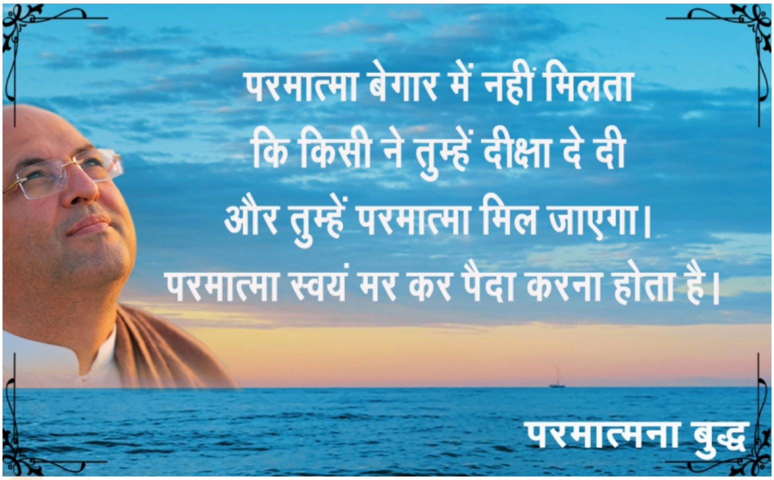

योद्धा: संन्यास क्या है?
भगवान: जब जीवन में संगीत और नृत्य जन्म लेते हैं, तब बिना किसी विशेष वस्त्रों के तुम संन्यासी हो जाते हो।

योद्धा: शास्त्रों से सत्य क्यों नहीं मिलता?
भगवान: शास्त्र पढ़ोगे तो तुम ही न समझोगे। संत पढ़ेगा तो वही शास्त्र सूफी बनाता है, और उपद्रवी पढ़ेगा तो आतंकवादी।

योद्धा: पंडितों ने सुंदर शास्त्र लिखे, क्या उससे भी कुछ न होगा?
भगवान: नहीं। जब तक लिखने वाले का हृदय जाग्रत न हो, शब्दों में प्राण नहीं आते। और प्राणहीन शब्द किसी और के प्राण को भी नहीं छू सकते।

योद्धा: क्या हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई या 365 धर्म नहीं पहुँचा सकते?
भगवान: सभी पहुँचा सकते हैं, लेकिन तुमने धर्म को छोड़कर नाम पकड़ लिया—हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई। नाम मुख्य नहीं, धर्म मुख्य था।

योद्धा: कैसे ज्ञात होगा कि दीपक जल गया है?
भगवान: वह तुम्हें स्वयं ही पता चलेगा। जैसे खुशी और पीड़ा को दूसरों से पूछना नहीं पड़ता।

योद्धा: कौन सा शास्त्र पढ़ें?
भगवान: शास्त्र नहीं चाहिए था, शास्त्रकार चाहिए था। कृष्ण मिल जाते तो अच्छा था, पर गीता मिली, मोहम्मद मिल जाते तो अच्छा था, पर कुरान मिली।

योद्धा: तो क्या गीता-कुरान से भी नहीं समझा जा सकता?
भगवान: समझा जा सकता है, पर पूजा से नहीं। उनसे हृदय को जागृत करके। तुमने पुस्तक को छाती पर पत्थर की तरह रख लिया, बस वही बाधा है।

योद्धा: हमारा दीपक कहाँ से जलेगा?
भगवान: किसी जलते हुए दीपक के पास बैठने भर से।

योद्धा: गुरु का हाथ कहाँ तक पकड़ना चाहिए?
भगवान: जिस बच्चे की उंगली माँ-बाप कभी नहीं छोड़ते, वह कभी उड़ना नहीं सीखता। इसलिए समय पर गुरु की उँगली छोड़ देना ही गुरु का सम्मान है।

योद्धा: क्या ज्ञान को लिखना-पढ़ना चाहिए?
भगवान: नहीं। ज्ञान को आत्मा की तरह ओढ़ लेना चाहिए।

योद्धा: किताबों का ज्ञान पर्याप्त नहीं होता?
भगवान: कागज़ पर लिखा सोना, सोना नहीं होता।

योद्धा: आत्मा शरीर के किस हिस्से में होती है?
भगवान: पूरे शरीर में। जैसे वातावरण में वायु।

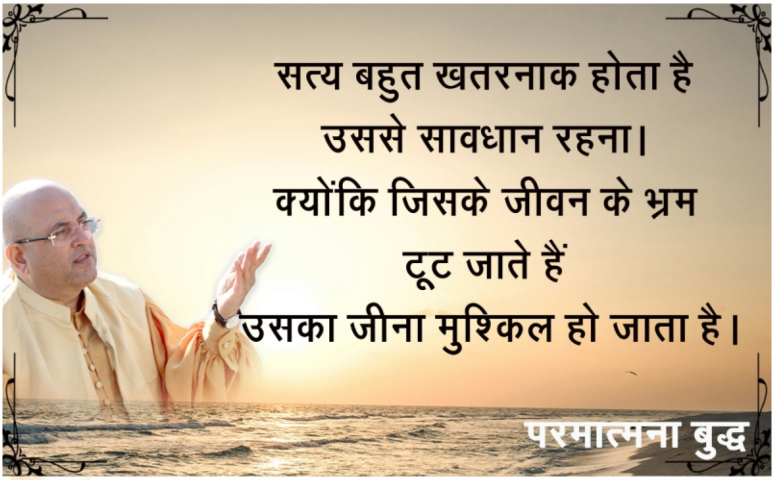

योद्धा: गुरुकुल में शास्त्रीय ज्ञान पढ़ाते हैं, उससे कुछ लाभ?
भगवान: हाँ! तुम विद्वान बन जाते हो। लेकिन मैं तो दीवाना बनने की, मस्ताना बनने की, परवाना बनने की बात कर रहा हूँ। मैं तो तुम्हारी आत्मा बदलने की बात, हृदय को जागृत करने की बात कर रहा हूँ।

योद्धा: हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई या सभी 365 प्रकार के लोग धार्मिक कथाएं कर रहे हैं, कुछ तो लाभ होता होगा?
भगवान: तुम्हें हुआ? जो कथा कर रहे हैं उन्हें धन के अलावा कुछ लाभ हुआ? हम आज भी कृष्ण, बुद्ध, महावीर, जीसस, नानक, कबीर को याद रखते हैं। तो कथावाचक को मरने के 1-2 माह बाद ही क्यों भूल जाते हैं। क्योंकि कथाओं को सुनने से या सुनाने से कोई जाग्रत नहीं होता।

योद्धा: हम जागेंगे कैसे?
भगवान: किसी जागे हुए के कंधे पर चढ़ कर, ***उसके सिर पर पाँव रखकर।***

योद्धा: क्या सभी जाग नहीं सकते?
भगवान: हर कोई जाग सकता है लेकिन जो आँखें बंद किए बैठे हैं और माने बैठे हैं कि वह जागे हुए हैं उन्हें जगाने का कोई भी उपाय नहीं है।

योद्धा: परमात्मा को भोग कैसे लगाया जाए?
भगवान: स्वयं खाओ तो वो परमात्मा को ही भोग लग रहा है। और मंदिरों में लगाया गया भोग केवल दिखावा मात्र है और कुछ भी नहीं।

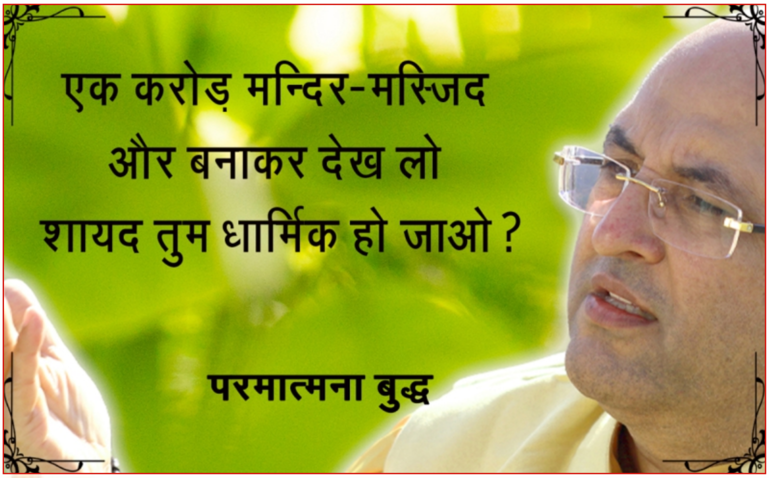

योद्धा: क्या परिक्रमा करना धर्म नहीं है?
भगवान: तुम्हारे तथाकथित 365 प्रकार के धर्मों में हर कोई किसी न किसी की परिक्रमा करता है। लोग काबा-काशी में परिक्रमा ही तो करते हैं। लेकिन परिक्रमा करने से धार्मिक कौन हो पाया है। और मज़े की बात तो यह है कि किसी के धर्म में इन परिक्रमाओं के बारे में नहीं लिखा है।

योद्धा: क्या संसार छोड़कर परमात्मा मिलता है?
भगवान: नानक संसार में रहते हुए परमात्मा से भरपूर रहे। कबीर संसार में रहे और परमात्मा से लबालब रहे। संसार छोड़ने की धारणा उन मूढ़ों ने तुम्हें दी है जिन्हें परमात्मा का कुछ भी ज्ञान नहीं है।

योद्धा: मंदिर-मस्जिद जाने वाला भी तो धार्मिक हो सकता है?
भगवान: लेकिन वो जिस दिन धर्म को उपलब्ध हो जाता है उसी क्षण उसके मंदिर-मस्जिद छूट जाते हैं। क्योंकि जो स्वयं मंदिर-मस्जिद हो जाता है वो कहीं बाहर के मंदिर-मस्जिद जाएगा?

योद्धा: क्या मरने के बाद नरक भी मिल सकता है?
भगवान: पूरा जीवन तुम होश में नहीं रहे, कोई किसी तीर्थ में जा रहा है तो कोई किसी दीन की पूजा कर रहा है। एक-दूसरे को मिटाने पर उतारू हो। स्वयं का जीवन ही नहीं दिख रहा है तुम्हें। और कौन सा नया नरक चाहिए तुम्हें?

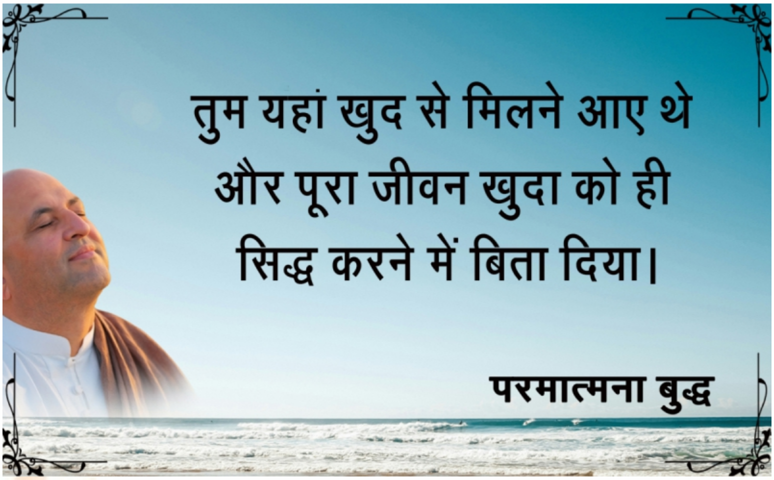

योद्धा: गरीब के घर पैदा होने में और अमीर के घर पैदा होने में क्या प्रारब्ध कर्मों का हाथ है?
भगवान: अगर तुम्हारे मूढ़ धर्म गुरु धन को महत्त्व न देते तो यह प्रश्न ही न होता। गेंदे का फूल भी उतना सुंदर है जितना गुलाब का। तुमने धन को महत्त्व दिया है तो तुम्हें झूठे उत्तर तो मिलेंगे ही। हाँ उन मूढ़ों को यह नहीं ज्ञात कि धन कैसे कमाया जाता है इसलिए उन्होंने इसे प्रारब्ध कर्मों पर जोड़ दिया।

योद्धा: क्या बुद्धि परमात्मा द्वारा दी जाती है?
भगवान: एक बच्चा जो झोपड़ी में पैदा हुआ उसे किसी जज के यहाँ पाल लो और दूसरे बच्चे को जो जज के यहाँ पैदा हुआ उसे किसी झोपड़ी वाले के यहाँ पाल लो इस प्रश्न का उत्तर स्वयं समझ आ जाएगा।

योद्धा: यश-अपयश, लाभ-हानि सब विधि हाथ होती है?
भगवान: इसी मूढ़ता भरी सोच ने आज तक भारत को गरीब बनाए रखा है। आखिर यह मूढ़ता कब छोड़ोगे। कभी तो जागना पड़ेगा। क्या अमेरिका का बच्चा भी ऐसे ही सोचता होगा? क्या हमारे देश का पढ़ा लिखा व्यक्ति भी ऐसे ही सोचता होगा या सभी मूढ़ताएं धार्मिक दिखने वालों ने ही पालने का ठेका ले रखा है?

योद्धा: क्या ज्यादा पैसा कमाना गलत है?
भगवान: नहीं! पैसा ज्यादा कमाने वाला व्यक्ति ही पैसे से विरक्त हो पाता है। गरीब के पास कुछ है ही नहीं तो त्याग किसका। ज्यादा पैसा धार्मिकता की पहली सीढ़ी है।

योद्धा: कई लोग कहते हैं कि अमुक मंत्र जपकर या ये साधना कर मृत्यु को टाला जा सकता है?

भगवान: आज से पहले भी कई मूढ़ तांत्रिक बने ढोंगी गुरु ऐसे ही प्रलोभन लोगों को देते थे। तुम उनके जीवन के बारे में पढ़ो, सभी 60-65 से पहले ही मर गए। और जापान की औसत उम्र देखो वो बिना साधना के ही 100 पार करते हैं।

योद्धा: क्या हमें अपने धर्म में पैदा होने पर गर्व करना चाहिए?

भगवान: ऐसी मूढ़ता भरी सोच देकर ही तुम्हारे मूढ़ धर्म गुरु या मूढ़ राजनेता तुम्हें गुमराह करते हैं और तुम्हें लड़ने-मरने को उकसाते हैं। तुम बीज बनकर पैदा हुए हो और वृक्ष बन जाओ तो यह शायद गर्व करने की बात हो सकती है लेकिन यहाँ गर्व करने वाला ही नहीं बचता।

योद्धा: हम भविष्य में क्या करेंगे क्या यह जन्म से पूर्व ही निर्धारित हो जाता है?

भगवान: इसी मूढ़ता भरी सोच के कारण आज भारत गरीब है। मनुष्य चाहे तो आसमान छू ले और मूढ़ता में पड़े तो इतना कि धार्मिक जुलूसों में जान देने की सोच ले। यह किसी के हाथ नहीं है सभी तुम्हारे हाथ है लेकिन जागे हुए व्यक्ति के हाथ।

योद्धा: तंत्र-मंत्र करने वाले क्या कुछ कर सकते हैं?

भगवान: अगर उनके किसी उपाय से कुछ हो सकता तो सबसे पहले अपना ही भला करते। वो तुमसे दान की उम्मीद क्यों लगाते? ***हाँ! तुम्हारी स्कूल की पुस्तकों के मंत्रों से सभी संभव है।***

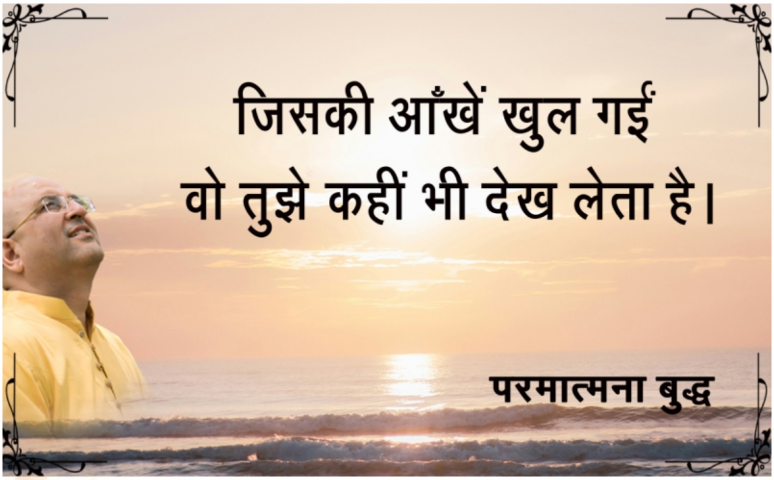

योद्धा: सुना है 100 वर्ष पूर्व मंदिरों में इतनी मूर्तियाँ नहीं होती थीं, आज ज्यादा क्यों हैं?
भगवान: समय के साथ-साथ मूढ़ताएं भी बदलती हैं। काबा में मोहम्मद से पहले 365 दिनों के लिए 365 मूर्तियाँ होती थीं। मोहम्मद ने समझाया कि वो खुदा एक है, यह दुकान क्यों सजा रखी है। अगर पूजना ही है तो किसी एक को पूज लो। और तुम्हारे गुरुओं ने समझाया कि एक ब्रह्म की जगह अनेक मूर्तियों को पूज लो। तुम अपनी बुद्धि से निर्णय करो कि क्या ठीक है।

योद्धा: क्या किसी पत्थर की परिक्रमा करके धर्म कमाया जा सकता है?
भगवान: काश धर्म इतना ही सस्ता होता तो बुद्ध-महावीर को यूँ ही भटकना नहीं पड़ता। नानक-कबीर को एक-एक पंक्ति बोलकर तुम्हें समझाना नहीं पड़ता।

योद्धा: क्या किसी नदी के स्नान से पाप धुलते हैं या पुण्य मिलता है?
भगवान: अगर ऐसा संभव होता तो संसार कब का धार्मिक बन गया होता। और हर धर्म में ऐसे स्नान विद्यमान होते हैं। लेकिन इस प्रकार के स्नान से पाप-पुण्य का कुछ भी लेना-देना नहीं होता। ***"हमें भी पता है जन्नत की हकीकत यारो मन को बहलाने को यह ख्याल अच्छा है"।***

योद्धा: बुद्ध स्वयं शास्त्र क्यों नहीं लिखते? वो सत्य पुस्तकों में क्यों नहीं उतारते?
भगवान: सत्य कभी भी पुस्तकों में उतारा नहीं जा सकता। सत्य तो आपको अपने गर्भ में पैदा करना होता है तो ही वह आपके काम का होता है।

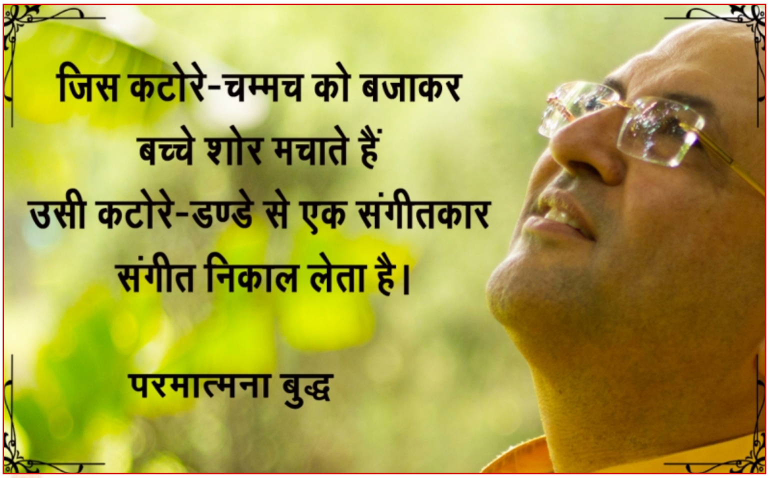

योद्धा: धर्म मनुष्य को कहाँ ले जाता है, क्या करने की कोशिश करता है?
भगवान: केवल स्वयं की याद दिलाने की कोशिश करता है। क्योंकि यहाँ मनुष्य सभी को याद रखता है सिवाय स्वयं के। और यही दुख का कारण है। और जिन्हें धर्म मिल जाता है वो बुद्ध पुरुष यहीं सुखी हो जाते हैं।

योद्धा: क्या केवल हिन्दू ही धर्म है और बाकी सम्प्रदाय?
भगवान: अब सरकारें ही मूढ़ धर्म गुरुओं को बढ़ावा दे रही हैं तो मूढ़ तो मूढ़ता करेंगे ही। धर्म न हिन्दू होता है न ही मुसलमान। यह सभी राजनीति के अखाड़े हैं। धर्म तो एक आग का नाम है, वो तो तुम्हारे भीतर जब जलेगी तभी कुछ जान पाओगे। वो तो तुम मिटोगे तभी ज्ञात होगा कि वो क्या होता है।

योद्धा: धन के लिए किस देवी-देवता की पूजा करें?
भगवान: अपनी बुद्धि को साफ करो और पढ़-लिखकर कुछ काम करो।

योद्धा: हम अपने अहंकार को कैसे मारें?
भगवान: ***"मरो हे जोगी मरो, मरो मरन है मीठा। उस मरनी मरो जिस मरनी गोरख मर दीठा।"***

योद्धा: तो क्या मंदिर की मूर्ति में भगवान नहीं है?
भगवान : जानते तो तुम भी हो। लेकिन मैं आज तक पिछले 50 वर्ष से गलत हूँ यह मानने को तैयार नहीं होते। बताओ अगर मंदिर में आग लगे तो मूर्ति को बचाओगे या अपने बेटे को?

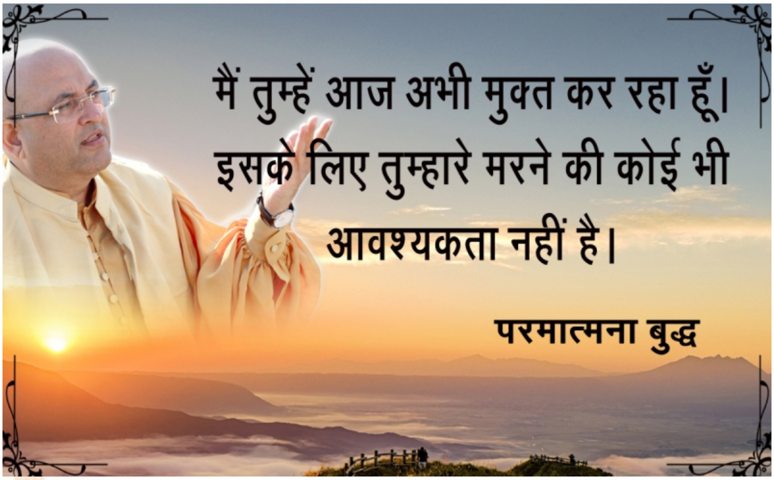

योद्धा: हमारे देश में शोषित वर्ग ज्यादा है फिर भी वो लोग क्रांति क्यों नहीं करते?
भगवान : क्योंकि क्रांति वो कर सकता है जो अपने फैसले स्वयं लेने का दम रखता हो। वो दबा-कुचला वर्ग हर प्रकार से सरकार या शोषण करने वाले पर आश्रित है। फिर वो क्रांति कैसे करेगा? और मैं वही तो आवाज उठा रहा हूँ, शायद लोगों को समझ आ जाए।

योद्धा: ऐसा क्या है कि भारत के दबे कुचले लोग स्वयं को मुक्त नहीं कर पा रहे हैं?
भगवान : जब तक वो उन पुस्तकों को जूतों के नीचे नहीं रखेंगे जो पुस्तकें उन्हें नीच कह रही हैं, तब तक वो मुक्त हो नहीं सकते। जो पुस्तकें उन्हें नीच कह रही हैं, वो उन्हीं पुस्तकों को धार्मिक मानकर पूज रहे हैं तो वो स्वयं को मुक्त कैसे कर पाएंगे? केवल अगर उन्हें हम किसी तरह शिक्षित कर पाएँ, तो वो स्वयं ही अपनी जंजीरों को तोड़ देंगे। लेकिन सरकारें शायद यह भी नहीं चाहतीं, इसलिए उनके लिए शिक्षा के द्वार भी बंद करती जा रही हैं।

योद्धा: क्या दुनिया में कोई ईश्वर नामक व्यक्ति नहीं है?
भगवान : ईश्वर व्यक्ति नहीं, केवल डर और अज्ञान से पैदा की गई एक धारणा है। लेकिन जैसे ही आप प्रबुद्ध होते हो, तो कोई भी अर्थ नहीं रह जाता ईश्वर का।

योद्धा: सरकारें या कुछ लोग अंधविश्वास क्यों फैलाते हैं?
भगवान : अंधविश्वास वही फैलाएगा जिसे आपकी गुलामी पसंद है। ***और ज्ञान वही देगा जिसे आपकी आज़ादी प्यारी है।***

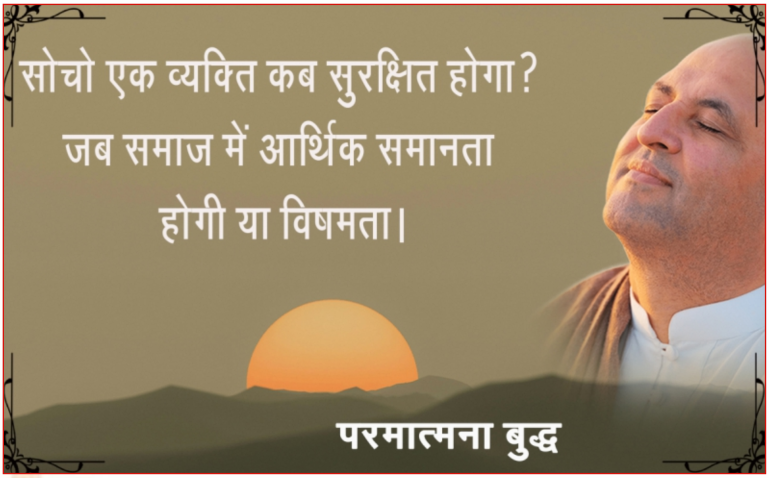

योद्धा: भारत में इतने महापुरुष आए लेकिन फिर भी भारत सम्पन्न क्यों नहीं हो पाया?
भगवान : मनुष्य ने अपना व्यक्तित्व ही ऐसा बना लिया है कि उसके हाथ में जो भी दो वो मैला हो ही जाता है। इसमें दोष केवल तुम्हारा स्वयं का है। महापुरुषों ने तो खूब समझाया कि मुक्त हो जाओ और इसी जीवन को स्वर्ग बना लो, लेकिन तुमने उसी मुक्ति की डोर से स्वयं को बाँध लिया।

योद्धा: मेरे जीवन की सुबह कब आएगी?
भगवान : भोर तो तुम्हारी भी हो चुकी है, कोई मौला, कोई मुरशिद तुम्हें भी मिल जाए तो तुम भी रक़्स कर लो।

योद्धा: अपराध बोध से पीछा कैसे छूटे?
भगवान : ग़म को भुला दो, रक़्स करो!

योद्धा: सभी मनुष्य आर्थिक रूप से सम्पन्न क्यों नहीं हो पाते?
भगवान : आज संसार में इतना पैसा है कि अगर पूरी दुनिया एक परिवार बनकर रहे, न कहीं बॉर्डर हो, न सेना, न जंगी जहाज़, न न्यूक्लियर बम, तो जितना रुपया हम संसार भर में रक्षा बजट पर व्यर्थ करते हैं उतने में हर व्यक्ति सुखी और सम्पन्न हो सकता है। लेकिन यह मूर्खता कर रहे हैं सभी देशों की राजनीतिक पार्टियों के लीडर और साथ ही साथ सभी धर्मों के धर्म गुरु।

योद्धा: कौन सा तीर्थ उत्तम है?
भगवान : क्यों पागलों की तरह भटक रहे हो। ***तुम्हारे ही चरणों में सारे तीर्थ हैं।*** अपना जीवन देखो और उसी का आदर करो।

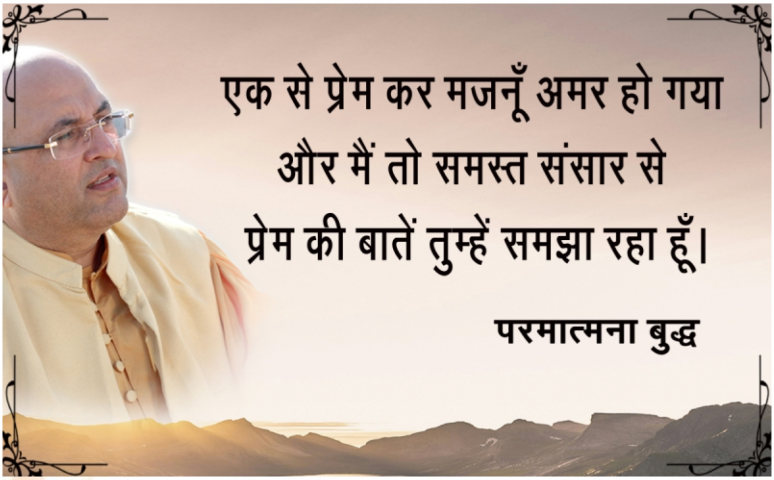

योद्धा: क्या दुनिया भर में फैले 365 प्रकार के धर्म सही नहीं हैं?
भगवान : ईंट-पत्थर के मंदिर-मस्जिद के लिए लड़-मरते हो तुम सभी, और स्वयं को धार्मिक कहते हो? कागज़ की किताबों का धर्म है तुम सभी का।

योद्धा: उस परमात्मा, खुदा, अल्लाह यानी जीवन का अनुभव कहाँ और कैसे होगा?
भगवान : कहीं भी हो सकता है। वो जीवन तो कण-कण में विराजमान है, लेकिन तुम डूबे हो बुद्धि के अहंकार में। जब तक तुम्हारी बुद्धि है तब तक नहीं होगा। तुम मिटो, तुम ठगे जाओ और ऐसे लुटे जाओ कि दोबारा तुम बचने के लायक ही न रहो, तो वहीं तुम्हारा अहंकार गिर जाएगा और वहीं तुम्हारा बोध प्रकट हो जाएगा।

योद्धा: क्या तुम धर्मों की जड़ें नहीं उखाड़ रहे हो?
भगवान : तुम सभी ने धर्मों को बचाया है और इंसानों को मार दिया है। मैं इंसान बचा रहा हूँ, धर्म मिट रहा है तो मिटने दो। इंसान बच गया तो अपने लिए धर्म खोज ही लेगा, और अगर धर्म बच भी गया और इंसान ही मिट गया तो वो धर्म अपने लिए इंसान कहाँ से खोजेगा?

योद्धा: क्या हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि होना धर्म नहीं होता?
भगवान : धर्म की परिभाषा क्या है? स्वयं अपने बोध से निर्णय करो—सुखी होना, आनंदित होना, मस्त होना, संतुष्ट होना, जीवन में नृत्य का, उत्सव का घटित होना या हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन होना?

योद्धाः तुम कौन सा नया मार्ग दिखा रहे हो?
भगवान : तुम्हारे पास एक पुरानी सड़ी-गली धारणा है कि तुम पुराने जन्मों के पापी हो और यहाँ मृत्यु लोक में अपने बुरे कर्मों का फल भुगतने आए हो। और यहाँ दान-दक्षिणा देकर, जप-तप कर तुम मरने के बाद स्वर्ग में सुखी होगे। आज मैं तुम्हें एक नया विचार दे रहा हूँ कि तुम ही परमात्मा हो, खुदा हो। और यह देह तुम्हें सुख भोगने के लिए, आनंदित रहने के लिए मिली है। तुम्हें जो अच्छा लगे उसे मान लो।

योद्धाः सोए और जागने की दृष्टि में क्या भेद होता है?
भगवान : तुम देख ही नहीं रहे कि जीवन रेत की तरह हाथ से सरक रहा है और तुम इतने सोये हो धर्मों की आड़ में कि तुम्हें जीवन ही नहीं दिख रहा है।

योद्धाः अगर बिना सत्य को जाने जीवन जीकर व्यक्ति चला जाए तो क्या हानि?
भगवान : कितना अभागा है इंसान जो ब्रह्म होकर पैदा होता है और हिन्दू-मुस्लिम होकर मर जाता है और पूरा जीवन सोए-सोए धार्मिक होने का भ्रम पाले रखता है।

योद्धाः क्या विपत्ति हमें सिखाती है?
भगवान : हाँ! विपत्ति ही सिखाती है। इसलिए संतों ने दुःख मांगा है।

योद्धाः साधारण जीवन जीने के लाभ क्या हैं?
भगवान : भारत में अंधविश्वासी धार्मिक व्यक्तियों में ये सोच मूर्खता भरी है लेकिन पढ़े-लिखे समाज में ये सुख का मार्ग है।

योद्धा: सच्चा ज्ञान कैसे प्राप्त करें?
भगवान : ज्ञान झूठ होता ही नहीं। ज्ञान सच्चा ही होता है। और जो तुमने धार्मिक पुस्तकों में ज्ञान सोचा हुआ है वो ज्ञान नहीं, पाखण्ड है। कभी सुना है तुमने कि हम 'सच्चा प्रकाश' कैसे पाएं? क्योंकि झूठा प्रकाश होता ही नहीं।

योद्धा: आत्मा और प्रकृति का संबंध क्या है ?
भगवान : दोनों अलग हैं ही नहीं। यहाँ एक ही हैं, दो हैं ही नहीं।

योद्धा: क्या हम अकेले अपना मार्ग चुन सकते हैं?
भगवान : भेड़ों का कोई भी मार्ग नहीं होता। बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, नानक, कबीर और मैं! सभी अपने अकेले ही चले। और जो भीड़ में चला वो भेड़ है।

योद्धा: खुद को कैसे क्षमा करें?
भगवान : आँख खोलकर पाओगे कि तुम हो ही नहीं, तो अपराध बोध कैसा?

योद्धा: क्या श्राद्ध करना चाहिए
भगवान : जब तक तुम मूढ़ धर्म गुरुओं के चंगुल से बाहर नहीं निकलोगे, तब तक किसी न किसी प्रकार की मूर्खता करते ही रहोगे।

योद्धा: आत्मदर्शन का आसान उपाय?
भगवान: ***तू मरेगा तभी तो तरेगा।***

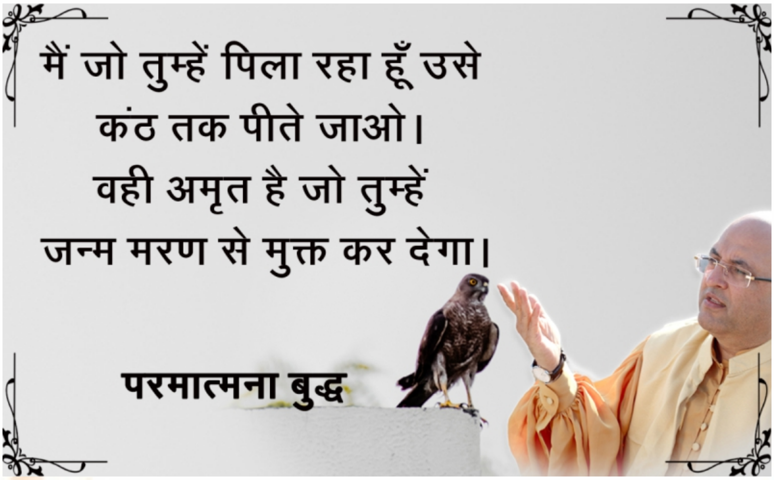

ये प्रश्न उत्तर किसी सिद्धांत की घोषणा नहीं हैं, न ही किसी नए धर्म का निमंत्रण। ये केवल संकेत हैं—उस ओर, जहाँ शब्द मौन में विलीन हो जाते हैं और प्रश्न अपने ही उत्तर बन जाते हैं।

यहाँ 'सत्य' कोई विचार नहीं, बल्कि तुम्हारा होना है। 'आत्मज्ञान' कोई उपलब्धि नहीं, बल्कि अपनी पहचान का विस्मरण है। 'ध्यान' कोई अभ्यास नहीं, बल्कि विचारों से मुक्त होकर उस आकाश में उड़ जाना है, जहाँ तुम पहले से ही उपस्थित हो।

धर्म बाहर खोजने से नहीं मिलता—वह भीतर खिलता है। ईश्वर को प्रमाणों में नहीं, साफ़ आँखों में देखा जाता है। बुद्धत्व किसी ग्रंथ से नहीं, 'मैं' के मरने से प्रकट होता है। और जीवन—वह भार भी है और उत्सव भी; यह इस पर निर्भर करता है कि देखने वाला कौन है।

यदि इन प्रश्नों ने तुम्हें उलझाया है, तो समझो वे सफल हैं। यदि इन्होंने तुम्हें शांत किया है, तो भी वे सफल हैं। क्योंकि लक्ष्य उत्तर देना नहीं, खोज को भीतर मोड़ देना है।

अब और कुछ करने की आवश्यकता नहीं—बस रुक जाओ, देखो, और होने दो।

—यहीं समाप्त नहीं होता, यहीं से आरम्भ होता है।

यदि आपने इस पुस्तक में जो कुछ पढ़ा है, और उस विषय में आपके मन में कोई और प्रश्न उठे हों, तो वे प्रश्न आप हमें भेज सकते हैं। यह पुस्तक यहीं समाप्त नहीं होती, क्योंकि हमारा मानना है कि ज्ञान का कभी भी अंत नहीं होता।

aajkabhagwan@gmail.com www.parmatma.org

ज्ञान कोई ठहरी हुई वस्तु नहीं है, बल्कि एक निरंतर होने वाली प्रक्रिया है। जैसे—बुद्धत्व एक निरंतर प्रक्रिया है; वैसे ही जीवन, प्रेम, प्रज्ञा, ज्ञान, बोध और बुद्धत्व—ये सब कभी पूर्ण होकर समाप्त नहीं होते। ये सभी सतत प्रवाहित होने वाली प्रक्रियाएँ हैं।

यदि आपके मन में भी कोई प्रश्न है, तो आप हमें अवश्य लिखें। हम अगली पुस्तक में उन प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करेंगे।

अगली पुस्तक की भूमिका की ओर सेतु

अगली पुस्तक कोई नया विषय लेकर नहीं आएगी—वह उसी खोज को और गहराई देगी, जो इस पुस्तक में आरम्भ हुई है। वहाँ प्रश्न और भी तीखे होंगे, उत्तर और भी मौन के निकट होंगे। शब्द कम होंगे, अनुभव अधिक। क्योंकि जैसे-जैसे यात्रा आगे बढ़ती है, वैसे-वैसे कहा हुआ पीछे छूटता जाता है और देखा हुआ सामने आता जाता है।

यह पुस्तक यदि प्रश्न जगाती है, तो अगली पुस्तक उन प्रश्नों के साथ बैठना सिखाएगी। यदि यहाँ खोज शुरू हुई है, तो वहाँ खोजी स्वयं खोज का हिस्सा बन जाएगा।

अगली पुस्तक के लिए अंतिम प्रश्न

और अब, अगली पुस्तक में प्रवेश करने से पहले, अपने भीतर इस एक प्रश्न को जीवित रखो—

जो देख रहा है, वह कौन है?

क्या तुम वही हो, जो दिख रहा है... या वह, जो देख रहा है?

और यदि देखने वाला भी एक विचार है—तो उसके पीछे क्या है?

तू मरेगा तभी तो तरेगा

बुद्धत्व, जागरण, प्रज्ञा, बोध,
प्रबुद्ध, ज्ञान प्राप्ति का द्वार !

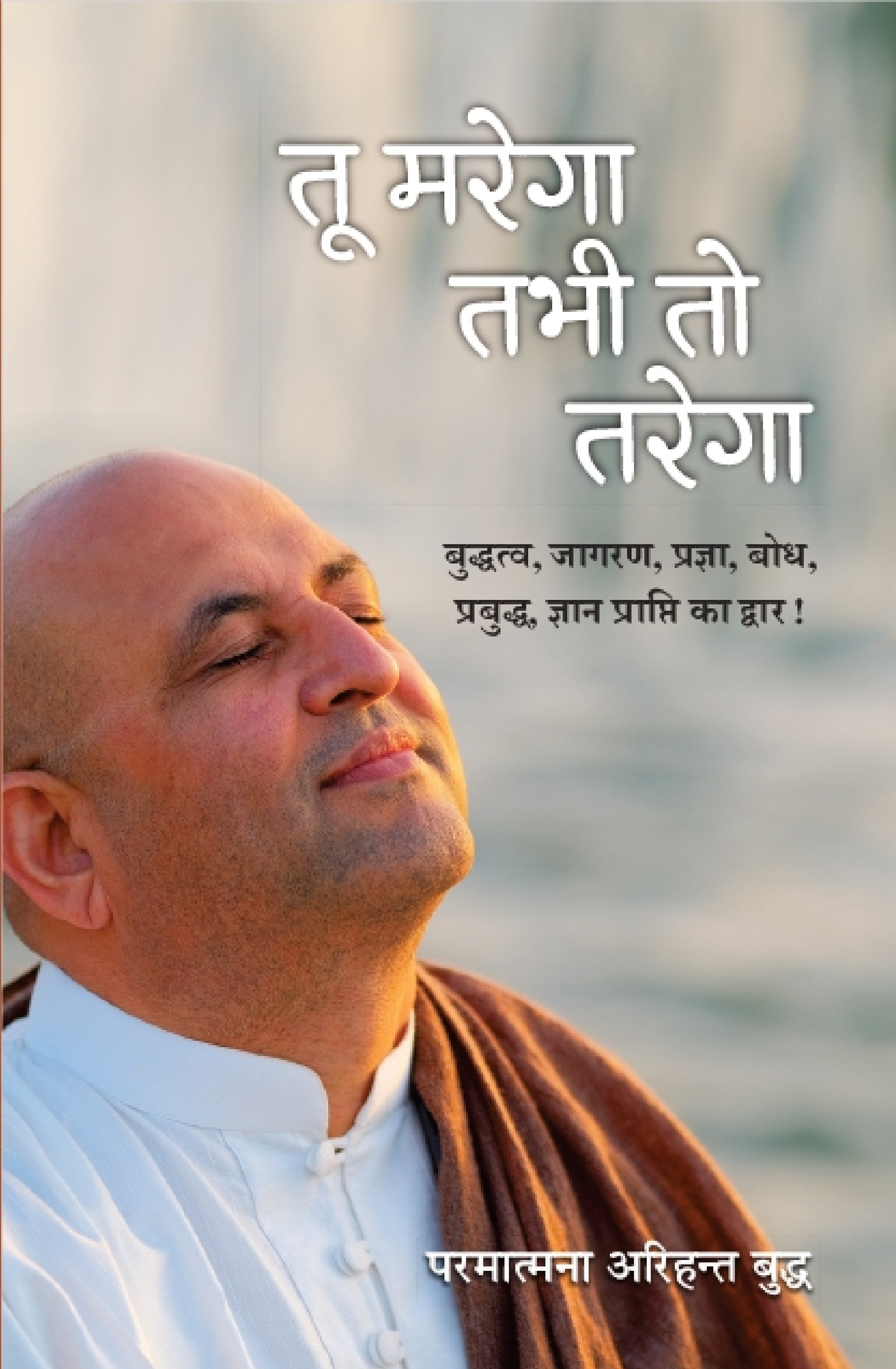

परमात्मना अरिहन्त बुद्ध

तू मरेगा तभी तो तरेगा
परमात्मना अरिहन्त बुद्ध

तू मरेगा तभी तो तरेगा

"जब तक तू बचता रहेगा, तब तक तू बंधा रहेगा। जब तू मरेगा, तभी तो तू तरेगा।"

"हर प्रश्न में छिपा है एक उत्तर और हर उत्तर में छिपा है एक अंत।"

यह पुस्तक एक साधारण संवाद नहीं है, यह आत्मा और अहंकार के बीच की संघर्ष कथा है। यह उन प्रश्नों का उत्तर है जिन्हें हम पूछते तो हैं, लेकिन सुनना नहीं चाहते। 'तू मरेगा तभी तो तरेगा' यह वाक्य केवल किसी शरीर की मृत्यु की बात नहीं करता, यह उस 'अहंकार', 'मोह', 'डर' और 'स्वार्थ' की मृत्यु की मांग करता है जिसने हमारे भीतर के सत्य को कैद कर रखा है।

प्रश्न-उत्तर की इस शैली में आप न केवल विचार पाएंगे, बल्कि एक आईना भी पाएंगे जिसमें झांकना सरल नहीं, पर एक बार झांक लिया, तो खुद को देखे बिना रह भी नहीं सकेंगे। यदि आप तैयार हैं मरने को, बदलने को, और सच से टकराने को, तो यह पुस्तक आपके लिए है। "सवाल तो सभी पूछते हैं, पर उत्तर उन्हीं को मिलते हैं जो भीतर मरने का साहस रखते हैं।

यह पुस्तक केवल शब्दों का संग्रह नहीं है, यह जीवन के सबसे कठिन, सबसे गहरे और सबसे कड़वे प्रश्नों का सामना है। यह एक यात्रा है 'मैं' से 'हम' तक, स्वार्थ से समर्पण तक, और अहंकार से आत्मा तक।

यह किताब उन पाठकों के लिए नहीं है जो जीवन को केवल जीना चाहते हैं, यह उन जिज्ञासुओं के लिए है जो जीवन को समझना और पार करना चाहते हैं।

प्रश्न-उत्तर की शैली में रची गई यह रचना न किसी धर्म का प्रवचन है, न किसी संप्रदाय का झंडा।

यह एक स्वतंत्र, निडर और पारदर्शी संवाद है जो मनुष्य को स्वयं से मिलाने का प्रयास करती है। हर पन्ने पर आपको मिलेंगे ऐसे प्रश्न जो कभी आपने अपने भीतर दबा दिए थे, और मिलेंगे ऐसे उत्तर जो न तो किताबों में हैं, न प्रवचनों में—बस आपकी तिरी हुई चेतना में छिपे हैं।

यह पुस्तक बताती है कि सत्य कभी बाहर नहीं मिलता, वह भीतर मरने के बाद ही प्रकट होता है। "तू मरेगा तभी तो तरेगा" एक आवाहन है मरने का, छोड़ने का, और ऊपर उठने का। यदि आप साहसी हैं, यदि आप थमे नहीं हैं, यदि आप भीतर के अंधेरे को देखने का साहस रखते हैं, तो यह पुस्तक आपकी चेतना के द्वार पर दस्तक देगी।

यह पढ़ने के लिए नहीं, जीने के लिए है।

ISBN 978-93-5737-962-5

9 789357 379625

तू मरेगा तभी तो तरेगा

परमात्मना अरिहन्त बुद्ध